सत्संग* (2005)

(*वीडियो से प्रतिलेखन)

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन

सहज

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)

- ए. नागराज (प्रणेता एवं लेखक)

मध्यस्थ दर्शन सहज पुस्तक 'प्रवेश'

1. जीवन विद्या एक परिचय (प्रकाशित पुस्तक)
2. सहअस्तित्ववाद एक परिचय (संकलन) {PDF}
3. प्रारंभिक पाठमाला {PDF}
4. सत्संग (2005) प्रतिलेखन {PDF}
5. मध्यस्थ दर्शन एक परिचय (1999 प्रतिलेखन) {PDF}
6. सहअस्तित्ववादी विज्ञान (1999 प्रतिलेखन) {PDF}
7. मूल तत्व अवलोकन (संकलन) {PDF}

PDF Download Link : dub.sh/parichay

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन, दिव्यपथ संस्थान

अमरकंटक, जिला – अनूपपुर (म.प्र.), भारत, 484886

www.divya-path.org

प्रणेता एवं लेखक :

ए. नागराज

सर्वाधिकार दिव्यपथ संस्थान के पास सुरक्षित

संस्करण: e-book PDF: 29 July 2026

प्रामाणिक वेबसाइट: www.madhyasth.org

प्रकाशित पुस्तक प्राप्ति: ऑनलाइन: purchase.madhyasth.org; books@divya-path.org

सदुपयोग नीति:

यह प्रकाशन 'सर्वशुभ' के अर्थ में है और इसका कोई व्यापारिक उद्देश्य नहीं है। इसका उपयोग एवं नकल, निजी अध्ययन के लिए उपलब्ध है। इसके अलावा किसी भी अर्थ में प्रयोग (नकल, मुद्रण, आदि) करने के लिए 'दिव्यपथ संस्थान', अमरकंटक, जिला अनुपपुर (म.प्र.) भारत - 484886 से पूर्व में लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है। यह अपेक्षित है की इन अवधारणाओं को दूसरी जगह प्रयोग करते समय इस ग्रंथ का पूर्ण उद्धरण (संदर्भ) दिया जाएगा। कृपया दर्शन की पवित्रता बनाये रखें।

इस संकलन के बारे

यह प्रतिलेखन पूज्य बाबा नागराजजी के 2005 रायपुर (छ.ग) के ऑडियो रिकॉर्ड से किया गया है। इसमें जिज्ञासुओं का मानव व्यवहार दर्शन में दिए 'मध्यस्थ दर्शन के ३१ मूल तत्व' सम्बंधित चर्चा रही।

हम स्व. श्री राजन शर्माजी (नंदिनी) के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने 2005 में ही इस महत्वपूर्ण चर्चा को विडियो रिकॉर्ड करवाया।

यह पुस्तक श्रद्धेय नागराजजी के वीडियो रिकॉर्ड का प्रतिलेखन है। पाठकों को ध्यानाकर्षण है कि पढ़ते समय अर्थ पर संदेह होने पर प्रकाशित ग्रंथों को मानें ।

कुछ स्थलों पर ऑडियो एवं विडियो में मेल नहीं है (Mismatch)। प्रत्येक अध्याय के साथ उससे सम्बंधित YouTube फाइल की लिंक भी दिया गया है, ताकि पाठकों को पढने-देखने में सुविधा हो

पाठकों के सुविधा हेतु प्रत्येक विषय वस्तु के साथ सम्बंधित विडियो का लिंक दिया गया है।-

Youtube channel name: Madhyasth Darshan Originals- A. Nagraj

Playlist name: Samvaad_2005_Mool Tatv par Satsang

जिम्मेदारियाँ:

ऑडियो से प्रतिलेखन: नीरू पूरी, शिल्पा गर्ग, ओमप्रकाश गुमास्ता, अमोल यादव, लक्ष्मी गौतम

संकलन: श्रीराम नरसिम्हन

सुधार संपर्क: books@divya-path.org

अनुक्रमणिका

भाग – 1 5
भाग – 2 10
भाग – 3 15
भाग – 4 23
भाग – 5 33
भाग – 6 41
भाग – 7 49
भाग – 8 56
भाग – 9 63
भाग – 10 65
भाग – 11 67
भाग – 12 69
भाग – 13 71
भाग – 14 72
भाग – 15 74
भाग – 16 77
भाग – 17 81
भाग – 18 86
भाग – 19 89
भाग – 20 95

1

भाग – 1

विडिओ संदर्भ देखें: Satsang Raipur Bhag-1

जिज्ञासाः इतिहास से लेकर आज तक दो तरह की विचारधाराएँ मानव जाति के इतिहास में रही हैं, एक ईश्वरवादी विचारधारा। ईश्वर को केंद्र में मान कर सारी बातों को व्याख्यायित करने की और दुनिया को एक समाधान देने की कोशिश। और दूसरी विचारधारा जो इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप पैदा हुई– वो है जिस को हम भौतिकवादी विचारधारा कहते हैं, कि मनुष्य है, उसकी कुछ आवश्यकताएं हैं, अगर उनकी पूर्ति हो जाए तो आदमी सुखी हो जाएगा और अधिक मात्रा में उसको संग्रह करके ज़्यादा सुखी हो जाएगा। इसके तहत भौतिकवाद की अपनी बहुत लंबी चौड़ी विसंगतियाँ रहीं– संग्रह, शोषण, संघर्ष, युद्ध। ऐसा करते हुए हम लोग atomic युद्ध के दरवाज़े पर आ गए, जहाँ सारी दुनिया के सामने एक फुफकारता हुआ सवाल आकर के खड़ा हो गया कि मनुष्य ऐसी स्थिति में जीवित बचेगा कि नहीं बचेगा। तो एक बार जब सम्पूर्ण मानव जाति और इस धरती को इस संकट में हम पाते हैं और इन दोनों विचारधाराओं के द्वारा मनुष्य को जिस समाधान की प्राप्ति, एक सम्पूर्णता का अनुभव जो होना चाहिए था आज तक हुआ नहीं। श्री नागराज जी बाबा हमारे बीच मौजूद हैं। उन्होंने बिल्कुल एक दूसरा ही विकल्प दिया, वो ना तो भौतिकवाद है, ना ही अध्यात्मवाद है और ना ही दोनों का मिश्रण है, जिसको उन्होंने मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद नाम दिया। आज उनके जीवन में अनुभव किए हुए बिंदुओं जिसको मध्यस्थ दर्शन के रूप में मानव जाति के सामने रखा, उन कुछ बिंदुओं के ऊपर आज हम बाबाजी के साथ बातचीत करेंगे।

बाबा जी, इन दोनों विचारधाराओं की बहुत गहरी जानकारी और उसका एक गहरा पड़ने वाला असर आपकी जिंदगी में रहा, जब आप हम लोगों की तरह नौजवान थे आपने महसूस किया, तो ऐसी क्या परिस्थितियाँ थीं और क्या वो बातें थीं जिनकी वजह से आपको एक विकल्प को खोजना पड़ा और आपने अपना परिवार, घर–बार, कारोबार सब कुछ छोड़कर आप अमरकंटक के बीहड़ों में आ गए और आप इस अनुसंधान में प्रवृत्त हुए? उस पृष्ठभूमि को हम लोग जानने की जिज्ञासा रखते हैं।

उत्तरः आपने ऐसा कुछ बात कहा है जो अत्यंत सम्मानजनक जिज्ञासा, जैसा होना चाहिए, ऐसा मुझको समझ में आया। ये स्वागतीय है। इसका एक अच्छे ढंग से लोक हृदय तक पहुँचने योग्य उत्तर भी होना चाहिए, ऐसा मैं सोचता हूँ। यदि पूरा लोगों को समझ में आता है, ये क्यों ऐसा प्रयत्न किए, कैसा पा गए, दोनों बात का उत्तर यदि लोगों में छूता है, यह पूरा बात को समझने में मदद होगी, ऐसा ही मैं विश्वास करता हूँ। आपका प्रश्न का यह सम्मान है। मूल में यह बहुत भारी हमारा पसीना बहाने वाली बात तो नहीं थी मेरे अनुसार। एक सहज विधि से यह बात घटित हो गयी। एक तो मैं अपने ही संस्कार से कहिए, जीवन सहज विधि कहिए, बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद कहिए, परम्परा का आशय कहिए, मैं एक किसी वेदमूर्ति परिवार में यह शरीर यात्रा शुरू किया। वेदमूर्ति परिवार का मतलब यही है, क़रीब तीस चालीस वर्ष तक वेदाध्ययन अभ्यास करते हैं और उसके बाद वे वेदमूर्ति कहलाते हैं, उनकी कीर्ति पूरा देश में फैलती है। सब लोग को विदित होता है वे वेद मूर्ति हैं। जब भी कोई पूछते है उसी पहचान से उनको सम्मान करते हैं, उससे वे सब संतुष्ट रहते हैं। इसको हम देखते रहे। यह तो हमने वेदमूर्ति का मतलब बता दिया। ऐसे परिवार

में हम जब शुरुआत किए हैं शरीर यात्रा, गोद से, पलने से, पेट से ही शुरू किया होगा, यह तो स्वाभाविक बात ही है। यह सब होते-होते एक किसी आयु, चार पाँच वर्ष आता है, उस अवधि में बड़े बुजुर्ग, बहुत सारे लोग हम को प्रणाम करते रहे। मेरा पहला प्रश्न यही हुआ कि भाई इनको हम क्या दे दिया हूँ ये हमको क्यों प्रणाम करते हैं। इतना ही प्रश्न है कुल मिलाकर के। अभी यहाँ तक आने का भी, मूल में हम मानता हूँ। मेरे मन में ऐसा ही आता है इतना ही प्रश्न है, इसका उत्तर पाने का ही हमने पूरा प्रयत्न किया। प्रयत्न में एक खूबी यह रही कि हमको जब प्रणाम करते हैं हम अपनी अहमता को बढ़ा सकते थे, कि बड़े बुजुर्ग हमको प्रणाम करते हैं, ऐसे हम आदमी हूँ। पहले ऐसा हो सकता था, ऐसा नहीं हुआ।

उसके बाद हमारा परिवार इनको क्या दिए जिसके लिए ये हमें प्रणाम करते हैं। दस ग्यारह वर्ष तक ये परिस्थिति आयी कि ये हमारे परिवार का सम्मान करते हैं। उसके बाद हमारा परिवार संसार को क्या दिया, इसको हम शोध करना शुरू किए।

तो हमारे परिवार में क़रीब हज़ारों वर्षों की इतिहास सुनाते रहे कि हर एक पीढ़ी में एक दो व्यक्ति सन्यासी होते रहे। उसमें से कई सन्यासी ऐसे हुए हैं, हमारे परिवार परंपरा में, कि अपनी समाधि के लिए गड्ढा स्वयं ही खोद लिया, उसके अंदर बैठ गए, अपने हाथ से माटी ढाक लिए और मर गए। उसके ऊपर चबूतरा ही उस जगह पर बना कर रखे थे। ये सब हम देखा हूँ, सुना हूँ। वो सुनने के बाद यह आने लगा कि हमारा परिवार संसार को क्या दिया। उसको सोचने के लिए शुरुआत किया मैंने कि मुझको क्या दे गए। उसका अंत में हमारे बुजुर्गों ने यह ही कहते रहे, शास्त्र ही प्रमाण है, शास्त्र के आधार पर ही तुमको सोचना पड़ेगा।

अब शास्त्र को हम अध्ययन करना शुरू किया और वेदांत को पढ़ा तो पता चला कि ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष का कारण है। पहले ये बताते हैं कि ब्रह्म जो है व्यापक है और उसके बाद उसका परछाई माया पर पड़ी, माया पर पड़ने पर जीव पैदा हुई। जीव कारुण्यवश, ब्रह्म जो है ना आत्मा के रूप में सभी के हृदय में बैठ गयी। वाद विवाद में जनक के समय में एक वाद विवाद किए हैं, उस समय में उसका कोई हल नहीं निकला। उस अभियान को नाम दिया है "शेषं कोपेन पूरयेत्"। अंत में इस प्रकोप से नाराज़गी से अंत हुई, ये उस अभियान को नाम दिया। ये सब तो पीछे गुजरी हुई बातों को हम सुने हैं। उसके बाद हम स्वयं सोचने लगे, ब्रह्म ही बंधन और मोक्ष का कारण कैसे हो सकता है? एक आदमी सामान्य अच्छे व्यक्ति को सोचते हैं- गला काटने वाला गला जोड़ता नहीं, गला जोड़ने वाला गला काटता नहीं है। ये कैसे माना जाए इतनी बड़ी अच्छी चीज़, ये दोनो धंधा कर देता है। ऐसा हम अपने बड़े बुजुर्गों से जब वाद-विवाद करने लगे, वे कहने लगे यह ब्रह्म लीला है, तुमको इसमें प्रश्न करने का अधिकार नहीं है। मैंने कहा कि हर दारू पिया हुआ आदमी लीला करता है, हर गांजा पिया हुआ आदमी लीला करता है, हर पागल आदमी लीला करता है। यहाँ तक लीला करता है कि अपना घर को भी तोड़ देता है। क्या ये सबको सच माना जाए? ये पूछा तो बोले तुम जो है अतिवादी हो , छोटे मुँह में बड़ी बात करते हो। क्या किया जाए फिर? ये बताया हमारे बड़े बुजुर्गों ने कि तुम को इस पर सोचना पड़ेगा, अनुभव करना पड़ेगा। अनुभव कैसा होता है, उस विधि में यह ही कहा कि समाधि, संयम में अनुभव होगा। और किताबों में लिखा ही था- जो समाधि संयम में जो ज्ञान होता है उसको बताया नहीं जा सकता, वो अव्यक्त ही रहेगी। ये दोनों बात पहले से हमको लिख कर दे दिया, माने लेख रूप में लिख कर दे दिया है। ये सब को हम पढ़े ही थे। उसके आधार पर देखते हैं यदि हो सकता है। उसमें गुड़ खाया हुआ गूँगा

कहा था, हमारे शास्त्रों में लिखा है। तो गुड़ खाया हुआ तो गूँगा है, बात करने वाला यदि गुड़ खाएगा तो बात करेगा ही, मैं ऐसा अपना तर्क भिड़ाया। भिड़ा करके देखते हैं अभी तक गुड़ खाया हुआ गूँगा लोग देखे हैं, हम बात करने वाला देखेंगे, क्या होता है परिणाम। उसके आधार पर हम जाँच करने के लिए एक एकांत स्थली को सोचा, भारत में अमरकण्टक ठीक लगा और इसमें आकर के हम अपना प्रयत्न किए। प्रयत्न करने से संयोग से ये पूरी की पूरी बात जो हम अभी आपको बता रहे हैं, ये पूरी बात हम अस्तित्व में अध्ययन किया हुआ, अनुभव किया हुआ, उसको अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा में हम प्रस्तुत करने योग्य हुआ, तब हम इस प्रकार की चीख चिल्लाना शुरू किए। ये कुल मिलाकर के एक घटना विधि से ये चीज़ आ गयी।

अब जब ये हमको मिल गई, इसमें बंधन और मोक्ष का कारण स्पष्ट हुई। हम स्वयं मानव को जीवन और शरीर के रूप में अध्ययन किया। जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु के रूप में होना हम अध्ययन किया। गठनशील परमाणु के रूप में रासायनिक भौतिक संसार कार्य करता हुआ हमने देखा है। इसको अच्छी तरह से हमने अध्ययन किया। अध्ययन करने के बाद गठन पूर्ण परमाणु ही जीवन के रूप में काम करता है, इसमें ही आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और प्रमाण, ये प्रस्तुत होते हैं, ये हमको समझ में आया, उसको हम सटीक प्रस्तुत करने की कोशिश किए। अभी आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ। और इसमें कई लोग अच्छे गहरे से सोचते भी हैं, कुछ लोग धीरे-धीरे से भी सोचते हैं, यह दोनो तरीके चल ही रहा है, आप हम इसे देख ही रहे हैं।

यह जीवन भ्रमित होकर के, भ्रमित का मतलब जीवन जीव चेतना से जीव चेतना पूर्वक जीना शुरू करता है, यह जीव चेतना विधि में जी कर अपने को अच्छा मानने लगता है, जीवों से। क्योंकि मनुष्य ने मकान बना लिया, अपने को जीवों से अच्छा माना, कपड़ा पहन लिया, जीवों से अच्छा मान लिया, सड़क बना लिया, गाड़ी बना लिया- ये सभी विधा से मनुष्य जो है ना जीवों से अपने को अच्छा माना। ये हमको समझ में आया। किंतु मनुष्य जो है ना ज्ञानावस्था में होना हमने पढ़ा है प्रकृति में, और मानव ज्ञान के पास पहुँचा नहीं। ज्ञान के पास पहुँचने के लिए इसमें प्रावधान हो गयी। क्या प्रावधान हो गयी भई? जीवन ज्ञान होना, अस्तित्व दर्शन ज्ञान होना, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान होना, यह तीनो चीज़ मुझको स्पष्ट हुई। उसको हम आचरण करके देखा, यह प्रमाणित होता है। प्रमाणित होने के बाद क्या बात कहना? झाड़ में चढ़ कर चिल्लाना शुरू किया। इस ढंग से ये पूरे बात कही। मैं अपने में अनुभव करना, प्रमाणित करना जी कर और उसके बाद दूसरों को बताने की विधि से हम प्रवृत्त हुए। हक़ीक़त इतनी ही है।

जिज्ञासा: बाबाजी, आपने अपने मानव व्यवहार दर्शन में उद्घोष लिखा है, जीने दो और जियो। आज से २६०० वर्ष पहले भगवान महावीर ने जियो और जीने दो, ऐसा सूत्र दिया था। क्या गलती से आपने उसको उल्टा कर दिया? या सुविचारित इसके पीछे कोई पृष्ठभूमि है और आपका अनुभव है जिसके वजह से आप ने इस सूत्र को "जीने दो और जियो" इस रूप में मनुष्य जाति के सामने रखा?

उत्तर: एक 'होनी' की बात रही इसमें। आपने जिस तरीके से प्रश्न किया- महावीर स्वामी ने २००० वर्ष पहले अपनी दिव्य वाणी में जीने दो जियो कहा था, तुमने कैसे इसको उलट दिया, ये आपने पूछा। ये पूछने का बिंदु भी है, एक प्रकार से इसको पूछना भी चाहिए। इसमें प्रतिक्रिया वाद कुछ भी नहीं रहा। महावीर स्वामी बड़ी गलती किया, ऐसा कोई हमारा मन में थी नहीं। हमारा मन में जो आई, प्रमाण के आधार मैंने लिखा। हम प्रमाणित होने के लिए दूसरे को

जीने देना बनता ही है। जीने दिए बिना, हम समझा हुआ है इसका प्रमाण होते ही नहीं। अच्छा, अब मैं यह कह सकता हूँ महावीर स्वामी दूसरे महावीर स्वामी के रूप में परिवर्तित नहीं हुए। इसमें मैं जो समझा हूँ वो समझदारी ७०० करोड़ आदमी तक पहुँच सकता है। इस आधार पर जीने दो जियो को लिखा है। जीने दिया तब हम जीने का प्रमाण हुए, इस आधार पर जीने दो जियो लिखा है। समझदारी के बाद हम प्रमाणित हुए, इसका क्या प्रमाण? हम आप तक पहुँचाए। आपको ये बात को समझा दिया, आपने इस बात को समझ लिया, आप दूसरे को समझा लेंगे, तब यह जीने दो जियो परंपरा शुरू हुआ। इसके पहले नहीं होता है। ये कैसे? ऐसा हमारे अनुभव से इस विधि से इसको रखा। इसमें बहुत सारी बहुत बड़ी भारी तर्क-वर्क भी कम है, किंतु तर्क यहीं तक है, मैंने अनुभव किया है, मैं प्रमाण हूँ, इस बात का प्रमाण दूसरे आदमी जब तक तैयार नहीं हुआ तब तक हम प्रमाण हुआ, इसका क्या मतलब है? इसी ढंग से जो हम घोषणा किया है, हम जो समझा हूँ, उसको दूसरा आदमी समझ सकता है, या सभी आदमी समझ सकते हैं, ज्यादा आदमी समझ सकते हैं, इस बात का घोषणा किया है। उसके आधार पर यदि वो समझते हैं, वो दूसरों को समझा पाते हैं, तब हमारा जो है ना जीने देने का प्रमाण पूरा हो गया। इस आधार पर लिखा हूँ।

जिज्ञासाः बाबा आपने अपनी मंगल कामना में लिखा हैः भूमि स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम्, धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम्। भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो, धर्म सफल हो, नित्य मंगल हो। आपने एकदम अपने दर्शन की शुरुआत में ही इस मंगल कामना को रख कर इसको ज़रूर ही ज़्यादा महत्व दिया है, इसका क्या आशय है? हम लोग थोड़ा विस्तार से समझना चाहते हैं।

उत्तरः ये सामान्य ही है, इसमें कोई ख़ास बात नहीं है। पहले एक बात कहा है- उद्घोष- क्या कहा है? 'जीने दो जियो'। अभी पूरा बात जो है जीने देने के अर्थ में ही हम प्रमाणित होने के रूप में पूरा प्रतिपादन है यह। वो प्रतिपादन होते समय में धरती में आदमी यदि ऐसा जिएगा तब क्या होगा, कहा- धरती स्वर्ग होगी। अभी रहस्यमयी स्वर्ग के बारे में हमारे बुजुर्गों ने बहुत आश्वासन दिया था, उसके बदले में यह धरती स्वयं स्वर्ग होगी, मनुष्य देवता होगा। कैसा होगा- मैंने यह अनुभव किया हूँ- जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ है, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठ है, देव चेतना से दिव्य चेतना सर्वश्रेष्ठ है। इस बात को मैंने अनुभव किया है। तो मानव चेतना में जब परिवर्तित हो जाते हैं तब धरती में मानव झगड़ा, लड़ाई, धोखा-धड़ी जितने भी मानव विरोधी बात है, वो सब से मुक्त होगा। धरती को घायल करने वाला कार्यक्रम बंद होगा। धरती ही जब नाश की ओर जा रहा है, मनुष्य कहाँ रहेगा? धरती बचे बिना धरती पर मानव कैसे रहेगा? इसके आधार पर यह लिखा है- यह धरती स्वयं स्वर्ग होगा। ऐसा कब होगा? प्रमाणित व्यक्तियों का प्रचुरता होने के बाद यह धरती स्वयं स्वर्ग होगी। मनुष्य देवता के स्वरूप में ही मिलेगा, देव चेतना में ही मिलेगा। मानव चेतना तक अपने को प्रयास है, उसके बाद देव चेतना एक स्वाभाविक क्रिया है और दिव्य चेतना एक स्वाभाविक क्रिया है। ये स्वाभाविक रूप में आते ही हैं। तो देव चेतना और दिव्य चेतना में जीने के जो जीवन है वैसे ही मानव को हम देवता कहते हैं। ऐसा नाम दिया है। शरीर छोड़ने के बाद देवता बनेंगे, शरीर के साथ भी देवता ही बने रहेंगे, ऐसा लिखा है। इसलिए आगे लिखा है -जागृत मानव कर्म करने में भी स्वतंत्र और फल भोगते समय में भी स्वतंत्र है। उसका अर्थ यही है मानव जो कुछ भी करता है, समझ के करेगा। अभी तक अपन यात्रा किए हैं कर के समझो में, इसीलिए हम झाँझर हो गए। करके समझने में हर व्यक्ति अपने ढंग से कल्पनाशीलता को दौड़ाया। उसमें

सर्वाधिक अमानव चेतना काम किया, सर्वाधिक, राक्षस मानव पशु मानव के design में पूरा का पूरा प्रयत्न हुए, फलस्वरूप हम दुखी हुए। वो दुःख मुक्ति के लिए इसको प्रस्तुत किया है। दुःख मुक्ति कैसे होगा भाई? समझ के जिया करो, समझ के किया करो, समझ के बोला करो। ये बात यहाँ से शुरू किया।

आगे एक ऐसे ही चीज़ आता है– "जाने हुए को मान लो, माने हुए को जान लो"। सब इसी से जुड़ी हुई बातें हैं। तो भूमि स्वर्ग होने के पश्चात इसके आगे की कड़ी ऐसे जुड़ता है– सभी के साथ हम जीते हैं, मतलब जीवों के साथ भी जीते हैं और वनस्पतियों के साथ भी जीते हैं, खनिजों के साथ भी हम जीते हैं। इन सबके साथ संतुलन रूप में जीना बनता है तभी धरती स्वर्ग होगी। इनके साथ हम अभी विरोध से जी रहे हैं, इसीलिए हम संकट को मोल रहे हैं। कुल मिला के आशय क्या है? हम जो पहले बताया जीने दो और जियो– उस प्रकार की चेतना निर्मित होने के लिए यह मंगल कामना किया है। मानव, जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित हो, वहाँ से देव चेतना दिव्य चेतना में प्रमाणित हो, जिससे इस धरती में देवता के रूप में मानव प्रतिष्ठित हो। इस मंगल कामना को किया है।

जिज्ञासा: ये जो अंतिम बात है बाबा "नित्यम् यातु शुभोदयम्"?

उत्तर: "नित्यम् यातु शुभोदयम्" क्या शुभ हुआ ? ये चारों अवस्था में संतुलन शुभोदय, नित्य शुभोदय। माने पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था की चार अवस्थाएं बनी हुई हैं, इन सब में तालमेल, एक संतुलन, एक नियम, एक न्याय, ये सब चीज जीवित रहने से ये संतुलित रहेंगे ही। संतुलित रहने पर निरंतर शुभ ही उदय होती रहेगी। यानी वन जाएँगे वहाँ भी शुभ, घर आएँगे वहाँ भी शुभ, सड़क चलेंगें वहाँ भी शुभ, संकट का कारण ही नहीं है। अभी कहीं भी जाओ संकट के अलावा दूसरा कुछ है ही नहीं। इतनी सी बात है।

संकट से घिरे रहना है, तब तो हम परम्परागत विधि से जो कुछ भी किए उसको बनाए रखना चाहिए, संकट से मुक्ति पाना है, तब तो इस प्रस्ताव को अध्ययन करके देखना चाहिए और इसमें यदि सर्वशुभ होने की बात आता है, जैसा कामना किया, इसको अपनाना चाहिए। यही निकलता है।

भाग – 2

☞ विडिओ संदर्भ देखें: Satsang Raipur Bhag-2

जिज्ञासाः बाबा जी मध्यस्थ दर्शन के मूल तत्व में तीसरा है- अनुभव ज्ञान। सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति, सत्ता अर्थात व्यापक में सम्पृक्त जड़ चैतन्य इकाइयाँ अनंत। व्यापक पारगामी व पारदर्शी, सत्ता में संपृक्त सभी इकाइयाँ रूप, गुण, स्वभाव व धर्म संपन्न, त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में हैं। बाबा इसका क्या आशय है?

उत्तरः इस बात को लिखा है- अनुभव पूरा क्या किया, मैंने। इस बात को वहाँ सत्यापित किया है। अनुभव मैंने क्या किया, उसको सत्यापित किया है, यह संसार के लिए सूचना है। अभी जो आप-हम सत्संग कर रहे हैं, ये हृदय स्पर्शी विधि से होने के लिए सत्संग कर रहे हैं। तो इसमें मूल वस्तु है- सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति। सत्ता के बारे में मैंने देखा है- यह [सत्ता] सर्वत्र एक सा विद्यमान, सुखप्रद होना देखा गया, नित्य प्रतिष्ठा के रूप में देखा गया। इसमें रद्दो बदल, कमीबेशी का काम नहीं है। यहाँ ज़्यादा वहाँ कम ऐसा कुछ नहीं है। सभी पूरा जड़ चैतन्य प्रकृति में पारगामी है, पारदर्शी है। पारगामी होने के फलस्वरूप भीगा हुआ होना समझ में आया और डूबे रहने से घिरा हुआ भी समझ में आ गयी। इस ढंग से भीगा, डूबा, घिरा रूप में सारे प्रकृति को व्यापक वस्तु में देखा। डूबा हुआ है, घिरा हुआ है- व्यापक वस्तु, हर वस्तु के सभी ओर, और भीगा हुआ है- हर एक वस्तु। उसके सूक्ष्म-सूक्ष्मतम और बड़े से बड़े चीज़ों को देखा है, सभी भीगे हैं। जैसा सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु की ओर जाते हैं, परमाणु अंश नाम की चीज़ मिलती है। ये आँखों से देखने के लिए कितने लोगों को मिला हम नहीं जानते हैं, किंतु मैंने अनुभव किया है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु के रूप में परमाणु अंश होते हैं। उनकी प्रवृत्ति परमाणु में व्यवस्था के रूप में काम करने की बना रहता है, ये भी मैंने देखा है। ऐसे परमाणु अंश भी भीगा रहता है, डूबा रहता है, घिरा रहता है। उसमें लिखा है, व्यवस्था का प्रकटन परमाणु के बाद ही है। परमाणु, परमाणु से रचित रचनाओं के साथ ही व्यवस्था का प्रकटन है। इसके पहले के स्वरूप में परमाणु अंश में क्या प्रकट हुआ- परमाणु के रूप में गठित होने की प्रवृत्ति प्रकट हुई। एक सिद्धांत आया है -हर एक प्रकटन के पीछे की स्थिति में उसका बीज निहित रहा।कोई स्थिति प्रकट होने के पहले उसके मूल रूप में उसका बीज निहित रहता है। इसी प्रकार से परमाणु अंश में व्यवस्था के रूप में होने का प्रवृति समाहित रहती है। फलस्वरूप कम से कम दो परमाणु अंश एक दूसरे को पहचानते हैं, एक बीच में रहते हैं, एक चारो तरफ चक्कर लगाते रहते हैं। तब वो अपने निश्चित आचरण को बता पाते हैं। अकेले परमाणु अंश अपने में एक निश्चित आचरण को बता नहीं पता है। इस से निश्चित आचरण को प्रमाणित करने में क्या आ गयी- पूरकता, उपयोगिता। उसकी उपयोगिता भी होगी पूरकता भी होगी। पूरकता मायने दूसरे परमाणु के लिए क्या देगा, यह भी पता लग गयी। इस ढंग से एक परमाणु की अवस्था और यथास्थिति दूसरे परमाणु की अवस्था और यथास्थिति के लिए प्रेरक, इस ढंग से बन गई। इस ढंग से बन कर के अनेक प्रजाति के परमाणु हुए। अनेक प्रजाति के परमाणु जो बनी वो सबका सब डूबे हैं, घिरे हैं और भीगे हुए हैं। इस ढंग से मैंने देखा। अब उसके बाद परमाणु के पूरे बात को देखा तो केवल भौतिक क्रिया, रासायनिक क्रिया, जीवन क्रिया के रूप में कार्य करते हुए देखा। तीन ही प्रजाति की क्रिया है इसमें। जीवन क्रिया का यही काम है- जागृति क्रम, जागृति। और ये जो बाकी रासायनिक, भौतिक क्रियाएं हैं- विकास क्रम, विकास में कार्य करता हुआ मिलता है। ये सब विकास क्रम, विकास ना हों, विकास क्रम न हों, विकास हो, ऐसा कुछ नहीं होता। विकसित

वस्तु रह सकता है, विकास का प्रमाण नहीं हो सकता। ये सब न हों, जैसा जीवन हो गया, जीवन के रूप में कोई चीज़ जीवन की वैभव, वो सहअस्तित्व में ही प्रमाणित होगा। उसके लिए आगे चल कर के लिखा है हमने कि सहअस्तित्व नित्य प्रभावी, सदा प्रभावी, सदा- सदा के लिए प्रभावी है सहअस्तित्व। सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होने के आधार पर जड़ चैतन्य के योग में ही चैतन्य का वैभव, जड़ का सीमायें स्पष्ट हो जाते हैं। ये बात को आगे चल कर स्पष्ट किया है। इस ढंग से शुभ कामना के पूर्ति के लिए इस बात को देखा समझा या शुभ कामना के पूर्ति के लिए ये सब दिखा, समझ में आ गया , उसको हम प्रकट किया है। प्रकट करने पर इसमे हमको लगता है, व्यवस्था में होने के लिए पूरा Project बनता है। पूरे का पूरा अभिव्यक्ति व्यवस्था है, हम शुरू किये हैं, भौतिकवाद व्यवस्था नहीं है, यहाँ से शुरू किए हैं। दोनों का अंतर् इतना ही है, वस्तुएँ होते हुए, दृष्टि में व्यवस्था नहीं है,भौतिकवाद ने यहाँ से शुरू किया, इसी को जोड़ते गए घटाते गए। हम जितने भी व्यक्त किया है- व्यवस्था है, दो अंश के परमाणु में भी, दो सौ अंश के परमाणु में भी व्यवस्था है। व्यवस्था होने के आधार पर निरंतर एक दूसरे के लिए व्यवस्था के प्रेरक हैं और पूरक हैं -इस बात को स्पष्ट किया। स्पष्ट करने के पश्चात् चैतन्य परमाणु जड़ प्रकृति से भिन्न हो गयी, गठनपूर्णता के आधार पर, चैतन्य प्रकृति भी जड़ प्रकृति के साथ ही अपना वैभव को व्यक्त करता है। कैसे? सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होने के आधार पर।

व्यापक वस्तु, सम्पूर्ण जड़, चैतन्य प्रकृति के साथ ही अपने वैभव को प्रकट किया। ये न हों, वो प्रकट हो जाये ऐसा होता ही नहीं। वही हमारे बुज़ुर्गों ने लिखा है। व्यापक वस्तु ज्ञान रूप में अपने में अव्यक्त है और अनिर्वचनीय है। उस समय में शायद उतना ही लिखने की ज़रुरत रहा होगा, उतना ही लिखे हैं, या उनको समझ में नहीं आया होगा ऐसा भी हम सोच सकते है। जैसा जो सोचे, मेरे अनुसार सम्मान जनक भाषा यही है कि उस समय में उतना ही लिखना उचित समझा, उतना ही लिखा, उतना जिये, उतना प्रमाणित हुए, और आगे के लिए आशीर्वाद दे कर के गए, ऐसा मैं कहता हूँ।

जिज्ञासा: बाबा, चौथा बिंदु है सिद्धांत- श्रम, गति, परिणाम, इसको स्पष्ट करेंगे?

उत्तर: उसमे ये लिखा है आगे, ऊर्जा संपन्न होने के कारण, भीगे रहने से ऊर्जा संपन्नता, ऊर्जा सम्पन्नता का प्रकटन बल के रूप में, बल गति के रूप में, गति परिणाम के रूप में, परिणाम श्रम के रूप में, परिणाम और श्रम गति के रूप में प्रकट होता गया, अपने आप में। इसमें किसी Engineer का काम नहीं है, कोई बुद्धिजीवी का काम नहीं है, कोई नेता का काम नहीं है।

जिज्ञासा: बाबा जी तो इस सिद्धांत से सारी इकाइयां काम करती हैं?

उत्तर: हर इकाइयां स्वयं स्फूर्त काम कर रही हैं। हर वस्तु सत्ता में भीगा, डूबा, घिरा रहने से। भीगा रहने से ऊर्जा सम्पन्नता, डूबा रहने से क्रियाशीलता, घिरे रहने से नियंत्रण। तीन चीज़ आपको अध्ययन, बोध होता है। हर वस्तु, हर परमाणु अपने में नियंत्रित है, क्रियाशील है और बल संपन्न है। ये तीन बात अपने आपमें सबमें सम्पूर्ण रूप में दिखाई पड़ती है। यह बोध होने से सम्पूर्ण क्रिया स्वयं स्फूर्त है। कोई आदमी, जैसा हम पतंग को उड़ाते हैं, वैसे सबको

उड़ा नहीं रहे हैं। ये अपने आप में स्वयं स्फूर्त विधि से सभी काम कर रहे हैं, इस पर हम विश्वास रख सकते हैं। इससे क्या फायदा पूछो– मनुष्य भी अपने में स्वयं स्फूर्त विधि से व्यवस्था में जी जायें। यही मंगल कामना पहले ही रखा है। कब होगा शुभ? मानव जब व्यवस्था में जिएगा। उसके पहले शुभ घटित होने वाला नहीं है। और सर्व शुभ की जगह में सर्व के लिए अनिष्टकारी कार्य में आदमी जात लग गया, इसलिए प्रकारांतर से हम सभी अपराध के कटघरे में आ गए हैं। इसको अच्छे ढंग से यदि परीक्षण किया जाए तो कोई आदमी धरती में बचेगा नहीं, सभी फंसेगा। फंसा ही है। अब उसको छूटने के लिए प्रस्ताव रूप में एक छोटा सा काम शुरू किया। इसमें आप सब स्वतंत्र हैं और बहुत अच्छे ढंग से समझने योग्य हैं, सच्चाई को समझने की तीव्र इच्छा आप लोगों में बनी हुई है, जिसको मैं देखता हूँ। तो वो सफल हो ऐसा मैं कामना करता हूँ, कामना करते हुए इस पूरे बात को आपको समझाते तक एक निश्चित तरीका अपनाया हूँ उस तरीके से हम समझा देता हूँ।

जिज्ञासाः बाबा पाँचवा बिंदु है उपदेश– जाने हुई को मान लो, माने हुए को जान लो।

उत्तरः अनुभव के बाद ये पता चला, हम अभी तक क्या सोचते आये हैं कि करके सीखो, परंपरा में यही करते आये हैं और ईश्वरवाद भी वही बोला और ये (भौतिकवाद) भी बोला। दोनों यही बोले। पहले ईश्वरवाद बोले “आचारः प्रथमो धर्मः, विचारस्तदनन्तरम्”। आचरण के बाद विचार करना। अभी, पहले नहीं करना कहा। उसमें बिलकुल सरशब्द व्यतिरेक ये दिखा कि विचार के बिना कोई आचरण कर ही नहीं सकता। यहाँ निकल गए, तो हमको बताया गया कि तुम अतिवादी हो, छोटे मुंह में बड़ी बात करते हो, ये सब हमारी परंपरा ने हमको तोहफा दिया। उसके बाद हम ये सब किये हैं। इसके बाद हम ये प्रस्तुत किया है, भाई अब समझ के करो। अब जो कुछ भी शेष ताकत धरती में है उसको बचाने के अर्थ में हम यह कर सकते हैं, समझ के यदि काम करना शुरू करते हैं, सोचना शुरू करते हैं, और प्रमाणित करना शुरू करते हैं, फल परिणाम को पाना शुरू करते हैं, धरती में यदि ताकत बचा होगा अपने में ही सुधार लेगा। ऐसा शुभेच्छा से इस प्रस्ताव को रखा। इसमें क्या होगा– जाने हुए को मान लो, माने हुए को जान लो। दोनों स्थिति में समझ के ही करने की स्थिति बनती है।

जिज्ञासाः बाबा जाना हुआ और माना हुआ में क्या अंतर् है?

उत्तरः अभी भ्रमित संसार में इसमें व्यतिरेक है, जाग्रत संसार में कोई व्यतिरेक नहीं है। अभी हम माँ कहते हैं, पिता कहते हैं, मित्र कहते हैं, बंधु कहते हैं, और संबंधों का उच्चारण करते हैं। क्या आजीवन निर्वाह हो पाता है क्या ? पूछा जाये तो कितने लोगों में निर्वाह हो पता है, उसको सोच लो। ये जीव संसार के काम है। जीव संसार में हम लोगों ने देखा है, गाय बच्चा देती है, उसे कोई आदमी यदि छू दिया उसको मारे बिना वो छोड़ेगा नहीं। दो दिन के बाद वो मारने वाला बात कम हो जाता है। चार दिन के बाद मारना भूल जाता है। अपने बच्चे के संरक्षण में सब कुछ करने के लिए तैयार रहता है, जब वो बच्चे को दिया रहता है। तो इस प्रकार से पशु संसार में भी ममता का थोड़ा बहुत लगाव थोड़े दिन के लिए दिखता है, वो ममता मानव में शरीर यात्रा पर्यन्त रहना है। पर्यन्त रहने के लिए क्या हुआ? जाना हुआ को मान भी लिया और माना हुआ को जान भी लिया। जैसा– पुत्र को कौन नहीं जानता है, पुत्र किस प्रयोजन के लिए है उसको हम पहचाना नहीं है, मानव परंपरा। अभी तक परंपरा क्या सोचा, ईश्वरवादी परंपरा ये सोचा–

हमारा संतान ख्याति प्राप्त करेगा। क्या ख्याति? वेद मूर्ति बनेगा, विद्वान बनेगा और शास्त्रार्थ में लोगों को परास्त करेगा, अपना खड़ाऊ को दूसरों के पूजा घर में रख आएगा। यहाँ तक नमूने प्रस्तुत किये हैं।

इस बात को स्पष्ट करता रहा कि जाने हुए को मान लो, माने हुए को जान लो– ये लिखा है। इस मुद्दे को अच्छी तरह से लोकगम्य होने के लिए स्पष्ट करता रहा। मूल मुद्दा अभी तक की हमारी यात्रा रही, ईश्वरवादी विधि से, भौतिकवादी विधि से, 'करके समझो'। हम अभी शुरू किये हैं– 'समझ के करो'। यह बात कुछ तो आपको समझ आ गया है। इसके साथ इसको जोड़ सकते हैं कि जितने भी हम प्रयोगों में व्यर्थता को प्रयोग करते हैं, प्रयोजन के अर्थ में प्रयोग करना बन जाता है इससे। कैसे? तो हम पहले जान लेते हैं– भौतिक वस्तु का क्या प्रयोजन है, भौतिक कार्य कलाप का क्या प्रयोजन है, भौतिक परिणाम का क्या प्रयोजन है? उसके बाद रासायनिक वस्तुओं का क्या प्रयोजन है, रासायनिक परिणामों का क्या प्रयोजन है, रासायनिक स्थिति गति का क्या प्रयोजन है? इन तीनो चीज़ को हम अध्ययन कर लेते हैं। उसके बाद जीवों का क्या प्रयोजन है? भुनगी का क्या प्रयोजन है? सभी का प्रयोजनों को हम पता लगा लेते हैं, इसका नाम है जानना। इसी प्रकार मानव का प्रयोजन को पहचानते हैं। उसके बाद इन सबका प्रयोजन को जानकर, मानकर, प्रयोग करना बनता है, इसके पहले बनने वाला नहीं। मानव अपने प्रयोजनों को पहचानना होगा, जीव संसार के प्रयोजनों को पहचानना होगा, वनस्पति संसार के प्रयोजनों को पहचानना होगा, और खनिज संसार के प्रयोजनों को पहचानना होगा। जानना होगा अच्छी तरह से, जानने के बाद मानना होगा। जानने मानने के बाद ही पहचानने निर्वाह करने की बात आती है। यह इसके साथ जुड़ती है, अभी इसको स्पष्ट करेंगे और थोड़ा सा।

भाई, पदार्थ संसार का क्या प्रयोजन है? अभी इसके पहले एक सूत्र आपको सुनाये थे– 'हर आगे के प्रगटन के लिए बीज पीछे स्थिति में बना रहता है'। परमाणु अंश में परमाणु बनने का बीज बना है, परमाणु में अणु बनने का बीज बना हुआ है, अणु में रचना की बीज बनी हुई है, रचना– बड़े से बड़े रचना धरती है। धरती में रसायन संसार का बीज बनी हुई है, रसायन संसार में जीव संसार का बीज बनी हुई है, और जीव संसार में मानव संसार उदय होने का बीज बना रहता है। यह बात हमको अच्छी प्रकार से सोचना पड़ेगा। ये प्राकृतिक गवाही है। क्योंकि भौतिक संसार समृद्ध होने के बाद ही रसायन संसार प्रकट हुई, रसायन संसार प्रकट होने के बाद ही जीव संसार प्रकट हुई, जीव संसार प्रकट होने के बाद ही मानव संसार प्रकट हुआ है। यह गवाही रखा ही हुआ है। उसके बारे में और कोई बहुत बड़ी laboratory बनाने की ज़रुरत नहीं है। प्रकृति में जो गवाहीयां रहते हैं वो ज़्यादा से ज़्यादा उपयोगी, सबको समझ में आने वाला होगा, ऐसा मेरी स्वीकृति है। हम घर में बना लेते हैं, एक छोटे से कमरे में बना लेते हैं, वो सबके पहुँचने वाला नहीं होगा। ये प्रकृति में जो व्यवस्था है, ये सबको पहुँचने वाला है, सभी व्यक्ति प्रकृति से जुड़ा ही है। मानव है, बाकि तीनों प्रकृति से जुड़ा ही है। पदार्थ है, बाकि तीनों प्रकृति से जुड़ा ही है, रसायन संसार है, बाकि तीनो प्रकृति से जुड़ा है, जीव संसार है, बाकि तीनो प्रकृति से जुड़ा ही है। अकेले में कोई चीज़ नहीं है ये बात समझ में आता है। इसका कारण बताया था कि सहअस्तित्व नित्य प्रभावी है। व्यापक वस्तु जैसा निर्मल वस्तु, कोई भी उसकी ज़रुरत नहीं है, ज़रुरत का खाका उसमे नहीं है, ज़्यादा कम का खाका उसमे नहीं है, परिणाम का खाका उसमे नहीं है, परिवर्तन का ख़ाका उसमे नहीं है। और ऐसी पावन वस्तु सहअस्तित्व के बिना प्रमाणित नहीं हो पाया, इससे बड़ी चीज क्या बताएं। इससे बड़ी चीज बताया नहीं जा सकता। अभी मनुष्य ज्ञान सम्पन्न होने के पश्चात् चारों अवस्था के साथ ही प्रमाणित होगा। चारों अवस्था में किसी को हम लात मार देंगे, किसी को लूट मार देंगे, किसी को सेंध

मार देंगे, हम अपने में प्रमाणित होंगे, ऐसा सोचें, वो क्या होगा सोच लो। अभी तक हम जो चले हैं इसी प्रकार की निष्ठुरता, धृष्टता, क्रूरता को लेकर चले हैं, फलस्वरूप कष्ट में घिर गए, घिरना ही था घिर चुके। तो अभी यदि सद्बुद्धि का प्रयोग करेंगे तो संभव है बची-खुची धरती की शक्तियां वो अपने में सँभालने में योग्य हो जायें। इस आधार पर हम ये प्रस्ताव ही रखे हैं।

3

भाग – 3

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-3*

जिज्ञासाः अगला बिंदु इसमें प्रमाण का है। तीन प्रकार के प्रमाणों की बात की है, अनुभव, व्यवहार और प्रयोग। आगे लिखा है बाबा, अनुभव ही प्रमाण, प्रमाण ही समझ, समझ ही प्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष ही कार्य व्यवहार, कार्य व्यवहार भी प्रमाण, प्रमाण ही जाग्रत परंपरा, जाग्रत परंपरा ही सहअस्तित्व।

उत्तरः ठीक है। यह ऐसा कुछ सूत्र बना– जहाँ से शुरू किये थे वहां तक पहुँच गए। इस मुद्दे पर थोड़ा सा प्रकाश डालना चाहूंगा। उसके लिए अनुमति चाहिये। तो मूल में क्या है, हम अभी तक जो सोचे थे वो एक अनुग्रह विधि से सब कुछ– ईश्वर वाद। उसके बाद सारे विकास के नाम से शुरू किया विज्ञान। विज्ञानं एक सीधा गति है ऐसा शुरू किया उसके बाद उसमे जोड़ हुई थोड़ा सा, कि सीधा भी है तिर्यक् भी है। माने थोड़ा सा टेढ़ा भी है और सीधा भी है, ऐसा सीढ़ी बनाया। कब तक पूछा तो – अंतविहीन। कभी समाप्त नहीं होगा विकास, उनके अनुसार [विज्ञान के अनुसार] यहाँ पहुंचे हम। ईश्वर वाद के अनुसार अनुग्रह से सृष्टि, स्थिति, लय होती है। ये उन लोगों ने बताया अपने ढंग से। उससे भौतिकवाद राज़ी नहीं हो पाया इसलिए प्रतिक्रिया विधि में वो चल दिए। अभी जो है ना ईश्वरवाद भी भौतिकवाद के पास आकर के कह रहा है – ये सब विज्ञान ठीक है। पहले उसको गाली देता रहा, और सूली चढ़ाता रहा, अभी उसको पूजा करता है। बात बताया है एक –ये घटनाक्रम यहाँ आया।

हम जो समझा –दोनों में जो घोषणाएं हुईं हैं तौर तरीका अपनाये हैं उसमे मूल में पीछे के मुद्दे पर बताया था 'कर के समझो', करके समझने में हम कही पहुँचते ही नहीं, क्योंकि करके समझने जाते है कुछ त्रुटियां होती हैं, उन त्रुटियों को ठीक करने जाते है कुछ और त्रुटियां होती है उस को ठीक करने जाते है और त्रुटि.... ऐसा त्रुटि में हम फंस गए। त्रुटियों के चंगुल में ही फंस गए हम। अंततोगत्वा हम कुंठा निराशा के शिकार हो गए। हमने यह मान लिया ये सब शास्त्र ठीक है, और ये लिखा हुआ ठीक है, हम बेवकूफ हैं। इस कुंठाग्रसित होने के योग्य हुए ईश्वरवादी विधि से। इस ढंग से शास्त्र में भी लिखा है आदमी अल्पज्ञ है, पापी है। अब ये आ गए तो क्या शुरू किया कि वस्तु को हम कैसे आदमी की सुख सुविधा के लिए प्रस्तुत करें, अपने विज्ञान के तौर तरीका को ये मान लें। विज्ञान का तौर तरीका क्या है– युद्ध करना है, युद्ध के सामरिक तंत्रों को उज्जवल बनाना है, श्रेष्ठ बनाना है, बढ़िया युद्ध करना है। उसके पहले भुजबल था जिसमें तलवार चलाना तक पहुंचे थे। तलवार चलाने से बंदूक में अंतरित हुए। तलवार के पहले गुत्थम–गुत्था, मुष्टि युद्ध, उसको द्वंद युद्ध कहते थे, मल्ल युद्ध कहते थे। इस प्रकार से हमारा किताबों में नाम दिया है, भागवत में रामायण में। वहां से चल करके हम यहाँ आ गए कि यहाँ बैठे रहते हैं, यहाँ से कोई बटन दबाते हैं वहां बम विस्फोट होता है।बस यहाँ पहुँच गए। यहाँ पहुँचने के बाद अभी सोचने की मुद्दा तो बनी ही है, इससे कैसे पार पाया जाए। वो अपने जगह की संकट की व्यवस्था बन गयी। अपने ही किया हुआ अपने संकट की व्यवस्था बन चुकी है। एक तो ये बनी और हम जो बनाया उसे प्रयोग कर हम भी नहीं बचेंगे, ये भी एक संकट की व्यवस्था बन गयी। अब दोनों तरफ में किस ओर दौड़ना है दौड़ लो, कोई रास्ता दिख नहीं रहा है। उसके लिए हम ये कहे हैं "समझ के करो"। समझ के करने से क्या होगा– सबका प्रतिष्ठा है। जितने भी सब खनिज तंत्र हैं उसका अपना प्रतिष्ठा है, उस प्रतिष्ठा में हरियाली का बीज समाया है। रसायन तंत्र आयी हरियाली आयी, हरियाली में जीव प्रतिष्ठा का बीज समाया है। जीव प्रतिष्ठा प्रकट हो गई उसमें मानव को प्रकट करने की बीज समायी है। मानव आ गया मानव में मानव चेतना,

देव चेतना, दिव्य चेतना का बीज समाया हुआ है। उसको छोड़ दिया, तिल अक्षत ले कर तर्पण कर दिया उसको तिलांजलि कहते हैं, उसके साथ फूल मिला लिया, उसे कहा श्रद्धांजलि। श्रद्धांजलि, तिलांजलि दोनों देकर के हम चले हैं। किस बात की– हम अपने में सुधरने से विमुख हो कर सुधार की ओर तिलांजलि, श्रद्धांजलि समर्पित कर दिये। अभी जगह नहीं है किस ओर जाएं। उस आधार पर हमने इस बात को तय किया यदि आदमी सुधरेगा धरती के साथ अपराध मुक्ति होगी और अपराध मुक्ति होने से धरती में बची–खुची ताक़त अपने को सुधारने में लगेगी। ऐसा मैं सोचा इसमें किसी को कोई तकलीफ? किस प्रजाति की तकलीफ? बात ऐसा बन जाता है। इस तरह से हम कहाँ पहुँचे ?उसमे मनुष्य को ईश्वर के कृतज्ञ होकर जीना था, इसमें विवश होकर जीने की बात आयी, अब प्रमाण पूर्वक जीना के लिए हम शुरू करते हैं। इसकी आवश्यकता है कि नहीं? प्रमाण क्या होगी, पूछा तो– अनुभव प्रमाण, व्यवहार प्रमाण, और प्रयोग प्रमाण। प्रयोग प्रमाण को इस जगह में बताया है– हमारे आवश्यकीय वस्तुओं को निर्माण करने में सदा प्रयोग होगी, व्यवहार प्रमाण मनुष्य के साथ होगी, और अनुभव प्रमाण व्यवस्था के रूप में होगी। तीन के लिए तीन जगह बताया। उसके बाद व्यवस्था कैसा होगा उसमें भी हम पहुंचे हैं। और व्यवहार कैसे होगा उसमें भी हम पहुंचे हैं। ये तीनो जगह में प्रमाणित कैसे होंगे उसका सूत्र व्याख्या भी प्रस्तुत किया। इसके पहले प्रमाण प्रस्तुत कैसे किया– विज्ञानी प्रयोग को प्रमाण मानते हैं। प्रयोग में क्या चीज़ है– यंत्र। यंत्र जो बोलता है वो सत्य है ऐसा मानते हैं। उसी आधार पर अपनी तबियत को बताने के लिए भी यंत्र को launch किया, इस प्रकार हम आ रहे है, यंत्र के प्रमाण के तले हम अपने को सुखी होने के लिए बहुत सारा प्रयत्न बना रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं। उसमे कुछ आसार भी दिखता है, किसी में तो आसार भी नहीं दिखता, दोनों चीज़ हो रही हैं। होते–होते कहीं पहुंचेंगे, अपनी गति है। तो इस बीच हमने प्रस्ताव रखा कि मनुष्य अनुभव प्रमाण पूर्वक जीना व्यवस्था में बनता है। व्यवहार प्रमाण पूर्वक जीना अखंड समाज के रूप में मानव के साथ जीना बनता है, और प्रयोग प्रमाण पूर्वक जीना हमारी आवश्यकता के रूप में छह प्रकार के वस्तुएँ होते हैं– आहार, आवास, अलंकार, दूर श्रवण, दूर गमन, दूर दर्शन, इन वस्तुओं को उत्पादन करने के रूप में हम प्रयोग करते हैं। इस ढंग से यदि तीन प्रकार से प्रमाण प्रस्तुत करने का यदि हम परम्परा बनाते हैं मनुष्य समाधान पूर्वक, समृद्धि पूर्वक जीना बनता है। व्यवस्था में जीना बनता है। ये प्रस्ताव के लिए ये तीन प्रमाण रखा। और इसके पहले हमारे बुज़ुर्गों ने प्रमाण के बारे में प्रस्तुत किया– पहले शब्द प्रमाण बताया। शब्द प्रमाण के आधार पर बहुत बड़ी भारी literature लिखा उसका नाम है कठोपनिषद। उपनिषद पूरा का पूरा इसी के लिए waste हुई है कि शब्द ही प्रमाण है। उसमे ये प्रतिपादित किया है प्रणव शब्द को शब्द माना है। उसके बाद वेद को शब्द माना, ऐसा माना है।

इसमें ब्रह्मसूत्र में ये लिखा है "ईक्षतेर्नाशब्दम्"। शंकराचार्य जी ने व्याख्या किया है, तीनो वेद के शब्दों से इसको वर्णन किया नहीं जा सकता। इस ढंग से वेद को भी शब्द माना है उसके पहले ओमकार को, प्रणव को, शब्द माना। उसके आधार पर ये कहा 'शब्द ही प्रमाण है'। उसके बाद उसके संरक्षण में व्याकरण आयी। व्याकरण के अनुसार शब्द को ही पद माना। उधर प्रमाण माना ये पद माना। प्रमाण ,पद ये ही है, ये मना दिया। वो समय चला बहुत उथल पुथल हुई, आपके सामने इतिहास है ही।

और उसके बाद "आप्त वाक्यं प्रमाणम्", शब्द प्रमाण के बाद। उसके बाद "प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि"– प्रत्यक्ष रूप में जो होता है प्रमाण इत्यादि। उसके बाद चौथा बताया है शास्त्र प्रमाण। करीब–करीब सभी शब्द ही है ऐसा बात माना जाये। उसके बदले में हम इन तीन प्रमाण को अपन अभी प्रतिपादित कर रहे हैं। प्रमाण change हुई, प्रमाण

की विधि change हुई और प्रमाण की स्वीकृतियां change हुई। अब ये जो अनुभव मूलक विधि से प्रमाण होना चाहिए, या प्रत्यक्ष अनुमान आगम विधि से होना है, या शब्द प्रमाण के आधार पर होना है, ये सोचने का मुद्दा है। सोचने से यदि किसी को लगता है कि अनुभव प्रमाण मूलक विधि से ही हमारा प्रमाण पूरा पड़ता है तो ऐसे में वो निष्ठावान होगा ही। ऐसा मेरा सोचना है।

प्रमाण के लिए क्या बोला था "समझ के करो", समझ क्या है- ज्ञान। ज्ञान क्या है- अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान। ये स्पष्ट हो चुकी है। इसको अध्ययन किया जा सकता है, ये आपको भी विश्वास हुआ है, मुझको भी विश्वास हुआ है। आप भी अध्ययन कराते हो मैं भी अध्ययन कराता हूँ। ठीक है ना? ये ज्ञान ही है जो अध्ययन कराया जा सकता है। बाकि को क्या अध्ययन कराना है? बनता भी नहीं है। जो अध्ययन करना बनता नहीं है उसको अध्ययन मान रहे हैं, जो अध्ययन करना होता है उसको अध्ययन मान नहीं रहे हैं। ये ज़बरदस्ती हो गया कि नहीं। मानव ज़बरदस्ती पंथ में चल दिया थोड़ा सा। उससे जो होने वाला था हो गया।दुःख पाया, tourist होने के लिए कुछ ज़बरदस्ती पंथ में चलना भी पड़ता है। बात ऐसा है।

जिज्ञासाः आगे बाबा -यथार्थ। उसमें कुछ बिंदु हैं-"ब्रह्म सत्य, जगत शाश्वत"।

उत्तरः इसको हम लिखे है। इसके पहले हमारे बुज़ुर्गो ने लिखा था- ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या। उसके बदले में हम लिखे हैं- "ब्रह्म सत्य, जगत शाश्वत"। ब्रह्म में सभी प्रकृति काम कर रही है इसीलिए प्रकृति नित्य है, जगत नित्य है ऐसा लिखा है।

जिज्ञासाः ब्रह्म व्यापक, जीवन पुंज अनेक।

उत्तरः ब्रह्म व्यापक रूप में स्थित है जो पारदर्शी, पारगामी और व्यापक। तीन Qualification लिखा है। ये तीनो चीज़ ब्रह्म का स्वरुप में दिखता ही है। हम समझाते ही हैं और समझते भी हैं। जो ब्रह्म वस्तु है उसमे सभी वस्तुएँ होने के आधार पर, जो जड़ चैतन्य प्रकृति की बात की है, चैतन्य प्रकृति को जीवन कहा है। जीवन पुंज के रूप में ही जीवन रहता है, जो अपनी लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई से अधिक अपने कार्य गति पथ में रहता है। ये बात बताया, ये बात हो गयी है।

जिज्ञासाः जीवन पुंज में अविभाज्य आत्मा, जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का वैभव है।

उत्तरः जीवन पुंज में आत्मा अविभाज्य रूप में रहता ही है, यद्यपि सभी अवयव अविभाज्य हैं। बुद्धि भी, चित भी, वृति भी और मन भी, चारों अवयव आत्मा के साथ अविभाज्य रहते हैं। इन चारों के साथ आत्मा अविभाज्य रहता है। ऐसा लिखा है।

जिज्ञासाः ईश्वर एक देवता अनेक।

उत्तरः ईश्वर के साथ व्यापक ही शब्द लगती है यह एक नाम दिया, इसको यदि संख्या देखकर देते है तो एक ही होता है। ईश्वर सर्वत्र ही एक है इसलिए एक लिखा। है तो व्यापक ही। ईश्वर व्यापक, प्रकृति अनंत।

जिज्ञासाः मानव जाति एक, कर्म अनेक।

उत्तरः मानव जाति अपने स्वरूप में एक बताई। मानव जाति को कैसे पहचाना– शरीर के आधार पर। शरीर में जो रंग, नस्ल के आधार पर जो आदमी को पहचाना गया, वो सभी आदमी में एक ही प्रकार का खून पाया गया। खून में जो विविधता जो देखी गयी जितना वो काले आदमी में भी उतना ही विविधता है जितना गोरे और भूरे आदमी में। इसके आधार पर लिखा है मानव जाति एक कर्म अनेक। अनेक कर्मो को करता हैं।

जिज्ञासाः भूमि एक राज्य अनेक।

उत्तरः धरती एक ही है, अखंड राष्ट्र है, राज्य अनेक हैं। तो अभी दस सोपान में हम पूरा राज्य को बताया– परिवार राज्य, परिवार समूह राज्य, ग्राम राज्य, ग्राम समूह राज्य, ऐसा दस नाम दिया है। दस सीढ़ी में पूरा धरती में अखंड समाज व्यवस्था की बात की है।

जिज्ञासाः मानव धर्म ,एक समाधान अनेक।

उत्तरः मानव धर्म, जो सुख है, सुख के लिए समाधान का सूत्र अनेक हैं। हर दिशा हर कोण से मनुष्य को समाधान मिलता है। मनुष्य को अनंत कोण संपन्न बताया है, हर वस्तु को बताया है। उसमे इसी प्रकार से अनंत विधि से मनुष्य को समाधान मिलता है। अनेक समाधान मिलता है सुखी होने के लिए। समाधान से सुख होता है।

जिज्ञासाः अनेक समाधान को थोड़ा सा बताइये

उत्तरः हर दिशा में हर कोण में हर परिप्रेक्ष्य में, हर मुद्दे में, एक परिवार में समाधान होता है और पड़ोस में समाधान, गाँव में समाधान, दस गाँव में समाधान, पूरा धरती के मानव के साथ समाधान ये कितना गिना जाए इसको और इनके साथ आहार से, विहार से, व्यवहार से, स्वयं मे विश्वास से, और सम्मान से, श्रेष्ठता के सम्मान से लेकर जितने भी हम कोणों में हम जाते है सभी मुद्दों में हमे समाधान मिलता है हम सुखी होते हैं।

जिज्ञासाः परन्तु चाहिए ये सब, ऐसा भी है न बाबा।

उत्तरः अभी भ्रम से जागृति की ओर गति है, अपना प्रस्ताव है अभी, जागृति हो गया ऐसा नहीं है। अभी जागृति का एक सूचना शुरुआत हुई है जागृत होना दिल्ली दूर है। सभी होना अभी और भी दूर है। ठीक है।

जिज्ञासाः जीवन नित्य, जन्म मृत्यु एक घटना

उत्तरः शरीर के साथ जन्म और मृत्यु लगी है, गर्भाशय में शरीर रचना होता है ये सबको विदित है। गर्भाशय के बाद जन्म होता है, और जन्म के बाद बड़े होना होता है, वृद्धापे होना होता है शरीर में जो कोषायें बनते है, वो शरीर में जितना क्षय होते हैं उतना बन नहीं पाते हैं धीरे-धीरे मृत्यु की ओर , विरचना की ओर चले जाते हैं उसको हम मृत्यु कह रहे हैं।

जिज्ञासाः अगला Topic है बाबा -वास्तविकता। इसमें आपने लिखा है विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति, जागृति पूर्वक अभिव्यक्तियाँ और परंपरा।

उत्तरः इतना ही बात है। वास्तविकता क्या है- चार अवस्था या चार पद। ये ही वास्तविकता। वस्तुएं जो कुछ भी प्रगट कर रहे हैं वो सब वास्तविकता है। वैसे मानव को जागृति के पद में ही व्यक्त होना, प्रगट होना वास्तविकता कहा है। भ्रमित होकर के जो प्रगट होता है उसे हम वास्तविकता कहा नहीं, दुख को वास्तविकता कहा नहीं। बुद्ध ने कहा दुःख ही एकमात्र सत्य है, नाम दिए हैं। तो हम दिए हैं- दुःख घटना है, घटनाएं परंपरा नहीं हैं। अभी रेल दुर्घटना, रेल दुर्घटना क्या परंपरा हो सकती है क्या?

जिज्ञासाः परंपरा से आपका आशय बाबा?

उत्तरः वो जो हर दम होते रहे। अपनी बेवकूफी से दुर्घटना। मानव जाति की बेवकूफी बराबर दुर्घटना। जितने भी दुर्घटनाएं हैं मानव जाति की बेवकूफी से ही होती है, नहीं तो दुर्घटना का कोई स्थान नहीं। किस विधि से- समझ के जीने से दुर्घटना का कोई स्थान नहीं है। आप दुर्घटना चाहेंगे कि दुर्घटना नहीं चाहते हैं? नहीं चाहते हैं। इससे ज्यादा प्रमाण क्या होगा।

जिज्ञासाः ये जो आप ने कहा बाबा की भ्रम पूर्वक जो है उसे आप वास्तविकता नहीं कह रहे हैं, उसे एक घटना कह रहे हैं। थोड़ा इसमें भेद और स्पष्ट करें।

उत्तरः घटना जो है हम चाहते नहीं हैं, जिससे मुक्ति पाना चाहते हैं, वो सब घटना ही है अभी जैसे जन्म मृत्यु को एक घटना कहा, मृत्यु को थोड़ा ही चाहते हैं। जन्म तो चाह रहे हैं, मृत्यु को नहीं चाह रहे हैं वो कैसे बताया रासायनिक भौतिक वस्तु में परिवर्तन होता है, इसलिए इसमें रचना विरचना होती है, जीवन नित्य है, अमर है ये बात कहा है। अमर वस्तु को पहचानने की आदिकाल से तृषा रही। उसको जीवन रूप में पहचाना जा सकता है, ये लिखा है।

जिज्ञासाः आगे है ज्ञान- जीवन ज्ञान, सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान, अनुभव ही ज्ञान।

उत्तरः इतना ही अनुभव की मुद्दा है, ये ज्ञान ही अनुभव है। ये ज्ञान का प्रगटन ही प्रमाणिकता है। ज्ञान हुआ हम दृष्टा पद में हुए, समझदार हुए माने दृष्टा पद में हुए और उसको प्रमाणित किये माने जागृत हुए। इतनी ही छोटी सी बात है। माने समझना भी है प्रमाणित करना भी है ये सबके साथ जुड़ा है कि नहीं है। बात इतना ही है।

जिज्ञासाः अनुसंधान– गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता।

उत्तरः जो कुछ भी परंपरा में था नहीं वो क्या कर दिया पूछे, उसके लिए ये अनुसंधान नाम दिया। जो अभी तक जितने भी अनुसंधान किये या शोध किये उससे ये बात मिला नहीं था। गठन पूर्णता पाठ रूप में एक शैक्षणिक विधि से हमको अभी तक मिला नहीं था, और क्रिया पूर्णता आचरण पूर्णता का ज़िक्र ही नहीं है। इस ढंग से गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता को अनुसंधान रूप में पूरा का पूरा दर्शन प्रस्तुत किया है। ये अनुसंधान की वस्तु है।

जिज्ञासाः यह नयी मौलिक बात आप कह रहे हैं, इस तरह से यह कहने की बात है। इसके बाद है बाबा, आधार–सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति (सहअस्तित्व)

उत्तरः ये जो गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता को बताया, इसको कहाँ तुम पता लगाया पूछा– यह सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व में पता लगाया। वही है सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति। सहअस्तित्व में यह तीनों पूर्णता को हमने पता लगाया। उसको लोक सम्मति के लिए प्रस्तावित भी किया है।

जिज्ञासाः ये जो आप कहते हैं पता लगाया या आपने अध्ययन किया ....

उत्तरः वही अनुभव किया, मैंने जो अनुभव किया उसको हम आदमी के सामने प्रगट किया।

जिज्ञासाः इसको थोड़ा और बताएँ,अनुभव को हम कैसे समझें ?

उत्तरः आपको इसके लिए बोध करना होगा। बोध तक अध्ययन करना होगा बोध के बाद प्रमाणित करने की संकल्प होता ही है, वो अनुभव मूलक विधि से ही आता है। हर व्यक्ति में यह क्रिया रखा हुआ है, अनुभव क्रिया केवल मेरे में ही रखा है ऐसा कोई speciality नहीं है, हर व्यक्ति में अनुभव ये क्रिया की सम्भावना बनी हुई है। उसको प्रयोग करने की बात है। अनुभव करने की योग्यता को हम दांव में लगाने की बात, उसकी विधि को बताया। अध्ययन पूरा होना पड़ेगा, जिससे सत्य बोध होना पड़ेगा, सत्य बोध होने के बाद प्रमाणित करने की संकल्प होते ही है, संकल्पित करने के क्रम में अनुभव होकर ही सभी प्रमाणित होती है। ऐसा मैं लिखा। तो हमको जो अनुभव हुआ, वो सबको अनुभव होगा। उस आधार पर हम प्रस्तुत किये हैं। यदि हमको अनुभव होगा आपको नहीं होगा तो प्रस्तुत करने की क्या आवश्यकता है, पहले से ही हमारे बज़ुर्ग लोग कहे हैं।

जिज्ञासाः जिस प्रकार से आप कहते हैं अंश व्यवस्था में प्रवृत्त होते हैं और परमाणु है, इस तरह से सभी को देखने की...

उत्तरः अभी विज्ञान जहाँ तक पहुँचा है, ये भी हमको पता लगा बाद में, विज्ञान कुछ गतिविधि तैयार किया है, उसमें कुछ परमाणु के बारे में भी सोचा, सोचने पर उसमें उसकी गतिविधियों को हम अध्ययन करने पर ये सब पता चला। विज्ञान पढ़ा हुआ व्यक्ति इस विधि को स्वीकारता है। इसमें कोई तकलीफ नहीं। क्या इसमें विशेषता आ गयी? विज्ञान में गठन पूर्णता का ज़िक्र नहीं है, क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता तो है ही नहीं। गठन पूर्णता की ही ज़िक्र नहीं है। गठन का जिक्र है, इस बात की बात है, तो उसमे गठन पूर्णता की बात आने से, ये गठन के जो ज्ञान विज्ञानियों को विज्ञान शिक्षा में आता है, उनके लिए एक बहुत अच्छी वरदान जैसा लगता है। अब आप तो उससे गुजरे ही हो।

जिज्ञासाः इसके बाद है बाबा प्रतिपादन– भौतिक, रासायनिक प्रकृति ही विकास क्रम में है , जीवन विकसित रूप में चैतन्य इकाई है।

उत्तरः विकास और विकास क्रम को कहाँ रेखाकरण किया– भौतिक, रासायनिक रूप में जितने भी कार्य कलाप हैं वह विकास क्रम में हैं, और जीवन विकास पद में प्रतिष्ठित है। वो जीव प्रकृति में, जीवनी क्रम, में जीने की आशा सहित, जीने के रूप में देखा गया। मानव कल्पनाशीलता कर्मस्वतंत्रता सहित जब जीने की आशा शुरू किया, जीवों से अच्छा जीने के लिए प्रयत्न शुरू किया। वो सब तो कर ही चुका है, तो दो सौ पचहत्तर मंज़िल की मकान बना डाला। और उसको ध्वस्त करने की व्यवस्था भी पा लिया, अब क्या चाहते हो बताओ? सब कुछ तो हम कर लिए हैं।

जिज्ञासाः चैतन्य इकाई अर्थात जीवन ही जागृति पूर्वक मानव परंपरा में अखंड सामाजिकता सहज प्रमाण।

उत्तरः जागृत जीवन ही किस बात का प्रमाण? जाग्रत जीवन अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण होगा, प्रमाण है। क्योंकि मै हूँ इसी कारण से ' है' लिखा है।

जिज्ञासाः सतर्कता पूर्ण मानवीयता एवं सामाजिकता, प्रतिपादन है बाबा।

उत्तरः प्रतिपादन में जब कभी भी क्रियापूर्णता होता है, सर्वतोमुखी समाधान संपन्न होता है, समाधान आने के बाद समस्याओं का दृष्टा बना रहता है। समस्याओं को अलग से अध्ययन करना नहीं बनता है। जैसे गणित को हम सही करना सीखते हैं , गलत करने के लिए अलग से अध्ययन करना नहीं होता है। गलती को समझने के लिए, उसको ठीक करने के लिए हमको अलग से अध्ययन करना नहीं होता है, सही किए हुए के आधार पर हम सारी गलतियों को सुधार लेते हैं, इसी का नाम है सतर्कता। सभी बातों को सुधार लेने की क्रिया अपने में आ जाती है, ये लिखा है। जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन हुआ, तो हमको सारे गलतियों को सुधारने की जगह बन जाती है। इसलिए हम ने लिखा है "व्यवस्था पूर्वक मानवीयता एवं सामाजिकता।" मानवीयता को हम स्वयं प्रमाणित करते हैं फलस्वरूप सामाजिकता स्वयं प्रकट होने लगती है।

जिज्ञासा: अगली बात है, सतर्कता पूर्ण सजगता सहित देव मानवीयता।

उत्तर: सतर्कतापूर्ण– सतर्कता पूरा हो गया तो गलतियाँ कुछ रह ही नहीं गयीं, तब सजगता की जगह में आ गये। सजगता के साथ सतर्कता देवमानव चेतना को प्रमाणित करना शुरू किया। देव मानव में क्या होता है बोले? पुत्रेष्णा वित्तेषणा गौण हो गई केवल लोकेषणा रह गई। दिव्य मानव चेतना में क्या होता है? लोकेषणा भी नहीं रह जाती है। इसलिए दिव्य मानव चेतना नाम दिया। इतनी ही तो बात है।

जिज्ञासा: अगली लाइन में वही लिखा है बाबा– सजगतापूर्ण सहजता सहित दिव्य मानवीयता। तो यहाँ पर सजगता पूर्ण हो गई?

उत्तर: सहजता क्या है? सहअस्तित्व सहज है, सहअस्तित्वपूर्ण माने इसके पहले लोकेषणा में थोड़ा सा शेष, मानव चेतना में और थोड़ा सा ज्यादा शेष और जीव चेतना में निःशेष माने कोई बात सही की रही ही नहीं। यानी कि ऐसा हम रहे वहाँ से थोड़ा अच्छे ढंग से जीने लग गये और थोड़ा सा हम समस्याओं को देखते रहे, समस्याओं को समाधान करते रहे मानव चेतना में, देव चेतना आ गया समस्याओं को समाधान करने की ज़रूरत नहीं सब समाधान युक्त हो गये, अब केवल हम उपकार करने लगे। उसमे क्या था? तीनों एषणा सहित उपकार। इसमें क्या हो गया? केवल उपकार सहित उपकार और उसके बाद जो है लोकेषणा मुक्त विधि से उपकार, पहचान के बिना ही उपकार करते हैं, ये बात आ गई। इस ढंग से मनुष्य की श्रेष्ठ चेतना का प्रमाण बनाता है। ये इशारा किया है।

जिज्ञासा: मानव चेतना में आपने कहा कि समस्याओं का समाधान करते रहे, इसका क्या मतलब हुआ बाबा?

उत्तर: हमारे पास समाधान हो गई, समस्या को समाधानित करने के लिए हमारे पास अधिकार रहता ही है। जैसा अभी किया हुआ जो गलतियाँ (धरती के साथ)हैं उसके लिए हम क्या समाधान प्रस्तुत कर सकते है यह निकलने लगता है। जैसेः वनस्पति संसार में हम क्या मदद कर सकते है, उपकार कर सकते हैं, जीव जाति के लिए क्या उपकार कर सकते हैं, मानव जाति के लिए क्या उपकार कर सकते हैं, ये आता है। काहे के लिए? उसमें समृद्धि हो, समस्या से मुक्ति हो, यह सब रहता ही है। उस ढंग से आ कर के मानव, परंपरा को अत्यंत उपकारी प्रवृत्ति में डाल देता है। उपकारी प्रवृत्ति में डालने से उपकार जब आगे बढ़ता है तो उसमे पुत्रैषणा वित्तेषणा का बहुत प्रधान रूप रहता है, समान रूप रहता है ,मानव चेतना में। देव चेतना में केवल लोकेषणा प्रधान हो जाता है। ये दोनों छोटा पड़ जाते हैं, उसके बाद आगे उपकार करने की विधियाँ ज्यादा बढ़ता है और केवल उपकार रह जाता है दिव्य चेतना में।

4

भाग – 4

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-4 Ank-2*

जिज्ञासाः बाबाजी, जो आगे है, सत्यता, सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही सृष्टि, प्रकृति ही नियति, नियति ही व्यवस्था, व्यवस्था ही विकास एवं जागृति।

उत्तरः सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही सम्पूर्ण सृष्टि, वो सृष्टि ही रहेगी, लय होता ही नहीं। अभी तक अपने सिर में यह भूत चढ़ा है, सृष्टि, स्थिति, लय होता है। अपने दिमाग में क्या चढ़ा है? सृष्टि होता है, लय होता है, स्थिति होती है। ऐसा अपने दिमाग में भरा हुआ है। उसमे परिणतियाँ होती है, लय होती नहीं। ठीक है? यह बात को अपने को पकड़ना है। जब लय होता ही नहीं है, उसको, (यथास्थिति को) बनाये रखने के लिए क्या विधि है, ये बात को सोचना बनता है। यदि लय होता है, जल्दी सृष्टि को लय होने में ही अपन मदद करते हैं। लय को अपन क्या माने हैं? परिणतियों को अपन मानते हैं लय। जैसा शरीर, गर्भाशय में रचित हुई और उसके बाद बड़े हुए, शरीर विलय हो गयी उसको अपन मृत्यु कहते हैं, विलय कहते हैं, लय कहते हैं। इस ढंग से अपन माना है। जबकि शरीर की सभी वस्तुएं धरती में ही रहते हैं, धरती के वातावरण में ही रहता है, कोई चीज़ भाग ही नहीं सकता,मतलब परिणति हो गए। और रासायनिक भौतिक वस्तुएं, ज़्यादा से ज़्यादा रासायनिक वस्तुएं, रचना विरचना में जल्दी होते हैं। रासायनिक भौतिक वस्तुओं के साथ ही शरीर रचना बना रहता है, और रासायनिक भौतिक वस्तुओं में परिणतियाँ निरंतर हैं, उसको अपने को ध्यान में रखने की ज़रुरत है। उस ढंग से क्या है, जीवन जो है नित्य है, जीवन नित्य होने के आधार पर हम निरंतर अपने को बनाये रख सकते हैं, क्योंकि आगे शरीर यात्रा में भी हमको यही चाहिए। जो जागृति की रास्ता है वो हमको यही चाहिए, ज्ञान की रास्ता है यही चाहिए, इस ज्ञान संपन्न शिक्षा की रास्ता है वही चाहिए, और निरंतर व्यवस्था में जीना है ये व्यवस्था ही चाहिए, ऐसा ही बात आती है। इस ढंग से हमारे दिमाग में जो पहले से भरी हुई सृष्टि स्थिति लय है उसमें लय का कल्पना छोड़ देना चाहिए, परिणतियों को स्वीकारना चाहिए, परिणतियाँ रासायनिक भौतिक सीमा में होते हैं, इसको भी स्पष्ट कर लेना चाहिए, जीवन में कोई परिणतियाँ नहीं होती हैं, जीवन में यदि होता है, कमी रहती है, वह भ्रम के रूप में रहते हैं, उसको जागृति में परिणत होना है। ये बात बनता है।

इस ढंग से सृष्टि स्थिति लय के बारे में अपन आगे स्पष्ट किये हैं :

इकाई +अनुकूल इकाई =सृष्टि [सृजन] और उसके बाद लिखा है, अनुकूल इकाई सृष्टि हुई, सृष्टि के लिए पोषण इकाई =स्थिति, शोषण इकाई =परिणति [विलय] ये लिखा है। आगे चल करके इसको स्पष्ट किया है दर्शन में।

जिज्ञासाः व्यवस्था ही विकास एवं जागृति।

उत्तरः जागृति का यदि परंपरा कोई चीज है, तो व्यवस्था ही एकमात्र आधार है। व्यवस्था में जीने के आधार पर ही, परंपरा में जो कुछ भी संतान आती है, मानव संतान, उसको जागृति के लिए प्रेरणा देने की व्यवस्था शिक्षा ही है।

जिज्ञासाः विकास एवं जागृति ही सृष्टि है।

उत्तरः विकास एवं जागृति ही सृष्टि और उसकी निरन्तरता है।

जिज्ञासाः बाबा, नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ऐश्वर्य (सहअस्तित्व), ऐश्वर्यानुभूति ही आनन्द, आनन्द ही जीवन, जीवन में नियम है।

उत्तरः बोलिए, इसको कितने अच्छे ढंग से समझ सकते हैं, जीवन ही ज्ञान। सर्वप्रथम क्या है? जीवन में ही ज्ञान होगा ना भाई, ज्ञान होने से क्या होगा लिखा? ज्ञान होने से अपने को ये पता लगता है, 'नियम ही न्याय'। नियम पूर्वक जीने पर हम न्याय पूर्वक जीने की जगह में आ गए, न्याय पूर्वक जीने से समाधान आ गया। समाधान आने से, समाधान क्या चीज है, सुखी होना= समाधान। हम सुखी होना आ गया, तब हम सत्य को पहचानने गए। सत्य क्या चीज है? सहअस्तित्व रूपी सत्य को पहचान लिए, निर्वाह कर लिए। ठीक है ना। सत्य ही क्या है? सहअस्तित्व, इसके बीच में? (ऐश्वर्य) हाँ तो इसके बीच में सहअस्तित्व को ऐश्वर्य कहा। कहा है ना? सहअस्तित्व को वैभव कहा है। ऐश्वर्य का मतलब है, स्थिति, स्थिति के रूप में होना, निरंतर वैभव में रहना, वर्तमान में रहना, इसका नाम है वैभव। ऐसा वैभव सहअस्तित्व ही है। सहअस्तित्व कभी भी मरता ही नहीं है। सहअस्तित्व की मृत्यु होती ही नहीं।

जिज्ञासाः ऐश्वर्यानुभूति ही आनन्द।

उत्तरः ऐसे सहअस्तित्व में अनुभूत, अनुभव होना, जो व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण प्रकृति का होता है, फलस्वरूप ईश्वरानुभूति हम कह रहे हैं। ऐश्वर्य सहित ईश्वर। ऐश्वर्य क्या चीज है? सहअस्तित्व ऐश्वर्य है, व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण प्रकृति नित्य वर्तमान, विकासशील, जागृतिशील, जागृति- यह वैभव है, यही अनुभव का मुद्दा है, ठीक है।

जिज्ञासाः भ्रमित मनुष्य कर्म करते समय स्वतंत्र एवं फल भोगते समय परतंत्र है।

उत्तरः भ्रमित व्यक्ति के बारे में कहा है, पशु मानव, राक्षस मानव के लिए कहा है, कर्म करते समय में स्वतंत्र है, फल भोगते समय में परतंत्र हो जाता है इसीलिए परेशान होता है। ठीक है? जबकि जागृत मानव जो कर्म करते समय में भी स्वतंत्र है, फल भोगते समय में भी स्वतंत्र।

जिज्ञासाः कर्म करते समय में स्वतंत्र एवं फल भोगते समय में परतंत्र है, भ्रमित मनुष्य, इसको थोड़ा सा और समझा दीजिए।

उत्तरः जैसा किसी आदमी ने अपने पास बंदूक रखा है, उसमें स्वतंत्र है ना, वो ही बंदूक से उनको कोई गोली दाग दिया, तब क्या हुआ? उसका फल में स्वतंत्र नहीं रहा ना? बंदूक को एक कार्य रूप में हम लाए, तो जब उसी की

बंदूक से उनका मृत्यु हो जाता है, परतंत्र हो गया ना। नहीं हुआ? सही बात है ये? अच्छा, अभी विज्ञान जो है, ना इतना बड़ा विज्ञान community, fission fusion को प्राप्त कर लिया, उसको प्रयोग करेगा तो कोई आदमी ही नहीं रहेगा, धरती में। ये परतंत्र हो गया ना? [अपने किये हुए से ही परतंत्र हो गया], अभी इसी प्रकार से जितने भी नियति विरोधी, मानव विरोधी जितने भी फल परिणाम निकलते हैं उसको भोगने में परतंत्र हो जाता है, विवश हो जाता है।

जिज्ञासाः मानव शरण– अखण्ड सामाजिकता।

उत्तरः अखण्ड सामाजिकता ही एकमात्र शरण है। पहले हम क्या मानते रहे, ईश्वर ही शरण है। अभी क्या मानते हैं– सुविधा संग्रह ही शरण है। आज के मानव सुविधा संग्रह को शरण मानते हैं। इसके पहले हम ईश्वर को शरण मानते रहे।अब हम क्या कह रहे हैं, अखण्ड समाज ही मानव का शरण है। अखण्ड समाज में न्याय पूर्वक जीना बनता है, नियम पूर्वक जीना बनता है, समाधान पूर्वक जीना बनता है, समृद्धि पूर्वक जीना बनता है, सवर्ग तुल्य विधि से जीना बनता है। इसीलिए अखण्ड समाज ही हमारा शरण है। ये लिखा है, कितना बढ़िया है ! इसमें शायद ही किसी को तकलीफ हो, तो शुरुआत हो जाए, स्पष्ट हो जाए।

जिज्ञासाः मानवीय व्यवस्था– मानवीयता।

उत्तरः मानवीय व्यवस्था में क्या चीज है, कुछ भी नहीं है, केवल मानवीयता है, मानवीयता निरंतर प्रगट रहना है। क्या चीज है वो? त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी। मानवत्व सहित व्यवस्था में जीना और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना। ये दोनों चीज प्रगट हो जाती है, प्रमाणित हो जाता है, निरंतर मानवत्व है। मानवीयता ही एकमात्र शरण है।

जिज्ञासाः व्यक्ति में पूर्णता– क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता।

उत्तरः जीवन में क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता। मानवीयता में क्या चीज रहती है– क्रिया पूर्णता रहता ही है। माने समाधान पूर्वक जीना बनता ही है, न्याय पूर्वक जीना बनता ही है, नियंत्रण पूर्वक जीना बनता ही है, नियम पूर्वक जीना बनता ही है। समाधान पूर्वक जीने से इतना सब आ गए। अब क्या बचा है भाई? अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में जीना। सार्वभौम व्यवस्था के रूप में जीने के लिए सत्य import होता है, सत्य आती है। सत्य क्या चीज है, सहअस्तित्व परम सत्य। सहअस्तित्व सूत्र व्याख्या रूप में ही हम सार्वभौम व्यवस्था में जी पाते हैं। अखण्ड समाज रूप में ही हम मानवीयता पूर्ण विधि से जी पाते हैं। माने अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या में ही मानवीयता पूर्ण विधि से जी पाते हैं, अखण्ड समाज रूप में ही जी पाते हैं। अखण्ड समाज ना हो मानवीयता पूर्ण जीवन होते ही नहीं, सूत्र व्याख्या ना हो, (अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या ना हो) ऐसे ढंग से हम समाधान पूर्वक जी ही नहीं सकते। हमारा सम्पूर्ण समाधान अखण्ड समाज सूत्र होगी व्याख्या होगी।

क्या बात, कैसा पकड़ा है? इसको थोड़ा सा अच्छा पकड़ो, ये बहुत काम की है, ये बहुत ज्यादा काम की है।

जिज्ञासाः बाबा आप कह रहे हैं अखंड समाज जब तक नहीं होगा ऐसा कह रहे हैं ?क्या कह रहे हैं?

उत्तरः वही, अभी देखो ना अपन सुनने में, सुनाने में कितना दूरी हो गई। मैं बता रहा हूँ आप हम समाधान पूर्वक जीने से वो अखण्ड समाज का सूत्र होगी व्याख्या होती रहेगी, इसीलिए multiply होगी, ये मैं कह रहा हूँ। (परंपरा होगी) ठीक है ना? अभी देखिए, तुम्हारा बोलने में क्या आ गयी, जब तक अखण्ड समाज नहीं होगा तब तक समाधान ही नहीं होगा। ऐसा आप कह रहे हो। ऐसा नहीं है। हम जहाँ समाधानित हुए, तो हम अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या में ही जीते हैं। इसीलिए वो multiply होता है। यही मानवीयता है।मानवीयता पूर्वक जिए बिना ये multiply होने की बात ही नहीं है। इसीलिए पहले कहा है "जीयो और जीने दो " सर्वप्रथम नारा वही है। तो हमारा जीने देने का क्या मतलब है भाई, हम दूसरे को हम समाधान पूर्वक जीने योग्य बनाते हैं तब जीने दिया। ये किये बिना हम जी ही नहीं सकते। हम प्रमाणित होने का विधि ही यही है, दूसरे को जीने दिया हम जागृत हुए, इसका प्रमाण हुआ।

जिज्ञासाः इसका अर्थ ये हुआ बाबा एक व्यक्ति भी समाधानित होता है, तो अखण्ड समाज के लिए वो स्रोत बनता है।

उत्तरः स्रोत बनता है वो, इतना ही बात है। वो ही आगे चल करके लिखा ही है।

जिज्ञासाः अगला है बाबा, समाज में पूर्णता- सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व।

उत्तरः यदि कोई चीज समाज में पूर्णता होती है, मानव परंपरा में अखण्ड समाज। सर्वमानव में जो यदि कोई चीज प्रमाणित होती है, वो ही चार चीज- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व। अब उसको हम शुरू किये, इसी से जीवन मूल्य तृप्त होती है। समाधान से सुख; समाधान, समृद्धि से सुख, शांति; समाधान समृद्धि, अभय से सुख, शांति, संतोष; और समाधान, समृद्धि, अभय और सहअस्तित्व प्रमाण से सुख, शांति, संतोष, आनंद ये प्रमाणित होना शुरू करते हैं। मानव लक्ष्य पूरा होने से जीवन मूल्य प्रगट होता है। यह सिद्धांत है।मानव लक्ष्य को पूरा ना करें और हम जीवन मूल्य को प्रमाणित कर लें, ये होने वाला नहीं। पहले क्या किया जीवन तृप्ति के लिए, या जीवन मुक्ति के लिए, जीवन तृप्ति का तो नाम नहीं दिया है, और एक इसमें लिखा है, " तृपतो भवति, कृत कृत्यो भवति सानंदों भवति "ये नारद भक्ति सूत्र में लिखा है। तो वो कब, सारूप्य हो गया, माने ईष्ट देवता के रूप में विलय हो गए। ऐसा लिखते हैं। इसको क्या प्रमाणित किया जा सकता है? भक्ति का अंतिम चोट में यह लिखा है। ईष्ट देवता के रूप मे स्वयं परिणित हो जाना। और उसके पहले क्या कहा था, ब्रह्म मे विलय होना। ये दोनों करीब-करीब एक ही है। ठीक है? ऐसा बात कहते हैं। इसको प्रमाणित करने का तो कोई chance ही नहीं। और ईष्ट देवता, जिनके लिए हो गया ईष्ट देवता उनके लिए प्रमाण हो गया वो तो परंपरा में आता नहीं, कैसा किया जाए। इसके लिए कहा क्या है, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने से जीवन मूल्य प्रमाणित हो जाता है। और उसको उलटा भी कहा है आगे, कि जीवन मूल्य यदि प्रमाणित होता है तो मानव लक्ष्य पूरा होना स्वाभाविक है- ये लिखा है। जीवन मूल्य यदि प्रमाणित होती है, यदि दूसरा कोई विधि से, मानव लक्ष्य प्रमाणित होना आवश्यक है, ये स्वाभाविक है। मानव

लक्ष्य पूरा नहीं हुआ है, जीवन मूल्य पूरा हो गया ऐसा कहते हैं, इसमें तमाम प्रकार के रहस्य में चले गए वो। रहस्य मुक्ति के लिए आवश्यक है check and balance program।

जिज्ञासाः अगला है बाबा, राष्ट्र में पूर्णता- कुशलता, निपुणता, पाण्डित्य।

उत्तरः जैसा एक परिवार राज्य है, परिवार राज्यसभा, परिवार समूह राज्यसभा, एक ग्राम राज्यसभा अपन लिखे हैं, इसमें यदि पूर्णता को हम अनुभव करते हैं वो निपुणता कुशलता पांडित्य से है। पांडित्य क्या है? माने अखंड समाज सार्वभौमता को प्रमाणित करता है। निपुणता कुशलताएं समृद्धि के लिए कार्य करता है। श्रम से समृद्धि, समझदारी से समाधान। बोलिए साब, ये पूरा पड़ता है कि नहीं?

जिज्ञासाः अंतरराष्ट्र में पूर्णता (अखंड राष्ट्र)।

उत्तरः अखंड राष्ट्र-अखंड राष्ट्र का क्या मतलब है? धरती अखंड है ही, हमको बनाना नहीं है। "है" को पहचानना है। अभी धरती पर जो है ना 275 रेखा लगा करके उसमें fission fusion को बिछा लिया। बोलिए साहब। आदमी है कि हैवान है आप ही सोचो ना भाई। आप ही बताओ। बिछा लिया, अब ये सोच रहे हैं की बत्ती लगा दिया तो हम भी मरेंगे। 21 बार सूरज बनेगा धरती, ऐसा बता चुके हैं। यदि बत्ती लगाया, ये धरती सूरज हो गई, बत्ती नहीं लगाया तो रहा कैसा जाए? कहीं उग्रवादियों का हाथ में चले ना जाए, खाड़ी देश में चले ना जाए, उसके पास ना चला जाए, इसके पास में चले ना जाए, भारत सोचता है पाकिस्तान के पास चले ना जाए, पाकिस्तान सोचता है भारत के पास चले ना जाए। इस प्रकार की पिचकाहट में सब फंसे हैं। एक से एक अच्छा फंसे हैं। एक भी कम नहीं फंसे हैं। भक्कम फंसे हैं। ना आगे जा पाएं, ना पीछे हट पाएं, ऐसा फंसे हैं। ऐसी स्थिति में अपन एक प्रस्ताव दे रहे हैं, इसके अनुसार यदि सोचेंगे अखंड राष्ट्र की विधि से, तो जितने भी हम अज्ञानी, माने एक उग्रवादी, ये बहुत कटुवादी, झूठखोर, दंगा खोर, और सेंधखोर, सभी लूटखोर सबको अपन एक ही अवाहित कर सकते हैं-भाई समझदारी पूर्वक जीने से हम सब साथ में जी सकते हैं। अभी क्या सोचते हैं हमारा संविधान के अनुसार जिया करो। संविधान के रस्ता में आओ। सभी तो आवाहित करते हैं। संविधान स्वयं में क्या चीज है? परम झूठ लिखा है। क्या लिखा है, सब आदमी पाप कर सकता है, माने हर आदमी गलती कर सकता है ऐसा लिखा है, और अपराध कर सकता है लिखा है। गलती करने से क्या करना है? गलती करने वाले के साथ गलती करो, गलती को रोकने के लिए गलती करो, अपराध को रोकने के लिए अपराध करो, युद्ध को रोकने के लिए युद्ध करो। तीन धंधा है। हर संविधान में इतना ही है। एक संविधान नहीं, धरती में जितने भी कोदो दर रहे हैं सबका इतना ही हसरत है।

जिज्ञासाः मानवीय संस्कृति-सभ्यता- विधि-व्यवस्था में एकात्मता।

उत्तरः ठीक है ना, विधि व्यवस्था में एकात्मता, माने एकात्मकता का मतलब है- जो संस्कृति को सभ्यता पोषण करता है, ये क्या हुआ एकात्मता हुई। सभ्यता को विधि पोषण करता है, ये एकात्मता हुई। और विधि को व्यवस्था पोषण करता है ये एकात्मता हुई। व्यवस्था को संस्कृति पोषण करता है, एकात्मता हुई। इस ढंग से ये round the

wicket हो गया। क्या हो गया, कैसे गोल बन गया? है ना। ये देख लो कितना सही ढंग से वो एक दूसरे के लिए पूरक होने वाली बात स्पष्ट हुआ है, आप ही देख लो। ठीक है। इस आधार हम यदि सुखी होने का दिन को कल्पना कर सकते हैं, प्रयत्न कर सकते हैं, समझ सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं। क्या हुआ? शुरुआत एक कल्पना से ही शुरू होगा ना, मनुष्य के पास कल्पना करने के तो औजार बना ही है, कोई आप तो fix करना नहीं है, factory में तैयार करना नहीं है। सभी में वो निहित है, जीवित है। उनमें एक कल्पना करने के लिए एक तो औजार हो गये, वो material हो गये। उसके बाद प्रयत्न कर सकता है, प्रयत्न करने के बाद समझ सकता है, समझने के बाद प्रमाणित कर सकता है, ऐसा लिखे हैं। ठीक किया है ये?

जिज्ञासाः आगे बाबा, धर्म नीति का आधार।

उत्तरः धर्म नीति का आधार, इसको थोड़ा सा अच्छी तरह से सुनिएगा, हाँ आगे, धर्म नीति का आधार।

जिज्ञासाः तन, मन तथा धन रूपी अर्थ के सदुपयोग हेतु व्यवस्था।

उत्तरः सदुपयोग कैसा मान जाए, उपयोग किसको माना जाए, प्रयोजनशील किसको माना जाए इसके बारे में आगे स्पष्ट किया है। परिवार में अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करता है, समाज में अखंड समाज में सदुपयोग करता है और सार्वभौम व्यवस्था में वो प्रयोजनशील होता है (तन, मन, धन)। परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन के बाद वस्तुओं का सदुपयोग करना स्वाभाविक होता है। ठीक है। संग्रह सुविधा विधि से, उत्पादन से कोई लेन-देन नहीं है, लाभ से मतलब है। लाभ काहे के लिए जरूरत है, सुविधा के लिए। मतलब ये संग्रह हो गया। सुविधा के लिए, संग्रह किया। संग्रह काहे के लिए पूछा, भोग के लिए, अति भोग के लिए बहु भोग के लिए। रास्ता खुला है। उसका प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है- हॉलीवुड, बॉलीवुड, 'गाली वुड', तीन वुड आप जा करके देख लो। ठीक है, इस ढंग से मनुष्य जो है ना डूब चुका है बाबा। और उससे उद्धार होने के लिए प्रस्ताव है।

जिज्ञासाः आगे, राज्यनीति का आधार।

उत्तरः इसको सुना, धर्म नीति का आधार- तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग। सदुपयोग कैसा होता है? तो परिवार में उपयोग, अखंड समाज में सदुपयोग और सार्वभौम व्यवस्था में प्रयोजनशील।

जिज्ञासाः राज्यनीति के लिए तन, मन, धन रूपी अर्थ की सुरक्षा हेतु व्यवस्था।

उत्तरः सुरक्षा कैसा होता है, परिवार व्यवस्था एक, परिवार समूह व्यवस्था दो, ग्राम स्वराज व्यवस्था तीन, इसके अंदर चल करके दस सोपानीय व्यवस्था है, व्यवस्था में जीने से हम सुरक्षित रहते हैं। ग्राम परिवार व्यवस्था में जीते तक अपने को काफी ये अनुभव होगा, हमारा तन, मन, धन रूपी अर्थ सुरक्षित है। उसके आगे चलने के बाद कहानी ही क्या है!

जिज्ञासाः अनुगमन और चिंतन– स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से कारण, कारण से महाकारण।

उत्तरः स्थूल क्या चीज है? धरती सबसे बड़ा स्थूल, मनुष्य का शरीर स्थूल शरीर। सूक्ष्म– जीवन सूक्ष्म, परमाणु सूक्ष्म। कारण– मनुष्य की जागृति का कारण 'आत्मा'। आत्मा में अनुभव हुए बिना जागृति होना नहीं है। और भ्रम का कारण शरीर। शरीर को जीवन समझे बिना कोई आदमी भ्रमित होता भी नहीं है। दो ध्रुव रखा हुआ है। इस ढंग से हम भ्रम और जागृति का आधार मिल गए, कारण मिल गए, उसके बाद क्या लिखा? [कारण से महाकारण]। महाकारण क्या चीज है, तो व्यापक वस्तु महाकारण। व्यापक वस्तु में ही सभी कारण छुपा हुआ है, सभी कारण कार्य करता हुआ, देखने को मिलता है, इसलिए उसको महाकारण नाम दिया। ब्रह्म ही महाकारण है। ऐसा अपन प्रतिपादित किए हैं।

जिज्ञासाः आत्मा जो है कारण हुआ, जो जागृति का कारण।

उत्तरः जागृति का कारण, आत्मा है। आत्मा में ही अनुभव होगा। और महाकारण क्या है? सहअस्तित्व, और सहअस्तित्व जो है– ब्रह्म में ही संपूर्ण प्रकृति का होना। इस ढंग से महाकारण को बताया, सहअस्तित्व रूपी क्रियाकलाप को अपन महाकारण रूप में बताए। सत्ता में संप्रकृत प्रकृति।

जिज्ञासाः अनुगमन और चिंतन पूरे से कहना क्या चाह रहे हैं बाबा ये एक बार स्पष्ट करें?

उत्तरः अनुगमन जो है ना, सोच विचार अनुभव की मुद्दे, अनुगमन। चिंतन का मतलब है– प्रमाण करने की मुद्दे। प्रमाण करने की मुद्दा क्या है? जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य को प्रमाणित करना है। वो क्या चीज है? अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था में जीना है, ये हुआ प्रमाण परंपरा। और अनुगमन क्या हुआ? मानव शरीर को अध्ययन करना, सहअस्तित्व को अध्ययन करना, सहअस्तित्व में प्रकृति और व्यापक वस्तु की नित्य सहअस्तित्व को अनुभव करना। ये महाकारण रूप में मिल गए। ये कभी छूटता नहीं है। सत्ता अकेले हो जाए, वस्तुएँ अकेले हो जाए, ऐसा कभी होता ही नहीं, इसलिए सहअस्तित्व नित्य वर्तमान लिखा।

जिज्ञासाः जागृति का प्रमाण– अमानवीयता से मानवीयता, मानवीयता से देव मानवीयता, देव मानवीयता से दिव्य मानवीयता।

उत्तरः ठीक है ना, ये समझ में आता है? जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ है, तो जीव चेतना में मानव चेतना का बीज समायी हुई है। मानव चेतना प्रमाणित होने के बाद देव चेतना, मानव चेतना में बीज रूप में रहता ही है, देव चेतना प्रमाणित होने के बाद दिव्य चेतना, देव चेतना में बीज रूप में रहता ही है। और दिव्य चेतना प्रमाणित होने की व्यवस्था बना हुआ है। हर अवस्था के पीछे की अवस्था में उसका बीज रहता है, ये सिद्धांत है।

पदार्थावस्था में प्राणावस्था का बीज, प्राणावस्था में जीवावस्था का बीज, जीवावस्था में ज्ञानावस्था का बीज रखी हुई है। तभी प्रगट हुआ है। प्राकृतिक evidence है ये। जितने भी गवाही है, प्राकृतिक है ये।

जिज्ञासाः बाबाजी, मानव, देव मानव और दिव्य मानव इनको लक्षणों के आधार पर हम कैसे अलग कर पाएंगे, पहचान पाएंगे ?

उत्तरः ये बहुत अच्छी ढंग से अलग-अलग नहीं है। प्रमाणित होना, समझ में आना, ये कैसा समझ में आता है। अलग करने की कोई चीज नहीं है, 'है' का समझ होना। तो जीव चेतना में हम जीते ही हैं। मानव जाति जीव चेतना में ही जी कर आया है। एक विधि से ईश्वरवादियों ने जीव चेतना को नकारने को कहा, और भौतिकवादियों ने जीव चेतना को पूजा करने के लिए कहा। इतने ही, एक दूसरे को गाली देते हुए आज चले आए हैं। अभी अपन कह रहे हैं, मानव, जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित होने की आवश्यकता है, फलस्वरूप अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था हाथ लगेगी। सार्वभौम व्यवस्था, अखंड समाज हाथ लगता है, अपना-पराया का दूरी, दीवार खत्म। सीमा सुरक्षा की पटरी खत्म, fission, fusion खत्म। क्या सुना ? जितने भी अनिष्टकारी सोच हैं, उसकी खत्मी होना। जीव चेतना से मानव चेतना में यदि संक्रमित होना आ जाता है, जितने भी अनिष्ट सोच है वो खत्म। इसके लिए ये प्रस्ताव रखा है। इसमें अलग ना हो करके परिवर्तन होना हो गया ना, गुणात्मक परिवर्तन होना हो गया ना ? गुणात्मक परिवर्तन हुआ मानव चेतना में। मानव चेतना में, देव चेतना में। मानव चेतना से देव चेतना में परिवर्तित होते हैं, उसमें इसमें क्या अंतर।

अभी इसमें क्या हुआ जितने भी राक्षसीयता, पाशवीयता, पशु जैसा से जीना, भोगवाद में, राक्षस जैसा जीना, भोग सहित दुष्टता में, भोग भी दुष्टता भी। पशु मानव केवल भोगवादी है, और राक्षस मानव भोगवादी भी है दुष्टता भी है। छीना-झपटी, सेंधमारी, जानमारी सब करना, ठीक है ना, ये बात आ गई। ये स्पष्ट होता है कि नहीं होता है ? ये होने के बाद हम मानव चेतना में आते हैं, ये दोनों छूट जाते हैं। छुटते हैं तो क्या मिलता है ? अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था मिलता है। उससे क्या हो जाता है ? सारा सीमा सुरक्षा की झंझट समाप्त, माने युद्ध को युद्ध से रोको वाला खत्म, मानव चेतना में परिवर्तित होते ही, गलती खत्म, और अपराध तो बहुत दूर। गलती ही खत्म, खत्म हो जाना है। उसके बाद क्या हो सकता है पूछा। आगे चलकर के ये जितने भी अपना पराए के बीच में कांटा बोए हैं, वो धीरे-धीरे निकल करके अलग, विलय हो जाना है, खत्म हो जाना है। ये होने के पश्चात देव चेतना में हम पहुंचते हैं, तो निरामय किसी भी, कोई भी प्रकार की कोई बात ही नहीं है, जैसा तुम्हारे पास दो बच्चे हो गए, हमारे पास एक बच्चे हो गए ये भी सब दूरी खत्म। और केवल यश के आधार पर जीना बनता है। अपना पहचान बनाके रखेंगे, ऐसा रहेंगे, उपकार करेंगे। मनुष्य मानव चेतना से उपकार करना शुरू होता है वो पुष्ट होता है देव चेतना में, पूर्ण होता है दिव्य चेतना में। इतनी ही तो बात है। उपकार करना तो मानव चेतना से ही शुरू हो जाता है।

जिज्ञासाः ये अपना पहचान बना के कार्य करने की बात जो आप कह रहे हैं, ये अपना पहचान से क्या आशय है।

उत्तरः आशय ये है, हमारा नाम बना रहे। ठीक है? ऐसा सोचना जो बना रहता है देव चेतना में। मानव चेतना में हमारा पुत्र का भी नाम हो, हमारा धन का भी प्रदर्शन हो, हमारा पहचान भी बना रहे, ये तीनों रहता है। देव चेतना में केवल एक ही बचता है। दिव्य चेतना में वो भी मुक्ति मिल जाती है। इतनी ही तो बात है। छोटा-छोटा परिवर्तन। केवल मानव चेतना में ही परिवर्तित होने में ही जो कुछ भी देर लगना है, देर लगना है, उसके बाद देव चेतना, दिव्य चेतना बहुत समीप है।

जिज्ञासाः आगे है बाबा, मांगल्य- जीवन मंगल, उदय मंगल, समाधान मंगल, जागृति मंगल, अनुभव मंगल इनसे क्या आशय है?

उत्तरः मांगल्य का मतलब है, अपन लिखे हैं "नित्यम यतु शुभोदयम", मंगल कामना में लिखा है। याद आ रहा है? उसके पुष्टि में यह लिखा है, निरंतर शुभ कैसे उदय होता है। माने सर्वप्रथम क्या लिखा है? जीवन मंगल, जीवन जागृति के अनंतर, निरंतर मंगल। जागृति मंगल, उदय मंगल जागृति का उदय होना ये मंगल है। आगे, समाधान मंगल। मंगल हुआ इसका प्रमाण क्या है परंपरा में, निरंतर समाधान। समाधान क्या चीज है, सुखी होने का सूत्र। जागृति मंगल, हम जो जितने भी अनुभव किए हैं, उसको प्रमाणित करना मंगल। अनुभव मंगल, अनुभव मंगल निरंतर अनुभव के आधार पर ही ये चारों बातों को हम पूरा करते हैं। ठीक है। इस ढंग से नित्य मंगल उदय होने का बात बताया। [मंगल की निरंतरता की बात] शुभ की निरंतरता, शुभ निरंतर उदय होते रहे, दिनरात्रि, कोई क्षण छूटे ना।

जिज्ञासाः उपलब्धि- सहअस्तित्व में स्थापित मूल्यों की अनुभूति, दूसरा है समाधान समृद्धि व सर्वशुभ।

उत्तरः स्थापित मूल्यों का मतलब तो आपको विदित है। तो कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, वात्सल्य को निरंतर प्रमाणित करते रहना, क्या चीज है यह? उपलब्धि है। परस्परता में उपलब्धि क्या चीज है, निरंतर स्थापित मूल्य प्रमाणित होते ही रहना ये उपलब्धि है।

जिज्ञासाः दूसरा है समाधान, समृद्धि व सर्वशुभ।

उत्तरः दूसरा विधि से यदि निरंतर हम इस उपलब्धि को मानते हैं, उपलब्धि को प्रमाणित करते हैं, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाण होता ही है। ये उपलब्धि है।

जिज्ञासाः भ्रम मुक्ति और नित्य जागरण।

उत्तरः बोलिए, तीसरा विधि से भ्रम मुक्ति, जागृति और प्रमाण यही होता है। तीन विधि से उपलब्धि को अपन पहचानते हैं। इस विधि से उपलब्धि को पहचाना, उस विधि से हो या इस विधि से हो। ये तीनों विधियों से हम उपलब्धि को पहचान पाते हैं, फलस्वरूप अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र बनता है। इसका व्याख्या करने पर हम अखंड समाज भी पाते हैं, सार्वभौम व्यवस्था भी पाते हैं। ठीक है, और कोई बात?

जिज्ञासा: बाबा अभी आपने पूरा जो कुछ कहा, उसको एक शब्द में आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर: हां एक वाक्य में यदि कहना चाहते हैं, तो ऐसा बनता है– मनुष्य जो है ना जागृत होना है जागृति को प्रमाणित करना है, यही बनता है। जागृति की रास्ता सुलभ है, और भ्रम का रास्ता कठिन है। क्या बात! जागृति के रास्ते में झूठ फ़रेब कुछ भी नहीं है। संकट कुछ भी नहीं है। कुल मिलाकर के भाषा ऐसा दिया जाए, केवल सुख के अलावा दूसरा कुछ होता ही नहीं। कुल मिलाकर के मानव को क्या होना है, समझदार होना है प्रमाणित करना है। जागृत होना है, प्रमाणित करना है। मानवीयता पूर्ण वैभव को प्रमाणित करना है। मानवीयता से परिपूर्ण होना है, प्रमाणित करना है। यही बनता है। कहीं भी कितना भी घूमेंगे उतना ही है। एक वाक्य में इतना ही।

जिज्ञासा: प्रमाणित होने का आशय स्वयं समझ जाना...

उत्तर: जीना, जीना [और दूसरे को समझा सकने में योग्य हो जाना] हाँ, वही तो 'जीने देना जीना'। वही है, जी करके, जीने का प्रमाण में जीने देना। ठीक है। ये हम समझता हूं महाराज जी, निर्विवाद। एक बीज तो है, वृक्ष हो जाए तो बढ़िया है।

5

भाग – 5

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-5*

जिज्ञासाः बाबाजी, आपने लिखा है मैं नित्य, सत्य, शुद्ध एवं बुध परमात्मा रूपी व्यापक सत्ता में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति को अनुभव पूर्वक स्मरण करते हुए मानव व्यवहार दर्शन का विश्लेषण करता हूँ। इसका क्या आशय है?

उत्तरः नित्य, शुद्ध, बुद्ध, परमात्मा का स्मरण करते हुए मानव व्यवहार दर्शन को विश्लेषण कर रहा हूँ।

जिज्ञासाः ये नित्य, शुद्ध, बुद्ध इससे आपका क्या तात्पर्य है।

उत्तरः नीचे लिखा है उसमें पूरा लिखा है। जैसे : नित्य का अर्थ है सदा-सदा जो विद्यमान है। सदा-सदा विद्यमान सत्ता स्वरुप में हो, ज़्यादा या कम न हो, और यहाँ ज़्यादा वहाँ कम वाला बात न हो, सर्वत्र एक सा विद्यमान हो, सर्वत्र एक सा भासमान हो, सर्वत्र एक सा सुखप्रद हो, निरंतर विद्यमान हो, ऐसे परमात्मा को स्मरण करते हुए मानव व्यवहार दर्शन को हम विश्लेषण करूँगा, यह प्रतिज्ञा किया।

जिज्ञासाः आपने लिखा है- मानव ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा में गण्य है।

उत्तरः दूसरा सूत्र लिखा है, मानव ही अस्तित्व में एक ऐसा विशेष वस्तु है अथवा स्वाभाविक वस्तु है कि दृष्टा पद प्रतिष्ठा इन्ही में निहित है। इसके पहले अपने बुज़ुर्गों ने ईश्वर को दृष्टा बताया, कर्ता बताया, भोक्ता बताया। उसके बाद भोक्ता बताने में तकलीफ होने लगी, कुछ-कुछ करते रहे, किन्तु है ऐसा ही बात। तो मैंने पता लगाया, मुझको ये पता लगा कि जीवन ही दृष्टा, कर्ता और भोक्ता पद में होता है। क्या भोक्ता है जीवन- समाधान, समाधान को जीवन भोक्ता है। समस्या का दृष्टा हो जाता है, तब वो जीवन दुखी कहलाया। समस्या को भोक्ता नहीं है समस्या का दृष्टा बना रहता है उससे भ्रमित रहता है। भ्रमित जीवन, जागृत जीवन का पता लगा। जागृत जीवन और भ्रमित जीवन में क्या अंतर् हुआ भाई? अंतर इतना ही है, जीव चेतना विधि से शरीर को जीवन मानते हुए जीना माने भ्रम का अर्थ निकला, तात्पर्य निकला। मानव चेतना सहित देव चेतना पूर्वक जीना बन जाता है तो यह जागृति कहलाया। और जागृत जीवन स्वयं में दृष्टा पद प्रतिष्ठा में होता है ये लिखा है। माने समझदारी के स्थिति मे होता है, दृष्टा पद का मतलब समझा हुआ। जागृत जीवन का मतलब है प्रमाणित किया हुआ।

जिज्ञासाः बोल चाल मे ऐसा कहते हैं जैसी करनी वैसी भरनी।

उत्तरः जैसी करनी वैसी भरनी- ये सब कचरा कारखाने की भाषा है। इससे इसका लेन-देन नहीं है। जैसी करनी वैसी भरनी तो सब कर ही रहे हैं। ये कचरापंथी से लेन देन नहीं है। सीधा-सीधा मानव चेतना जागृति है और जीव चेतना भ्रम है। जीव चेतना में जीते हुए शरीर को जीवन मानते हैं, मानव चेतना मे जीते हुए जीवन को जीवन मानते हैं। जीवन को जीवन के स्वरूप मे पहचानने के बाद जीवन दृष्टा पद मे होता है। उसके पहले कोई ना कोई आरोप प्रत्यारोप मे मरता ही रहता है। दिन में हजार बार मृत्यु को प्राप्त करता ही रहता है। शिकायत खान, जब तक शिकायत खान बना

रहता है तब तक जीवन मरता ही रहता है। शिकायत से जिस दिन मुक्ति मिल गयी, और सदा सदा के लिए समाधान प्रस्तावित हो गया, उस दिन से जीना शुरू हुआ।

अभी क्या समझना है, दृष्टा पद का मतलब– समझदारी सम्पन्न जीवन। और जागृत जीवन का मतलब है– दृष्टा पद के बाद प्रमाणित किया हुआ जीवन, समझा हुआ और प्रमाणित किया हुआ। प्रमाण कहाँ प्रस्तुत करेगा– मानव परंपरा में प्रस्तुत करेगा। मानव परंपरा में कैसे प्रस्तुत करेगा– चारों अवस्थाओं के साथ जीता हुआ प्रमाणित करेगा। चारों अवस्थाओं में संतुलित रूप मे जीना जागृति का मतलब है, संगीतमय विधि से जीना। उसको सूत्र रूप में बताया– नियम, नियंत्रण, संतुलन न्यायपूर्वक जीना, ये जागृति का पहला चरण है उसके साथ समाधान जुड़ा तो हुआ दूसरा चरण, उसके साथ सहअस्तित्व जुड़ गया तीसरा चरण। इतना ही कुल मिला कर के गम्य स्थली है।

जिज्ञासाः व्यापक वस्तु अखंड और इकाइयां अनंत हैं।

उत्तरः व्यापक वस्तु अखंड रूप में अस्तित्व में है, सदा सदा के लिए नित्य, सत्य, शुद्ध, बुद्ध, परमात्मा जिसको नाम दिया। वो, ऐसे परमात्मा के स्वरुप में व्यापक वस्तु है। ऐसे वस्तु को ध्यान में रखते हुए सारे मानव व्यवहार दर्शन को लिखा है। ठीक किया कि गलत किया?

जिज्ञासाः व्यापक सत्ता अथवा परमात्मा जागृत मानव में, जागृत मानव से, जागृत मानव के लिए, कार्य व्यवहार काल में नियम के रूप में, विचार काल में समाधान के रूप में, अनुभव काल में आनंद के रूप में और आचरण काल में न्याय के रूप में प्राप्त है क्योंकि सत्ता में संपूर्ण प्रकृति विद्यमान है– यही सहअस्तित्व है। थोड़ा सा बताइए, बाबा।

उत्तरः व्यवहार काल में नियम के रूप में। नियम क्या है बताया– स्वधन, स्वनारी / स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार मानव का नियम है। माने जागृत मानव नियम पूर्वक जीने का प्रमाण – स्वधान, स्वनारी / स्वपुरुष एवं दयापूर्ण कार्य व्यवहार करते हुए मिलता है। ये जाग्रत मानव में पाए जाने वाले नियम हैं। भ्रमित मानव में पाए जाने वाली जो आचरण है उसको लिखा है– परधन, परनारी / परपुरुष, परपीड़ा के रूप में मिलता है।

विचार में यदि पूरा बात स्वधन, स्वनारी / स्वपुरुष दया पूर्ण कार्य व्यवहार को हम सोचेंगे, समाधान ही मिलता है समस्या मिलता ही नहीं।

वही अनुभव काल में देखेंगे, वो सहअस्तित्व में ही अनुभव होगा। आनंद के स्वरुप में ही, आनंद ही नाम दिया जा सकता है।

उसी विधि को आचरण काल में न्याय के रूप में, जब आचरण करते है उस समय में न्याय के रूप में मिलता है, आसानी से। इस प्रकार से मानव यदि सटीकता से जीता है तो व्यवहार काल में मानव नियम के रूप में ही जियेगा।

जिज्ञासाः इसी में आपने आगे लिखा है सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति विद्यमान है।

उत्तरः ये सब, ऐसा होने, के कारण क्या है ? सत्ता स्वयं ज्ञान स्वरुप है, जड़ प्रकृति में कार्य के रूप में सत्ता दिखाई पड़ती है, मानव में ज्ञान स्वरुप में सत्ता दिखाई पड़ती है। मानव भी ज्ञान में ही डूबा रहता है, तो इस ढंग से यदि हम अनुभव कर पाते हैं ऐसे स्थिति मे, तो हम हर हालत में सत्ता में ही जीता हुआ मिलेगा। सत्ता में जीते हैं माने ज्ञान में ही हम जी रहे हैं। ज्ञान में ही हम डूबे हैं भीगे हैं घिरे हुए हैं। सदा सदा के लिए हम ज्ञान में ही जी रहे हैं, यही जागृति का मतलब है, दृष्टा पद का मतलब है।

जिज्ञासाः मानवतापूर्ण आचरण के बारे में आपने लिखा है- धीरता वीरता उदारता दया कृपा करुणा पूर्ण स्वभाव न्याय धर्म एवं सत्यता पूर्ण दृष्टि एवं वित्तेषणा, पुत्रेष्णा एवं लोकेषणात्मक प्रवृति से युक्त व्यवहार ही मानवीयता पूर्ण व्यवहार है।

उत्तरः ये व्यवहार को बताया। मानवीयता पूर्ण व्यवहार क्या चीज़ है, आचरण क्या चीज़ है लिखा है। आचरण पूर्वक ही व्यवहार करेगा। आचरण में क्या-क्या स्थिति बनी? एक दृष्टि आ गयी, एक स्वाभाव आ गयी, एक प्रवृति आ गयी। दृष्टि में बताया- न्याय धर्म सत्य पूर्ण दृष्टि हो। हर बात को न्याय के साथ, न्याय सूत्र के साथ, धर्म अर्थात समाधान के साथ, सत्य- सहअस्तित्व के साथ जो सूत्र जुड़े हुए हैं, उसके साथ जोड़ करके हम यदि विचार करने योग्य होते हैं तो वह मानवीयता पूर्ण व्यवहार होता है। मानवीयता पूर्ण व्यवहार में दृष्टि, प्रवृति और स्वभाव तीन चीज़ आयी। जब हम ऐसा सोचने लगते हैं ये तीनो चीज़ आते हैं। क्या आते है उसमे न्याय धर्म और सत्य के रूप में दृष्टियां आते हैं उसी को हम तुलन कहते हैं। उसके बाद धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा पूर्ण स्वाभाव होता है। पुत्रेष्णा, वित्तेषणा, लोकेषणा वादी प्रवृत्तियाँ होते हैं, ये लिखा है। इस प्रकार के हम यदि आचरण करते हैं उसको मानवीयता पूर्ण आचरण नाम दिया। उसके बाद दूसरे विधि से बताया मूल्य, चरित्र नैतिकता। संबंधों को पहचानना, मूल्यों का निर्वाह करना, मूल्याङ्कन करना उभय तृप्ति पाना, उसके बाद स्वधन, स्वनारी / स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्यव्यवहार करना, उसके बाद तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा करना। ये तीनों आने से मानवीयता पूर्ण आचरण करना बनता है। ये दोनों विधि से लिखा हुआ है।

जिज्ञासाः सहअस्तित्व में अनुभव ही ज्ञान का उद्घाटन है, सहअस्तित्व में अनुभव में, अनुभव से, अनुभव के लिए अध्ययन है। ज्ञान ही विवेक एवं विज्ञान रूप में प्रमाण है। यही ज्ञानावस्था में मानव सहज मौलिकता है।

उत्तरः मानव सहज मौलिकता क्या चीज है बताया? हमारा पूरा का पूरा सहअस्तित्व में अध्ययन, सहअस्तित्व में अनुभव, सहअस्तित्व में आचरण। तीन बात बताया। आचरण करने से मानवीयता कहलाता है, अनुभव करने से दृष्टा पद कहलाया, प्रमाण कहलाया, अनुभव होने से तो विचार करने से समाधान हो गया। इस ढंग से हम हर अवस्था में हम जागृति को प्रमाणित करने योग्य होते हैं।

जिज्ञासाः कृतज्ञता के बारे में आपने लिखा है `कृतज्ञता पूर्वक उन सुपथ प्रदर्शकों की वंदना करता हूँ जिनसे यथार्थता के स्रोत आज भी जीवित हैं।

उत्तर: जैसे, विगत से आज तक हमको 'यथार्थ है' ये भनक पड़ा ही था। यथार्थ यदि भनक नहीं पड़ा होता तो हम यथार्थ के लिए खोज क्यों करते? यथार्थ कोई चीज़ है जो परंपरा में प्रमाणित नहीं है, इस रिक्तता को देख कर के जब हम घायल हुए, तभी तो हम इसे किये होंगे। तो यथार्थता की भनक आदि काल से ही आयी है। यथार्थ कोई चीज है, वास्तविकता कुछ है, सत्यता कुछ है, इस बात की भनक आदि काल से रही। क्योंकि शब्द तो अनादि काल से है, शब्द के अर्थ को आदमी ढूँढता ही रहा, सोचता ही रहा। हम ही सोच पाए ऐसा कुछ नहीं है। पहले भी कई लोग सोचे ही होंगे। कई तरीक़े से सोचे होंगे। हमारा कुछ ऐसा योग भोग था कि हम किसी विधि से ठीक ढंग से प्रस्तुत कर पाए, अभी लोगों को ऐसा लगता है, ये ठीक है।

जिज्ञासा: यथार्थ से आपका तात्पर्य क्या है?

उत्तर: जैसा जिसका अर्थ हो। अस्तित्व में चार अवस्था है। चारों अवस्था में अपने-अपने निश्चित आचरण को अर्थ बताया है। निश्चित अर्थ- चारों अवस्था में निश्चित आचरण।

पत्थर के आचरण में कोई किसी को शंका नहीं है, लोहे के आचरण में कोई किसी को शंका नहीं है। इतना लोहे का कारखाना बना है किसी कारखाना वाले को अभी तक किसी को लोहे के आचरण में शंका नहीं है। आगे कुछ हो जाये तो सोचेंगे। वनस्पतियों में, आम के आचरण में किसी को शंका नहीं, दूब के आचरण में किसी को शंका नहीं। और जीवों में गाय का आचरण में किसी को शंका नहीं, बाघ का आचरण में किसी को शंका नहीं, कुत्ते के आचरण में किसी को शंका नहीं और बिल्ली के आचरण में किसी को शंका नहीं। आप देख लीजिये, मनुष्य के पास आते हैं कितना विश्वास कर रहे हैं सोच लीजिये। कुल मिलकर इतना ही है। बाकि सब ठीक है, बहुत बढ़िया।

जिज्ञासा: बाबाजी, मनुष्य का खुद पर भी ये विश्वास नहीं बनता कि मैं अगले क्षण क्या करूंगा।

उत्तर: वही तो, वही तो बात कह रहे हैं। दूसरे के बारे बात क्या कहेंगे खुद के बारे में भी ऐसा नहीं हो पाता। ये क्या हो गया? इसमे क्या भांग घुल गया ये पूछा। ये सब तो ठीक है भाई मनुष्य को क्या हो गया रोग? तो नाम दिया `भ्रम`। पहला मुद्दा भ्रम का हुआ- हम शरीर को जीवन मानते हैं। दूसरा- जीव चेतना को स्वीकारना, जीवों के सदृश्य जीना। हम अपने को जीव मान लेना। हमारे जितने भी सद्ग्रन्थ हैं हमको जीव के नाम से ही सम्बोधन किये हैं, सारा विश्व में। उसके बाद आया तीसरा- मानव परंपरा में हर व्यक्ति के पास कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता का होना। ये तीन मुद्दा है। ये कल्पनाशीलता कर्मस्वतंत्रता विधी से हम कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं, माने कल्पना को अपने ढंग से करते ही हैं, इस ढंग से विविधता आ गयी। एक ही व्यक्ति में हज़ार व्यक्तित्व हो गए, उसमें हम परेशान हुए हैं। उसके बाद जैसे ही दूसरी विधि से आगे बढे, दूसरा विधी से आचरण की जगह मे, आचरण में हर व्यक्ति अपने आचरण को जीवो के आचरण से जोड़ लिया। जीवों में भी केवल विषयों से सम्बंधित बात को जोड़ा 'उससे अच्छी हम जी रहा हूँ' ऐसा छाती उभारा, इतना ही तो गति हुआ है अभी तक। [पशु से हम अच्छे हैं] उससे छूट ही नहीं पाए अब तक। उसमें भौतिकवाद बोला जीव चेतना को पूजा करो। भक्ति विरक्तिवाद इसको मृत्यु देने के लिए कहा। जीव चेतना में वही विषय प्रवृति को जीव चेतना माना। और जीव चेतना को पूरा का पूरा बातों में से फ़ैला नहीं पाये,

विषयों को तो माना ये जीवों का विषय। ये वैदिक विचार यहाँ तक पहुँचा। किन्तु उसको त्यागने को बोला, उसको सर्वथा नाश करने के लिए बोला, उसी को विरक्ति माना, उसी को भक्ति माना। तो भक्ति विरक्ति व्यक्ति में कैसा हुआ हो इसको हम कहीं भी पहचान नहीं पाते हैं। किंतु भक्ति विरक्ति का कोई परंपरा हुआ हो शिक्षा के रूप में, व्यवस्था के रूप में, संविधान के रूप में, आचरण के रूप में, इन चारों भाग का एक संगीतमय वस्तु भक्ति विरक्ति से मिला नहीं। भक्ति के नाम से बहुत किया और विरक्ति के नाम से भी बहुत किया किन्तु ये बात मिला नहीं, मानव को मिला नहीं। इस ढंग से हम भक्ति विरक्ति के आधार पर परंपरा बना नहीं पाए, न परिवार बना पाए और न ही समाज बना पाए। इस ढंग से बात बनी।

इसके बाद आया कि कैसा बनेगा परंपरा, बोले जैसा आदमी है वैसे बनेगा। आदमी कैसा है पूछा तो पचहत्तर टुकड़े में जीता है आदमी, यहाँ आ गए हम। अब एक टुकड़ा अच्छा भी हो सकता है बाकी खराब भी हो सकता है। मानव को जो दो गद्दी मिली : धर्म गद्दी और राज गद्दी। राजगद्दी में आदमी को गलती करने वाला और अपराध करने वाला मान लिया, उसके लिए संहिता लिखा है। धर्म गद्दी ने मानव को पापी, अज्ञानी, स्वार्थी माना उसके लिए अपना कार्यक्रम बना कर रखा है। इसको क्या किया जाये? इतनी ही तो गति ही हुआ है अभी तक। इसी को धर्म गद्दी और कुछ आगे extend किया ईश्वर के प्रति आस्था पैदा किया जाये, उपासना के प्रति आस्था पैदा किया जाये, आराधना के प्रति आस्था पैदा किया जाये। ये सब किया। जितना किया जो समुदाय, वो उतना ही वहां युद्ध का झगड़े का जड़ बन गया। अभी जितना भी झगड़े का जड़ है वो धर्म गद्दियाँ ज़्यादा है। राज गद्दियों में भ्रष्टाचार, धर्म गद्दियों में झगड़े का बीज।

जिज्ञासा: बाबाजी, एक और प्रश्न मेरे मन में उठ रहा है, कि जितनी अव्यवस्था फ़ैल रही है आज संसार में, मानव ध्यान भक्ति की तरफ भी जा रहा है, इधर मंदिरों में आस्था की तरफ मानव ज़्यादा झुकता हुआ दिख रहा है, एक तरफ अनैतिकता, अव्यवस्था दिख रही है तो दूसरी तरफ धार्मिकता भी दिख रही है।

उत्तर: ऐसा आपका कहना है, दिख रही है, मगर रहता नहीं है। दिखावा में ऐसा लगता है। जैसा आप और हम गए मंदिर में, हम एक तोला सोना चढ़ा दिया, हम बड़ा आस्थावान हो गया, मंदिर में निष्ठा हो गयी। हमने भी अपने को बड़ा आस्थावान माना और मंदिर वाला भी मान लिया क्योंकि हमने सोना दे दिया। हम पैसे नहीं दिया, हमको मंदिर नहीं मानता है कि हम मंदिर के परस्त हैं। पैसे से हम पहचानने लगे आस्था को, धार्मिकता को। पैसे से धार्मिकता है या नहीं है, वो बात को परिशीलन करने के बाद आयी। अभी इतने लोग बैठे हैं, पैसे से कोई धर्म हो तो बताओ।

जिज्ञासा: यदि ऐसा सूत्र होता तो जिसके पास जितना पैसा वो उसको उड़ेला देता, उतना धार्मिक होता।

उत्तर: उड़ेला भी है, कई लोगों ने आखिरी दाना तक लुटा दिया। कहाँ क्या चीज हो गई? कुछ नहीं हुआ। बल्कि ये निकला कि और कहीं छुपाया होगा, खोजो। यहाँ पहुंचे लोग। ये सब बात को हम इतिहास में सुन चुके हैं, अब इतना ही सोचना है कि पैसे से धर्म होता है कि नहीं होता है। यदि धर्म होता है तो किससे होता है उसको trace करने की बात है। तो पता चला ये पैसे से कुछ नहीं होता है समाधान से धर्म, समाधान से सुख। मानव धर्म– सुख। सुखी होने

के लिए समाधान चाहिए। देखिये अरब रुपए रखे रहें, इससे समाधान नहीं है, सुखी होना नहीं है। एक आदमी के पास एक भी पैसा न हो पर समाधान संपन्न हो वो सुखी होने का दावा कर सकता है। बात ऐसा हुआ। इसके आधार पर हम क्या किए? एक छोटा सा युक्ति निकाल लिए है। समझदारी से समाधान आता है, मानव धर्म सफल होता है। श्रम से समृद्धि होता है। समाधान और समृद्धि पूर्वक मानव परंपरा, सुख, शांति पूर्वक जी पाता है। आदिकाल से अमन चैन का आश्वासन है, राजगद्दी सुख, शांति का आश्वासन दिया है। राजगद्दी जिस दिन से शुरू हुआ, उस तारीख से वो आज तक प्रमाणित नहीं हुआ। क्यों नहीं हुआ? न राजा के पास कोई समाधान, न राजा के गुरु महाराज के पास कोई समाधान। राजा है तो गुरु महाराज होना ही है क्योंकि राजा को introduce करना के लिए गुरु महाराज ही है। गुरु महाराज ही कहा कि राजा ईश्वर का अवतार है, वसु का स्वरूप है, इनकी आज्ञा पालन करना हमारा कर्त्तव्य है। हो गया, खतम हो गई बात। ये लिखा हुआ है हमारे documents में। अब इसको क्या करोगे बताओ? इस ढंग से न तो हमको ये प्रमाण मिला राजा ने सब बात का समाधान दिया हो ऐसा भी नहीं मिला, न राजा के गुरु महाराज लोग दिए हों ऐसा भी नहीं मिला।

तो पहले प्रायश्चित की बात शुरू किया राजगद्दी में , फिर वो दंड के रूप में परिवर्तित हुआ, वही यंत्रणा के रूप में परिवर्तित हुआ। इस ढंग से राजगद्दी परंपरा चली। और धर्म गद्दी परंपरा उस ढंग से चली कि पापी को तारना है, अज्ञानी को ज्ञानी बनाना है। स्वार्थी को परमार्थी बनाना है। परमार्थी बनाना है किसको? जिसके पास दो चार पैसा हो। वो परमार्थी होगा। तो क्या होगा, गुरु महाराज को देगा। उसका मकसद ही इतना है। अब गुरु महाराज को इस प्रकार से दिया, गुरु महाराज के पास पूरा पैसा हो गया। वो पैसे को यदि स्वार्थ माना जाये तो गुरु महाराज से अधिक स्वार्थी कौन हुआ। इस ढंग से यदि हम परमुखापेक्ष से किसी को जोड़ते हैं वो धर्म होने वाला नहीं है। यहाँ आ गए हम, यहाँ आने के पश्चात स्वार्थी को परमार्थी बनाना गड़बड़ हो गया। इसके बाद पापी को तारना– उसके लिए पहले दक्षिणा लाओ। पहले दक्षिणा दो बाद में हम पवित्र जल डालेंगे। क्या बात ! अच्छा गंगा बह रही है। गंगा जी में जाकर के आदमी स्नान करता है वो गंगा जल नहीं है, वो पंडा जी डालने से ही गंगा जल है। इस विधि को क्या करोगे आप बताओ? इस ढंग से क्या होगा। और अज्ञानी को ज्ञानी बनाना, शंकर जी से पार्वती जी सुने, पार्वती जी से नारद सुने, नारद से वशिष्ट सुने, वशिष्ट जी से अंगिरा सुने, उससे वो ऋषि सुने, वो ऋषि सुने, हम आपको बता रहे हैं मैं इनसे सुना उनसे सुना, हम आपको बता रहे हैं, हमारा दक्षिणा दो।

अभी क्या है सूचना प्रौद्योगिकी। आपको सूचना दिया ना पैसा दो। ये कह ही रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में यही ना करते हो? वही हम लोग पहले कर चुके हैं, हमने उनका कान में बताया राम। वैसे तो हर दिन हल्ला करते ही रहते हैं राम राम, हम उनका कान में बोल दिया– गुरु मन्त्र दिया न, दक्षिणा दो। कान में बोलने से गुरुमंत्र है, हल्ला करने से गुरुमंत्र नहीं हुआ। इस ढंग से हम उजड़े हैं, अपने आप में अपने गले की फांसी बना के रखे हैं। इस ढंग से बहुत सारे कुछ practice में आये। सारे practice का अंत में यही है– कोई यथार्थ है यह सूचना हमको दिए हैं उसके लिए हम कृतज्ञ हैं। सत्यता है, इस बात की सूचना दिए, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं। ये घोषणा किया है। आज भी जीवित कहिए, सूचना रूप में, हम जीवित हैं इसके लिए हम कृतज्ञ है। ये लिखा, ठीक किया?

जिज्ञासाः आगे लिखा है- कृतज्ञता के बिना गौरवता, गौरवता के बिना सरलता, सरलता के बिना सहजता, सहजता के बिना मानवीयता, मानवीयता के बिना सहअस्तित्व तथा सहअस्तित्व के बिना कृतज्ञता सिद्ध नहीं होती।

उत्तरः यह कितना शुद्ध बात है आप सोच लीजिये। यह पूरा का पूरा जहाँ से शुरू पुनः वहाँ जलेबी आ गई। तो ये जो है शुरुआत कहाँ से किया? कृतज्ञता के बिना गौरवता- कृतज्ञता का मतलब है- जो हमारे उपकार होने के लिए सूचना मिली, सहायता मिली दोनों लिखा है। हमारे उत्थान के लिए, जागृति के लिए कुछ भी सहायता मिली उसकी स्वीकृति = कृतज्ञता। उसका जो परिभाषा बनता है "कृतं येन ज्ञायते इति सा कृतज्ञता"। इस प्रकार से उसका play होती है, शब्द का। उसका अर्थ ये ही है जिस किसी से भी हमको यथार्थता के लिए, वास्तविकता के लिए, सत्यता के लिए सहायता मिली रहती है, , उसको स्वीकार करना कृतज्ञता है, अस्वीकार करना कृतघ्नता है।यदि कृतज्ञता ना हो , कृतघ्नता के साथ हम परंपरा को नहीं बनाएंगे। कभी भी नहीं बनायेंगे। अभी बीच में वो भी हुआ है, अपने इतिहास को यदि ठीक से अध्ययन करेंगे, बहुत सारे जगह हम ठीक हो सकते थे हुए नहीं। हमने छः दर्शनों का अध्ययन किया है। उन दर्शनों के अनुसार कई ऐसी जगह है, मुद्दा है, जो आदमी अपने को पहचानने के योग्य था किन्तु किया नहीं। उसका कारण क्या है- कृतज्ञता व्यक्त नहीं किए। कृतज्ञ नहीं हुए। स्वयं से कुछ निकला नहीं, ख़तम हो गयी बात सारी बात पूरा हो गई। कृतज्ञ होना एक बहुत आवश्यकता था।

अब गौरवता क्या है- हमारे ध्यान में हमसे श्रेष्ठ होना स्वीकार हो गया, इसका नाम है- गौरव। आगे उसका स्पष्टीकरण क्या है- उनके जैसा होने के लिए तृष्णा, होने के लिए प्यास, होने के लिए प्रयास। इतना चीज़ एकत्रित होने से हम किसी का गौरव किया, इसका प्रमाण है। अब उनके जैसे, जिसको हमसे श्रेष्ठ माना उसके जैसा होने के लिए हमारे में प्रयत्न शुरू हो जाता है, हम कहीं न कहीं पहुंचेंगे क्योंकि हमारे पास भी वही कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता है, जो पहले जिनके पास था वही हमारे पास भी है। तो हम कृतज्ञता को व्यक्त किये बिना गौरव आएगा ही नहीं।

जिज्ञासाः सरलता के बिना सहजता लिखा है, सरलता और सहजता में क्या अंतर है?

उत्तरः सरलता में, सहजता में ये चीज़ है, तो एक आदमी के पास सरलता, सहजता। सहजता जो की हमारा स्वत्व हो गया है। सरलता वो चीज़ है हम स्वत्व बनाने जा रहे हैं। हम अपने में स्वत्व के रूप में पा चुके हैं वो सहजता है, स्वत्व बनाये जा रहे हैं वो सरलता है। सहजता में यदि सत्यता आ गयी सहजता हो गयी। सत्यता के बिना कोई सहजता होता नहीं। हम सहजता से व्यक्त हो रहे हैं मतलब हम सत्यता से संपन्न हैं। सहजता के बिना मानवीयता व्यक्त होना ही नहीं। हम अपने में यदि स्वत्व संपन्न नहीं होंगे तो मानवीयता नहीं होगी, स्वत्व क्या है- ज्ञान। ज्ञानावस्था में ज्ञान ही सहजता है। ज्ञान होने के बाद ही मानवीयता होती है। ज्ञान के पहले मानवीयता होती नहीं। ज्ञान के बारे में अभी तक यही माना गया, बीसवीं शताब्दी तक यही माना गया पाँच ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान होना ज्ञान है, जो जीवों में भी है।

जिज्ञासाः ज्ञानेन्द्रियों का तो निग्रह करने वाली बात भी कई जगह में है।

उत्तरः वो तो विरक्तिवाद बोला, भौतिकवाद कहा इसी की पूजा करो। अब क्या करें, कौन Decide करेगा। एक और बोले इसको दूध पिलाओ, मकर ध्वज खिलाओ, पूजा करो, पाठ करो ये बताया, और दूसरी जगह बोले इसको Cyanide दो, ज़हर दो, सर्प विष दो और इसको मार डालो। एक तरफ तो तंदुरुस्त बनाने के लिए कहा, एक तरफ मारने के लिए कहा, दोनों अतिवाद हुआ ऐसा मेरा स्वीकृति है। इसके बारे में आप-हम बात कर सकते हैं। मेरे अनुसार ये दोनों अतिवाद हो गया इसीलिए परंपरा नहीं बन पाई।

6

भाग – 6

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-6*

जिज्ञासाः गुरु मूल्यन की ओर गति को आपने उत्थान कहा है?

उत्तरः गुणात्मक परिवर्तन में उत्थान–पतन की बात आती है, मात्रात्मक परिवर्तन में उन्नति–अवनति की बात आती है।

जिज्ञासाः बाबा प्रश्न ये है कि पुस्तक में उन्नति की परिभाषा में लिखा है कि गुरु मूल्यन की ओर अथवा समाधान की ओर प्रगति ही उन्नति है।

उत्तरः ठीक है न, माने सभी बात समाधान के साथ तो जुड़ना ही है। समाधान समृद्धि, दो बात किया, समृद्धि को सदुपयोग करने पर समृद्धि का मतलब निकलती है, अपव्यय करने पर समृद्धि होती ही नहीं। तो समृद्धि से संबंधित बात कहा है उन्नति के बारे में।

जिज्ञासाः सम्पूर्ण पदार्थ अपनी परमाण्विक स्थिति में सचेष्ट है। इसलिए यह स्पष्ट होता है कि उन्हें ऊर्जा प्राप्त है यह निरपेक्ष ऊर्जा है। तर्क रूप में यदि कोई पूछे, कि यह जो ऊर्जा है यह उस इकाई का ही कोई गुण क्यों नहीं है?

उत्तरः उसको पता लगाना पड़ेगा न भाई। इकाई का ऊर्जा दूसरे तक कैसे पहुँचा, इकाई अपने में ज़्यादा ऊर्जा को कैसे दिया? ये सब बात आपको बताना पड़ेगा। स्वयं में क्रियाशील भी हो दूसरों को क्रियाशील करा सके, वैसा बात आ जाये। उसके बारे में सोचा जा सकता है। अभी ऐसा कुछ नहीं दिख रहा है। हम जितने भी ऊर्जा प्राप्त करते हैं, उससे ज़्यादा वस्तु को हम बर्बाद करने के बाद ही थोड़ा ऊर्जा प्राप्त करते हैं, सापेक्ष ऊर्जा को। हम जितना गर्म करते हैं पानी को और उस पानी से कोई यंत्र चलाते हैं [वाष्प से], तो जितना हम कोयला जलाते हैं, उस कोयले का जो ऊष्मा है, उसको ऊर्जा में परिवर्तित करने से जितना ऊर्जा मिलना चाहिए उससे कम मिलता है। इसका मतलब ये हुआ कि कोई भी भौतिक वस्तुएं अपने से अधिक ऊर्जान्वित होकर दूसरे को दे नहीं पाते हैं। ये बात समझ में आता है, ये गवाही है। आपके सामने रखा हुआ है, इसमें कोई पर्दा नहीं लगा है।

यदि मान भी लिया तो उससे क्या कल्याण होगा? उससे क्या कल्याण करना चाहते हो? उद्देश्य के बिना कुछ होगा? कुछ भी बोलना बनता है फिर। उद्देश्य के बिना यदि बात करने के लिए इजाजत है, अपन कुछ भी बोल सकते हैं।

जिज्ञासाः उद्देश्य के बिना की बात नहीं है बाबा, एक चीज को हमने निरपेक्ष ऊर्जा कहा है?

उत्तरः ठीक है सापेक्ष कहना है, किस लिए, वो पहले बताओ ना भाई। निरपेक्ष ऊर्जा इसलिए बेटा – perineal स्रोत है। आप क्या कहना चाहते हो?

जिज्ञासाः मेरा ये प्रश्न है कि ये इकाई का ही कोई गुण नहीं हो सकता ऐसा हम सिद्ध कर रहे हैं।

उत्तरः यदि आप ऐसा कहते हो, ये तो गवाही बता दिया। इकाई से जो कुछ भी निष्पन्न होकर के दूसरे को मिलता है वो जितना lose करता है उससे कम ही मिलता है। ये तो बात बता दिया, उसके बाद कैसा इसको जोड़ोगे बताओ ना।

अभी जितनी भी बात कह रहे हैं, मनुष्य में आकर के, वस्तु में हो कर के जितना वो वस्तु है उससे ज़्यादा ताकत है, वो कहाँ से आया उसको बताया।

जिज्ञासाः ये ज़्यादा ताकत किस रूप में कह रहे हैं बाबा आप?

उत्तरः वो कितना भी use करता है, उतना रहता ही है। जैसे- एक परमाणु कितना भी हज़ार वर्ष घूमा उससे जितना fatigue होना था वो न होकर के वो यथावत रहता है। इसलिए बताया perennial स्रोत है। इतनी ही बात है।

ये क्यों बताया? हमने संसार को व्यवस्था के रूप में देखा। व्यवस्था के रूप में इसको व्यक्त करना ज़रूरी माना। भौतिकवादी के अनुसार अव्यवस्था को शुरू किया, तो ये(आदर्शवाद) वाले ने माया को बताया, इन दोनों से तो कोई व्यवस्था बनने वाला नहीं है। हमने व्यवस्था के रूप में अस्तित्व को देखा उसको हमने प्रकट किया है।

जिज्ञासाः बाबा मूल चेष्टा क्या है?

उत्तरः मूल चेष्टा यानि क्रिया शीलता, ऊर्जा सम्पन्नता का फलन में क्रियाशीलता लिखा है, उस पर ध्यान देने की ज़रुरत है। यह मूल चेष्टा है। क्रियाशीलता ही श्रम गति परिणाम के रूप में व्याख्यायित है। श्रम का विश्राम, गति का गंतव्य, परिणाम का अमरत्व, विकास और जागृति का मतलब, अस्तित्व में जो कुछ भी क्रिया है उसका अर्थ है इतना ही है। उसको अध्ययन करना है जीना है। वहाँ पहुंचना है कि नहीं, उसको तय करिये। नहीं पहुंचना है तो अभी जो कर रहे हैं वो ठीक है। जीना है तो इसको अध्ययन करना ही पड़ेगा।

जिज्ञासाः बाबा मूल चेष्टा हर इकाई में होती है या सिर्फ परमाणु में?

उत्तरः हाँ परमाणु में है। परमाणु ही है तीनों क्रियाकलाप के मूल में, लिखा है। जीवन क्रिया के मूल में भी परमाणु है, भौतिक क्रिया के मूल में भी परमाणु है, रासायनिक क्रिया के मूल में भी परमाणु है। तीन ही प्रजाति की क्रिया है अस्तित्व में। चौथे प्रजाति की अस्तित्व में कोई क्रिया नहीं है। भौतिक क्रिया, रासायनिक क्रिया, जीवन क्रिया तीनों के मूल में परमाणु ही है।

जिज्ञासाः बाबा धरती की गति को क्या मूल चेष्टा नहीं कहेंगे क्या, या फिर कहेंगे सभी परमाणुओं की सम्मिलित मूल चेष्टा है?

उत्तरः धरती की मूल चेष्टा कहो तो भी कोई बुरा नहीं है सम्मिलित चेष्टा कहोगे तो भी कोई तकलीफ नहीं है।

जिज्ञासाः प्रश्न था कि केवल परमाणु में है या हर इकाई में है?

उत्तरः परमाणु ही सम्मिलित रूप में काम करता है।

जिज्ञासाः विकिरण, रश्मि और प्रकाश?

उत्तरः विकिरण एक अलग चीज़ है, रश्मि अलग चीज़ है। रश्मि किसी प्रतिबिम्बन का अणुबिंब-प्रत्यानुबिंब है। विकिरण प्रभाव है। प्रभाव क्या है? भौतिक वस्तुएं अपने गुणात्मक परिवर्तन में, मात्रात्मक परिवर्तन में विकिरणीयता की आवश्यकता है, वो प्रभाव डाला ही रहता है जिसका ब्रह्मांडीय किरण नाम है। इसको लगाना नहीं पड़ता लगा ही रहता है। अभी धरती और धरती के वायुमंडल की परस्परता में जो दबाव बना के रखता है, इसमें विकिरणीयता एक बहुत बड़ी भारी प्रशंसनीय काम है। उसके बाद धरती में एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक एक चुम्बकीय धारा रहती है, उसको निरंतर संतुलित बनाए रखने में विकिरणीयता एक अद्भुत काम है। ब्रह्मांडीय किरण, दक्षिणी ध्रुव और उत्तरी ध्रुव के बीच में जो magnetic pole है उसको संतुलित बनाए रखने में ब्रह्मांडीय किरण अद्भुत काम है। तीसरा यौगिक क्रिया के समय में ब्रह्मांडीय किरण अद्भुत काम करता है। इस ढंग से बहुत सारी जगह में ब्रह्मांडीय किरणों का अपना काम है उसका नाम है विकिरण।

किरण, रश्मि, प्रकाश ये क्या है पूछा जाए- हर बिम्ब का प्रतिबिंबित रहता है, पहला सिद्धांत। सभी और प्रतिबिंबित रहता है। अनंत कोणो में प्रतिबिंबित रहता है। हर प्रतिबिम्ब किसी न किसी अपारदर्शी वस्तु के ऊपर रहता है। हर प्रतिबिम्ब किसी अपारदर्शी वस्तु के ऊपर ही रुकता है। इस रुकने के क्रम में क्या होता है-जैसा सूर्य का बिम्ब, सूर्य के बिम्ब का प्रतिबिम्ब हर एक परमाणु के ऊपर रहता है, उसका अनुबिम्ब बहु आयाम में फ़ैल जाती है, प्रत्यानुबिम्ब और आयामों में फ़ैल जाता है। इस प्रकार से सभी और चमक पैदा करता है। सूर्य का चमक सभी परमाणुओं पर इसी विधि से दौड़ता है। सभी परमाणु चमकने लगते हैं उसको आप प्रकाश कहते है। इसके पहले क्या था जो-जो प्रतिबिम्ब आया उसका नाम है किरण। इसके बाद अनुबिंब प्रत्यानुबिम्ब में परिवर्तित हुआ इसका नाम है रश्मि। वो रश्मि के बाद प्रकाश, ऐसा बना हुआ है। तीसरे stage में प्रकाश। अभी यहाँ जो हो रहा है यह भी ऐसा ही है। पहले प्रतिबिम्ब अणुओं के ऊपर, उसके बाद उसका अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से ये सब चमक रहा है। विधि ही ऐसा है। ये जो दिख रहा है इसमें पहले किरण, किरण के बाद रश्मि, रश्मि के बाद प्रकाश। सब जगह में ऐसा दिखता है। इसको अच्छी तरह से समझने की ज़रुरत है।

जिज्ञासाः क्या किरण travel करता है?

उत्तरः प्रतिबिम्ब को किरण कहा, travel क्या करेगा? प्रतिबिम्ब तो रहता ही है। इनमे कोई भी चीज़ न तो lose होता है न gain होता है। हमारा प्रतिबिम्ब आप को देखने को मिलता है इससे हमसे टूट कर कोई चीज़ loss होता हो या कोई gain होता हो, दोनो ही नहीं होता। अभी वो loss and gain के लिए जा कर के सबका गला कट

गये। प्रकाश में गति बता करके सबका गला को काट के रखा है। कोई आदमी ठीक से सोच नहीं पाए वहाँ पहुँचा दिया। एक तो दवाई पिला करके पागल बनाते हैं, और एक पढ़ा करके पागल बनाते है। आदमी को, total ७०० करोड़ आदमी को पढ़ा करके पागल बनाते हैं, ये कहते हैं प्रकाश में गति होती है। प्रकाश प्रतिबिम्ब है भैया, हर वस्तु प्रकाशमान है। इसमे काहे के लिए गति। गति होता है तो लेन देन होता ही है। उसके बाद कहा तरंग होता है, तरंग वस्तु है या अवस्तु है ये आज तक तय नहीं कर पाए। उसके क्या बात है, कितना बात करना शेष है। आज तक तरंग अपने में वस्तु है अवस्तु? अवस्तु है तो क्या? उसका उत्तर है ही नहीं। अवस्तु को पहचाना ही नहीं गया। वस्तु जहाँ है वहाँ space curve होता है लिखा। और लिखा जब पानी में पत्थर डालते है, जहाँ पत्थर है वहाँ पानी नहीं है। पूछा जहाँ मिट्टी है उसको क्या बताते हो, तो चुप हो गए। पत्थर जहाँ है वहाँ पानी नहीं है ये तो पता लगता है, मट्टी जहाँ है वहाँ, पूछा तो चुप हो गए? रुई जहाँ है वहाँ क्या है, वहाँ पानी हट गया? सोचने की मुद्दा है। अब इन सबसे रुई पानी में भीगने से जैसा होता है, मट्टी पानी में भीगने से जैसा होता है उससे ज़्यादा पैनेपन से व्यापक वस्तु में सभी वस्तु भीगे हैं। मट्टी भी भीगा है, पत्थर भी भीगा है, मणि भी भीगा है, धातु भी भीगा है। ऐसा हम प्रस्तुत किये हैं। क्यों किये हैं? क्योंकि हमने देखा है, व्यवस्था में है और व्यवस्था को बताने के लिए इसके अलावा कोई रास्ता नहीं।

जिज्ञासाः भार आकर्षण से, आकर्षण परस्परता से, परस्परता गुरुता –लघूता से, गुरुता और लघूता, रचना एवं सापेक्ष ऊर्जा से आदि आदि

उत्तरः भार आकर्षण से, पहले उसको हजम करो। भार क्या है पूछो। एक वस्तु बड़ा हो एक वस्तु छोटा हो, बड़े वस्तु की अपेक्षा में छोटे वस्तु का भार समझ में आता है। कैसा आता है पूछा, तो तराज़ू में रखने से समझ में आता है। तराज़ू में एक वस्तु रखने से वो झुक जाता है। इसका नाम भार दिया। उसके बराबर कितने के बराबर में होगा? उसको सोचने के लिए पहले गिनते थे- एक चावल का दाना, दो चावल का दाना, दस चावल का दाना, एक गुंजा का दाना, राई का दाना ऐसा सब बताते रहे। उसके बदले में हम १ ग्राम २ ग्राम १ औंस १ तोला आदि गिनना शुरू कर दिए। कई प्रकार से शुरू करके कई प्रकार से अभी कर ही रहे हैं, किन्तु गिन ही लेते है कि इतना भार है। उसको हम स्वीकारते हैं। ये भार कहाँ से आ गयी- बड़ी वस्तु के साथ जो आकर्षण बल लगती है वह भार के रूप में गण्य होता है। चुम्बकीय बल रहता है तो आकर्षण बल रहता ही है। इसमें इनको पढ़ाये हैं रेती में विद्युत् ग्राहिता नहीं है। जिसमे विद्युत् ग्राहिता नहीं है उसमें भार होना नहीं चाहिए, ऐसा होता भी है? चुम्बकीय बल नहीं होगा तो भार कैसे प्रदर्शित करेगा। इसलिए हम कहे की सभी पदार्थ चुम्बकीय बल संपन्न हैं। उसका आधार अणु बंधन भार बंधन के रूप में है, उसके पहले परमाणु अंशों का गठन के रूप में बताया है। ये सब, गठन भी भार के आधार पर ही बनता है। जो परमाणु अंश अणु बंधन में आये तो, अणु, भार बंधन में आ गया। ये भार बंधन में आया, अणुबंधन में आ गया, इन दोनों मिलकर के अणु बंधन भार बंधन के साथ पूरी धरती की रचना हो गई। उसको बर्बाद करने में हम लगे हैं उसको विज्ञान कहा जाता है। कालिदास विद्या हुआ या नहीं हुआ?

जिज्ञासाः आकर्षण परस्परता से।

उत्तरः आकर्षण क्या चीज़ है? ये परस्परता में आता है। कोई दो वस्तु के बिना आकर्षण को पहचाना नहीं जा सकता। परस्परता होना ही है।

जिज्ञासाः परस्परता गुरुता लघुता से।

उत्तरः एक बड़ा एक छोटा होने से या समान होने से परस्परता होती है। ये भी पता लग गये।

जिज्ञासाः लघुत्व और गुरुत्व, रचना एवं सापेक्ष ऊर्जाओं से।

उत्तरः लघुत्व और गुरुत्व, बड़ा छोटा जो है हम सापेक्ष ऊर्जाओं के रूप में पहचानते हैं। सापेक्ष ऊर्जा पूछा क्या चीज है- ध्वनि, चुम्बकीयता, विद्युत और ताप सापेक्ष ऊर्जा है। ताप भी सापेक्ष ऊर्जा है, ध्वनि भी सापेक्ष ऊर्जा है, विद्युत् भी सापेक्ष ऊर्जा है, चुम्बकीयता शाश्वत ऊर्जा है। ऐसा देखा गया है- चुम्बकीयता को भी शाश्वत नहीं मानते हैं। वो किस आधार पर- लोहा को पकड़ने के आधार पर। हम क्या कहते हैं अणु बनता है इसलिए इसमें चुम्बकीयता है ही। ऐसा हम कह रहे हैं। आप ही सोचो।

जिज्ञासाः रचना एवं सापेक्ष ऊर्जा क्रिया से, क्रिया पदार्थ से और पदार्थ का ह्रास एवं विकास सापेक्ष ऊर्जा के सदुपयोग एवं दुरुपयोग से सापेक्षित है।

उत्तरः रचना एवं सापेक्ष ऊर्जा क्रिया से, सापेक्ष ऊर्जा को हम कैसा पहचानते हैं- क्रिया से। सापेक्ष ऊर्जा को सदुपयोग और दुरुपयोग विधि से हम पहचाने हैं। जो जिसको दुरुपयोग करेगा वह उससे वंचित हो जायेगा, यह लिखा है। जैसे nuclear अपनी शक्ति को खो जाता है nuclear के रूप में रहता नहीं है। अपने स्वरुप को त्याग देता है न, यह आप ही कह रहे हो। जैसे- बारूद, बारूद में गंधक और कलमी सोडा होता है। इन दोनों को जलाने से उसमे gas पैदा होता है, पत्थर फूटता है, गोला फूटता है। होने के पश्चात न तो गंधक रह जाता है न कलमी सोडा रह जाता है, दोनों विकृत हो जाते हैं। उसी प्रकार से परमाणु ऊर्जा भी अपनी ऊर्जा को बहिर्गत करने के बाद वो परमाणु ऊर्जा से संपन्न रहना बनता नहीं। इसी को ये ऊर्जा के रूप में परिवर्तित होता है ये हाँक दिया। उसके बाद अभी उसमें confusion हो गया है, येन तीन, IIT के अनुसार। देखें क्या क्या कहते हैं- आज कुछ कहते हैं कल कुछ कहते हैं। जैसा भी कुछ कहें उसको सब को सुनना ही सुनना है, ठीक है ना। हम लोग एक दिन ईश्वरवादिता को ऐसे ही सुनते रहे। अभी निष्ठा से आप लोग इन बातो को हुल्लड़ बाजी को, फूहड़पन को, झूठबाजी को, धोखा धड़ी को बड़े ध्यान देकर के सुनते हो वैसे ही हम लोग ईश्वरवादिता को भी सुनते रहे। इतने ही निष्ठा से सुनते रहे कम से कम, इससे ज्यादा भी हो सकता है। वहाँ से मैं आया हूँ, हमारा यात्रा वहाँ से है।

अपन लिखे हैं सहअस्तित्व नित्य प्रभावी, कहीं से भी यदि ठोस पदार्थ को छोड़ोगे वो ठोस पदार्थ के साथ ही अपना सहअस्तित्व को प्रमाणित करेगा, उसके पहले वह रुकने वाला नहीं है। पानी को कहीं से छोड़ोगे वो पानी के साथ

ही अपने सहअस्तित्व को प्रमाणित करेगा। विरल वस्तु को कहीं से भी छोड़ोगे विरल वस्तु के साथ ही अपना सहअस्तित्व को प्रमाणित करेगा। अब गुरुत्वाकर्षण विरल वस्तु के साथ कहाँ गुम गया। अभी कोई action plan एक भी नहीं है इसमें, action plan सामने आएगा कल, तब देखना। अभी अपन केवल बात कर रहे हैं, सलाह मशवरा कर रहे हैं, शुद्ध बुद्धि से परामर्श कर रहे हैं।

जिज्ञासाः पदार्थ राशि का वर्गीकरण चार जातियों में है- ये क्या है?

उत्तरः मृद, पाषाण, मणि, धातु के रूप में है। ये सभी पदार्थ राशि को हम जोड़ेंगे- मट्टी, पत्थर, मणि, धातु के रूप में हमको मिलता है। इसमें ये भी देखा गया मृद, पाषाण- मणि और धातु के रूप में परिवर्तित होता हुआ और मणि धातु - मृद पाषाण के रूप में परिवर्तित होता हुआ देखा गया, होता ही है। इस प्रकार से परिणाम सतत बना रहता है, श्रम, गति, परिणाम के आधार पर। तो बनते-बनते अपनी कोई गम्य स्थली है वहाँ तक पहुँचते हैं उसके बाद आगे स्थिति को पैदा करते हैं। बताया प्राणावस्था का बीज पदार्थावस्था में रहता ही है, तभी प्राणावस्था पैदा हुआ। यह धरती पर गवाहित है। और उसी प्रकार प्राणावस्था में जीवावस्था का बीज समाया रहता है, जीवावस्था पैदा हुआ ही है, प्रगट है ही। जीवावस्था में ज्ञानावस्था का बीज बना ही रहता है। ज्ञानावस्था प्रगट हुआ ही है।

जिज्ञासाः यौगिक में भौतिक तथा रासायनिक परिणाम होते हैं जबकि मिश्रण में केवल भौतिक परिणाम होता है?

उत्तरः मिश्रण को सहवास बताया, जैसे पानी और दूध यह सहवास किये रहते हैं, यौगिक नहीं हुए रहते हैं। उसी प्रकार से कई चीज़ एक दुसरे के साथ रह सकते हैं वो कभी भी परिणित नहीं हुए रहते हैं।यदि पानी को जला दें दूध मिल ही जाएगा। उसी प्रकार से यदि हम सोचते हैं ये जलने वाला और जलाने वाला वस्तु मिलकर के पानी बन गया, पानी को जलाओगे तो बाद में एक जलने वाला एक जलाने वाला मिल जाये ऐसा होता नहीं। वो जलाओगे तो वो वाष्प में भी वैसे ही रहता है, पुनः वाष्प पानी ही बनता है। यदि इन दोनों वस्तुओं को अलग कर दिया उसके बाद पानी रहेगा नहीं। पानी रहे और ये दोनों वस्तु अलग हो ऐसा होता नहीं। यौगिक का मतलब है दो वस्तु, कम से कम, अपने-अपने आचरण त्याग करके तीसरे प्रकार के आचरण में शुरू किया। सहवास का मतलब है साथ साथ में रहते हैं अपने-अपने गुणों से।

जिज्ञासाः तो बाबा सहवास में अपना आचरण नहीं त्यागते?

उत्तरः कहाँ त्यागते हैं, दूध और पानी को मिलाकर रखोगे तो पानी कब त्यागा रहता है अपने आचरण को, दूध कब त्यागा रहता है? यदि त्यागा होता तो पानी को जला देने से दूध कैसे मिलता।

जिज्ञासाः केवल मिश्रण को सहवास कह रहे हैं आप? किन्तु आजकल यौगिक को भी अलग कर देते है, उसको क्या कहेंगे?

उत्तरः अलग कर देने से यौगिक रहेगा नहीं ना।

जिज्ञासाः सहवास की परिभाषा एक और भी है यहाँ पर कि जिस योग के अनन्तर विलगीकरण संभव हो उसकी सहवास संज्ञा है।

उत्तरः जितना सुगमता से मिश्रण में विलगीकरण संभव है उतनी सुगमता से विलगीकरण न हो वो यौगिक है। जितनी सुगमता से दूध और पानी को अलग किया जा सकता हैं, पानी में जलने वाले और जलाने वाले को अलग नहीं किया जा सकता उसके लिए कुछ विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं।

जिज्ञासाः भौतिक क्रिया और रासायनिक क्रिया में क्या अंतर है?

उत्तरः दो वस्तु अपने आचरण को त्याग करके तीसरा आचरण में आ गया, यह रसायन है दोनों एक साथ रहे अपने-अपने आचरण करते रहे यह है सहवास, मिश्रण। मिश्रण क्रिया ही भौतिक क्रिया।

जिज्ञासाः ऐक्य क्या बोला है आपने बाबा, जिस योग के अनन्तर विलगीकरण न हो उसको आपने ऐक्य बोले हैं।

उत्तरः जैसा कि पानी, पानी में मिला दिया। पहला पानी भी यौगिक है दूसरा मिलाया हुआ पानी भी यौगिक है। पहले वाले पानी और बाद वाले पानी का अब विलगीकरण नहीं होगा।

जिज्ञासाः तो क्या सजातीय वस्तुओं का ही ऐक्य है?

उत्तरः सजातीय हो और वो भी यौगिक हो, एक प्रजाति के।

जिज्ञासाः दो भौतिक वस्तुओं में भी मिला देंगे तो भी तो अलग नहीं कर पाएंगे।

उत्तरः जैसा मिट्टी से मिट्टी को मिलाया आपके कहने अनुसार। आप १ किलो मिट्टी, २ किलो मिट्टी को आप अलग कर सकते हैं। यह पानी अलग है वो पानी अलग नहीं होता है ये। मिट्टी में हम पहले से ही मात्रा से मिलाते हैं। मात्रा से पहचानते हैं मिलाये हैं, मात्रा से मानते हैं निकाले हैं। इसमें जो गुण सम्पन्न हैं, यौगिक वस्तु। पानी पानी से मिलाना, ये दोनों में समान गुण हैं। वो समान मात्रा है। गुण और मात्रा में भिन्नता यही है। सामान गुण वाला मिलने के बाद पहले गुण वाला और मिलाया हुआ गुण वाला अलग-अलग दिखता नहीं। मात्रा अलग-अलग दिखता है। सामान्य सिद्धांत है। गुण भौतिक वस्तु में कम है। गुण प्रधान नहीं है मात्रा प्रधान है। (गुण किसको कह रहे हैं?) वो जो उसका आचरण बनता है, जो दो वस्तु मिलकर के भिन्न आचरण बनता है वो गुण है। ये मूल गुण से ही रहते हैं। इसमें(भौतिक में) रूप प्रधान हो जाते हैं, उसमें(रासायनिक में) गुण प्रधान होते हैं, जीवों में स्वभाव प्रधान होते हैं मानव में ज्ञान प्रधान होता है।

जिज्ञासाः सापेक्ष शक्तियों की गुण संज्ञा है, सम विषम मध्यस्थ के रूप में पहचान होती है यही प्रभाव है।

उत्तरः सम विषम मध्यस्थ रूप में गुणों को पहचाना गया है। उद्भवकारी गुणों को हम सम कहते हैं, विभवकारी गुणों को मध्यस्थ कहते हैं और प्रलयकारी गुणों को विषम कहते हैं। ये नाम दिया है। गुण का मतलब है सापेक्ष शक्तियां। शक्तियां जब प्रयोग होती हैं किसी का उद्भव करेगा, किसी का विभव करेगा किसी का प्रलय करेगा। कुछ भी न करें ऐसे शक्ति का कोई प्रयोग होते ही नहीं। मानव अपने इच्छा शक्ति, विचार शक्ति का प्रयोग किया, उससे जो होने वाले परिणाम आप के सामने आ चुका है। कुछ बात लगता है प्रलय की ओर जा रहा है। कुछ बात लगता है कि उद्भव की ओर जा रहा है, कुछ बात लगता है कि विभव की ओर जा रहा है। प्रलय वाला ज़्यादा हो गया तब हम सोच रहे हैं।

जिज्ञासाः पाँच कोषों पर स्पष्टता चाहिए।

उत्तरः पाँच कोषों के बारे में हमने दो विधा में प्रस्तुत किया। एक परमाणु में पंच कोषों की बात किया है, दूसरा शरीर रचना में पाँच कोषों को बताया। परमाणु में कम से कम अंशो का जो परमाणु है उसमे कम से कम दो कोष रहता ही है- प्राणमय कोष और अन्नमय कोष। अन्नमय कोष अंशो की घटता बढ़ता हुआ क्रिया को अन्नमय कोष नाम दिया। परमाणु ज्यादा अंशों से होना, कम अंशों से होना इसको अन्नमय कोष नाम दिया।

सत्ता में सम्पृक्त है, सत्ता पारगामी है, वस्तु ऊर्जा संपन्न है, इसको प्राणमय कोष कहा।

उसके बाद प्राणावस्था आयी, जड़ हो गयी पत्ती आ गयी, पत्ती से कुछ लेने वाली बात आयी, जड़ से कुछ लेने वाली बात आ गई उसमे चयन करने के गुण आ गए। जैसे धतूरे का झाड़, गन्ने का झाड़, दोनों को एक धरती पर डालते हैं, गन्ने का जड़ अपने ज़रुरत की चीज़ों का चयन करता है, धतूरे का जड़ अपने ज़रुरत की चीज़ो का चयन करता है। धतूरा खाने से आदमी मर जाता है, और गन्ना खाने से आदमी जीवित रहता है। इसको अध्ययन करने से पता लगता है इनमे मनोमय कोष आरंभिक रूप में शुरू हो गयी। वही बताया पूर्वावस्था में, जीवावस्था के पूर्व में प्राणावस्था में जीवावस्था बीज रूप में बना रहता है। मनोमय कोष यहाँ से शुरू हुई। जीवावस्था आ गई, उसमें मनोमय कोष आशा के रूप में आ गयी, जीने की आशा के रूप में और संवेदनाओं को पहचानने के रूप में आ गयी। तीन चीज़ स्वरुप में आ गयी। उसके बाद मानव आ गया तो ये तो संवेदनाओं को पहचानता ही रहा, और उसके बाद संज्ञानीयता का बीज रहा। वो बीज होने के कारण से कल्पना शीलता, कर्म स्वतंत्रता के साथ जीते-जीते ज्ञान संपन्न होने की इच्छा रही। उसके बारे में हम अनुसन्धान किये हैं, उसमे यदि मानव की ज़रुरत है तो उपकार होगा ऐसा प्रस्तुत किये हैं।

हरि हर।

7

भाग – 7

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-7 – Ank-4*

जिज्ञासाः बाबा आपके अपने ऊपर बनी जो film है जो अभी June माह में release हुई जिसका नाम है विकल्प, इस विकल्प का अर्थ क्या है?

उत्तरः विकल्प का अर्थ है– विगत से जो कुछ भी हमको दर्शन मिला, सोच विचार मिला, कार्य व्यवहार मिला, आचरण मिला, संविधान मिला और व्यवस्था मिला और जो कुछ भी मिला हर साँस में, उसका विकल्प। पहला तो मुद्दा ये बनता है। उसके आधार पर हम निष्कर्ष निकाल दिए हैं कि पहले दर्शन सोच विचार का एक विकल्प। दर्शन विचार में इस बात को स्पष्ट कर चुके हैं कि विगत में अस्तित्व को पूरा न समझते हुए अस्तित्व में ही किसी एक भाग को दर्शन का आधार मानते हुए ईश्वरवाद तैयार हुआ और भौतिकवाद तैयार हुआ। अस्तित्व को छोड़ करके तो कुछ कहा नहीं जा सकता, अस्तित्व में ही किसी एक भाग को लेकर के ही ईश्वरवाद चला और ईश्वर इसका नाम दिया। वही सबका ज़िम्मेवार, जीव जगत का ज़िम्मेवार मान लिया। इस ढंग से उसमें सृष्टि, स्थिति, लय को माना। उस सृष्टि स्थिति लय को ये भौतिकवादी भी माने हैं किंतु ये अस्तित्व में जो कुछ भी वस्तु विशेष है जिसको ईश्वरवाद ने माया माना, उसको ये सच माना। इतनी ही तो बात है। किंतु इसको अंतिम सत्य नहीं माना। ये उनके (भौतिकवाद के) साथ रखी हुई एक आधार है ।

ईश्वरवाद पूरा का पूरा अनुग्रहवाद हुआ, भौतिकवाद पूरा का पूरा यंत्रवाद हुआ। ईश्वरवाद जब अनुग्रहवाद हुआ उसके किताब के अलावा दूसरा बताया नहीं जा सकता था, किताब को प्रमाण बताया। यंत्रवाद को ये अपनाया तो यंत्रों को सामने रख करके ये प्रमाण बताते हैं। अभी जैसा ये प्रकाश है, camera है ये यंत्र ही तो है। इस प्रकार के प्रमाण ये बताते हैं। दोनों का कुछ-कुछ लोग कुछ-कुछ दूर तक सही माना, कुछ दूर बाद सही मान नहीं पा रहे हैं। माने अध्यात्मवादी अपने अनुसार जो लोग समर्पित हुए, ईश्वरवाद के दहली पर अपना सर झुकाए। बहुत सारे लोग उसमें ईमानदार भी होंगे, बेईमान भी होंगे, इसको मान लीजिए। तो जो ईमानदार हुए उनसे ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं हुआ जो कि ये परंपरा के रूप में ये चल पाएँ। उसके लिए दो भाग बताया– भक्ति और विरक्ति। भक्ति और विरक्ति को लोग अपनाए अनुष्ठान किए, आजीवन अनुष्ठान किए, इसके आधार पर जो ईमानदार व्यक्ति से भी परंपरा के लिए, जैसे परिवार परंपरा है उसके लिए कुछ मिला नहीं। परंपरा के रूप में चल जाएगा जैसे साँस चल रहा है, आँखे काम कर रहा है, कान काम कर रहा है, ऐसे ये बात बना नहीं।

उसके बाद यंत्रवाद आ गए, मोटर में घुमा दिया, रेल में घुमा दिया, aeroplane में घुमा दिया और चंद्रमा पर यात्रा करा दिया। ये सब करा दिया तो इसको ये सच मानते हैं। सच जो है मानव में सच और झूठ होता है, ये यंत्र में क्या होना है? ऐसा मैं समझा। यंत्र में क्या सच क्या झूठ, यंत्र को चलाने वाले आदमी में झूठ और सच की बात हो सकती है, यंत्र में कोई चीज़ सच और झूठ हो नहीं सकती। यंत्र तो आदमी बनाया हुआ है और आदमी ही किताब लिखा है– ये भी इसके साथ ज्ञान हुआ।

यही कुल मिलाकर के हमारा विकल्प को सोचने की आवश्यकता बनी। मनुष्य प्रमाण होगा, यंत्र प्रमाण होगा, किताब प्रमाण होगा? ये आया तो मनुष्य प्रमाण होना है। मनुष्य को छोड़कर के ये दोनो प्रमाण से कोई प्रमाण बना नहीं, परम्परा बना नहीं, परम्परा को संतुष्टि मिला नहीं, परम्परा के अलावा हम जिस धरती, पानी, पत्थर के साथ जीते हैं उनके साथ भी हम कोई सऊर से काम नहीं कर पाए। और उसके साथ जितने भी अपराध किए उसके परिणाम भी आ गए, तो धरती बीमार हो गयी। धरती बीमार होना सभी वैज्ञानी स्वीकार भी रहे हैं। बीमार होने का कारण विज्ञानी को नहीं स्वीकारते हैं, ये बदमाशी है। उसको ढक कर के चलना चाहते हैं। वो चल नहीं पाते हैं। यह दुष्कर कष्ट अभी आया है। ये सारे के सारे यांत्रिक विधि से जितने भी अपराध हुए उसका कारण विज्ञान है, इसको वो स्वीकारते नहीं। विज्ञान का काम है बता देना, लोग जैसा चाहे वैसा उपयोग करेगा। उसी के साथ मूल में जो विज्ञान की शुरुआत हुई वो राजा के साथ शुरु हुई। राजा को लड़ाई करना था, लड़ाई में सामरिक तंत्र की, सामरिक साधनों की वृद्धि की आवश्यकता रही, उसके आधार पर विज्ञान सामरिक तंत्र में अपना योगदान देने के लिए वचनबद्ध हुआ। उसके साथ राजदरबार उसको मदद दिया, पैसा दिया, उसके आधार पर ये establish हुआ। अभी भी करते ही हैं, युद्ध के लिए कुछ ना कुछ करते ही रहते हैं। करते-करते ऐसा विस्फोटक तत्वों को तैयार किया जो विस्फोट होने के बाद मानव जाति ही ना रह जाए और ना धरती, धरती के रूप में ना रहे। यहाँ तक पहुँच गये। अब उसको प्रयोग करना, नहीं करना, इस पर सोच रहे हैं। उसको कैसे रोका जाए प्रयोग से, इसके बारे में भी दिशा निर्धारित नहीं हो पा रही है। ये सब बातें एक प्रकार से आंदोलन चल ही रहा है, जिसको आप हम सब जानते ही हैं। ये जो बात बनी, एक स्वरूप, इसका भी विकल्प की ज़रूरत महसूस हुई। उसमे अपन ये कहें हैं कि विज्ञान ज्ञान भाग है वो ग़लत हो गया है, तकनीकी भाग ठीक है। ऐसा अपन यहाँ से शुरू किया। तकनीकी training जितने भी देते हैं, उसमें यंत्र बनता है उसमें कोई गलती नहीं होती है और मानव में ज्ञान होता है वो ज्ञान ग़लत हो गयी। ज्ञान को अपन अध्यात्मवादियों के साथ भी प्रयत्न किए हैं, अध्यात्मवादी भी सहअस्तित्व को समझा नहीं, ना भौतिकवादी समझा।

अब ये समझे क्या चीज़? जिसको अध्यात्मवादीयों ने माया कहा उसको ये सत्य माना और अध्यात्मवादीयों ने इसको असत्य माना, उसको ये सत्य मान लिया। इस ढंग से सोच करके एक प्रतिक्रिया के रूप में ये तैयार हुई भौतिकवाद, उससे जो अनिष्टकारी स्वरूप बनी वो तो विदित हो गयी। ये विकल्प के लिए आधार हुआ। ईश्वरवादी विधि से क्या आधार हुआ? भक्ति विरक्ति में बहुत अच्छे लोग समर्पित हुए। समाज के सर्वोपरि श्रेष्ठ व्यक्ति इसमें समर्पित हुए- भक्ति में भी और विरक्ति में भी। घटिया व्यक्ति एक भी उसमे नहीं गए। जबकि विज्ञान तंत्र में यंत्र बनाने में दारू पीने वाला भी है, दूध पीने वाला भी है। सच बोलने वाला भी है, झूठ बोलने वाला भी है। जबकि जो विरक्ति, भक्ति के वेदी में समर्पित हुए उसमें सर्वाधिक अच्छे लोग हुए। अच्छे लोग होते हुए परम्परा को दे नहीं पाए, ये कष्ट उसमें तैयार हो गया। पूछे तो इसकी परम्परा में ज़रूरत है कि नहीं, तो ज़रूरत है, यही आवाज़ निकलता है। उसके आधार पर इसका भी विकल्प की ज़रूरत बनी।

तो दोनों की जब विकल्प बनी तो इन दोनों में से कही हुई बातों को सुधारा जाए शब्दों को। या कार्य व्यवहार के लिए कैसा प्रस्ताव रखा जाए, शब्दों को सुधारे बिना तो नहीं हो सकती। तो ईश्वरवादियों ने पहले शब्द ब्रह्म माना, शब्द को सत्य माना, उसके बाद आप्त वाक्य को प्रमाण माना, उसके बाद शास्त्र को प्रमाण माना। इस प्रकार से कई लहर चल चुकी। विज्ञान बिल्कुल टिके हैं यंत्र को प्रमाण मानने में, अथा से इति तक ये टिके हैं। इस ढंग से विकल्प की आवश्यकता हुई, माने ज्ञान पक्ष की। ज्ञान का धारक वाहक मनुष्य ही है, ऐसा अपन पहचाने। ज्ञान का धारक वाहक

यदि केवल मनुष्य है, यंत्र नहीं है, या किताब नहीं है, ये पता लग गया, उसके आधार पर विकल्प के बारे में सोचे। इतनी पृष्ठभूमि को जब छाना, बीना, सोचा, समझा, निष्कर्ष निकाला तब जा करके विकल्प की ज़रूरत है ये पता चला। इस ढंग से विकल्प तैयार हुआ।

विकल्प तैयार होने से कहाँ पहुँचे? दर्शन, विचार, सोच विचार में पहुंचे, हमारा मूल तत्व में, मूल अवधारणाएँ क्या होना चाहिए उसका नाम है दर्शन। जिसके साथ प्रमाणिकता को वर्तना कार्यक्रम है। उसके लिए कार्यक्रम के बारे में अपन बताया जब अनुभवमूलक विधि से हमारा कार्यक्रम सब सही होती है। अध्ययन विधि से अनुभव तक पहुँचा जा सकता है, इसको जोड़ दिया। अपने पूरे दर्शन को अध्ययन किया जा सकता है। अध्ययन करने के पश्चात अनुभव मूलक विधि से व्यक्त हुआ जा सकता है, यहाँ हम आ गए।

पहले बताए ईश्वरवादियों ने अनुभव को ज़िक्र किया है, उन लोगों ने ये बताया अनुभव को बताया नहीं जा सकता। क्यों बताया नहीं जा सकता ये पूछे तो बोले "गुड़ खाया हुआ गूँगा होता है"। गुड़ खाने के बाद गूँगा जो है ना बता नहीं पाता है। मैंने प्रतिवाद प्रस्तुत किया कि बात करने वाला भी तो गुड़ खाता है। बात करने वाला तो बात करेगा ही। ये शुरू किया, ये शुरू किए तो परंपरा के लिए ये अनुकूल नहीं पड़ा, उस समय में। अब हम बात करने योग्य हैं, हम पुनर्विचार कर सकते हैं, सोच सकते हैं, उसके आधार पर विकल्प तैयार हो गया। विकल्प क्या हुआ– अनुभव को बताया जा सकता है। मूल मुद्दा में इतना ही। मूल मुद्दा यहाँ आ गया तो बाक़ी सब इससे जुड़ गए। अनुभव मूलक विधि से हम यदि बता पाएँगे, अध्ययन करा पाएंगे, उस स्थिति में हम बता दिए। यदि दूसरे को अनुभव योग्य बनाया, तो अनुभव योग्य बनाने का क्या मतलब– सत्य बोध करा देना। सत्य बोध यदि होता है तो उसको अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित करना हर व्यक्ति से बन ही जाता है, इस आधार पर अपन प्रस्तुत किए विकल्प को। दर्शन का विकल्प जब आया तब ये 'अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान' नाम दिया। इसके पहले 'रहस्य मूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन ज्ञान' प्रस्तुत हुई। उसके बाद विज्ञानी आया, 'अस्थिरता अनिश्चितता मूलक वस्तु केंद्रित चिंतन ज्ञान' प्रस्तुत किया। इसका शुरुआत ही है –अस्थिरता, अनिश्चितता, अव्यवस्था है, इसीलिए अव्यवस्था पैदा किया। और वो अव्यवस्था वहाँ तक पहुँचाया स्वयं को और गुरुजी को भी लेकर डूब गए। इसीलिए विकल्प की जरूरत बना। उसका प्रस्तुति हम अपने ढंग से अनुभव मूलक विधि से प्रस्तुत किया हूँ। उसकी पूर्णता को जाँचने का अधिकार सबके पास है, जाँचेगा। जाँच करके यदि पूर्णता निकल पाती है, वो अपनी ज़िंदगी को अर्पित करेगा ही, ऐसा मैं सोच कर चल रहा हूँ। इस ढंग से विकल्प का एक पृष्ठभूमि बनी।

उसके बाद जब हम ज्ञान के बारे में पहुँचे, ज्ञान के अनुरूप हमारा फल परिणाम होने की बात आ गयी। उस बीच में सोच विचार आए, निर्णय आए, कार्य व्यवहार आए, व्यवस्था आए। इन सबसे गुजर कर के हमारा मूलतः जो अनुभव थी, ज्ञान थी, उसके अनुकूल यदि हुआ, उसके पक्ष में हो गया, तब उसको सही माना जाए। अनुभव सहअस्तित्व में होता है, सहअस्तित्व प्रमाणित हो जाए, इतनी ही तो बात है। एक सूत्र में एक वाक्य में इतना ही– सहअस्तित्व में अनुभव होता है और सहअस्तित्व प्रमाणित हो जाए। सहअस्तित्व किसके साथ? सर्वप्रथम सत्ता के साथ और उसके बाद मनुष्य के साथ, उसके बाद जीव संसार के साथ, उसके बाद वनस्पति संसार के साथ और उसके बाद खनिज संसार के साथ। हम क्या जी पा रहे हैं, पूछा जाए तो, नहीं। ईश्वरवादी इस सब को त्याग दिया, इसे बेकार मान लिया, विज्ञानी इसे सिर पर रख कर चले। इसी के साथ विज्ञानियों ने असंतुलन को स्थापित किया। वो ही असंतुलन आज मानव के लिए हानिकारक बन गया। इसको धीरे–धीरे लोग पहचान रहे हैं, आगे चलकर और

भी लोग पहचानेंगे। इस ढंग से विकल्प की बात आयी। पहले मूल अवधारणा में विकल्प, माने दर्शन को अपन ने कहा “जीना ही दर्शन है”। इसलिए जीवन दर्शन नाम आया। जीना ही जब दर्शन है तो मतलब इतना यात्रा हर व्यक्ति के साथ जुड़ा है। समझना होगा ही, सोच विचार करना होगा ही, निर्णय लेना होगा ही, कार्य व्यवहार करना होगा ही, व्यवस्था में जीना होगा ही, व्यवस्था में जीने पर पाँचों आयामों में जीएगा। जीने का फल परिणाम होता ही है। फल परिणाम सहअस्तित्ववादी होगा ही। वो सही माना जाए, यदि सहअस्तित्ववादी नहीं है तो उसको गलत माना जाए।

जिज्ञासाः सहअस्तित्ववाद क्या है, इसे स्पष्ट कर दीजिए।

उत्तरः सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति– सहअस्तित्व। (साथ–साथ होना) साथ–साथ क्या है? ये तो मूलतः अस्तित्व बताया। इस धरती पर चारों अवस्था है ही। चारो अवस्था के साथ जी पाना, ये सहअस्तित्व है। ये तो आपको पता ही है, ईश्वरवादियों ने ये जो चार अवस्था है इसको नकार दिया। इसको माया कह दिया और इसको वैज्ञानिकों ने सच माना। वो जीने की जगह में आ नहीं पाए, इसका विरोध किया। इसमें अस्थिरता, अनिश्चयता को मोल लिया, इसके साथ विरोधी काम किया। अस्तित्व विरोधी काम किया मानव विरोधी काम किया। करना ही पड़ा, दूसरा कोई रास्ता नहीं रहा। इस ढंग से मानव विरोधी, अस्तित्व विरोधी काम करते हुए अपने को प्रचंड विद्वान माना। कौन? विज्ञान। या प्रचंड विद्धवता माना, या प्रचंड विद्या माना। अभी उसमें भी बहुत सारा परेशानी है– विज्ञानी ज़िम्मेवार है या विज्ञान ज़िम्मेवार है? विज्ञानी सच नहीं है मानते हैं, विज्ञान सच है। यहाँ पहुँचते हैं। विज्ञान क्या विज्ञानी के बिना गति बनती है? पूछा जाए तो वहाँ कुंठित है। इस ढंग से वो परेशान हैं। विज्ञानी के बिना विज्ञान का क्या गति है? नहीं है। ईश्वरवाद है, ईश्वर को समझे बिना ईश्वरवाद क्या परंपरा बन पाती है? नहीं बन पाती। यदि समझने के बाद प्रमाणित होता है कि नहीं होता है पूछा जाए तो तर्क से पता लगता है कि प्रमाणित होता है। तो ईश्वरवाद रहस्यमयी होने के कारण से प्रमाण के पास पहुँच नहीं पाया और विज्ञान, विज्ञानी को विज्ञान का धारक वाहक ना मानने के आधार पर विज्ञान से कोई conclusion निकला नहीं, समाधान निकला नहीं।

इस ढंग से अस्तित्व में ही जो वस्तु है उसको ले करके चले। उसको हमने समझा, तो अस्तित्व का कुछ भाग को विज्ञानियों ने सच माना, कुछ भाग को अध्यात्म वादियों ने सच माना। कुछ भाग होने के कारण से दोनों प्रमाणित नहीं हो पाए हैं, संकटग्रस्त हुए, दोनों का दोनों। इसीलिए विकल्प की ज़रूरत है। यहाँ हम आ गए, छोटी सी गवाही से। इस आधार पर हम आ गए हैं तो पहले दर्शन प्रस्तुत किया, दर्शन के आधार पर विचार का आधार प्रस्तुत किया विवेक और विज्ञान। विवेक और विज्ञान को प्रस्तुत करने के बाद निर्णय की बात में आ गए। निर्णय मूलक विधि से अपन शुरू करते हैं ज़िम्मेवारियाँ आती ही हैं। तो जानना, मानना ये ज्ञान विवेक विज्ञान तक हम आ गए। जानने, मानने के बाद पहचानना, निर्वाह करना होता है। ऐसे पहचान के जाते हैं, हम अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहचान लेते हैं।

जिज्ञासाः बाबा जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना जो शब्द हैं, उसको स्पष्ट कर दीजिए।

उत्तरः ज्ञान जो है- जानना। ज्ञान जो है मूलतः सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति। नाम क्या दिया? सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, होने का ज्ञान। होना कैसा है? सहअस्तित्व रूप में है। ये बात यदि मूल रूप में पकड़ में आता है, मनुष्य इधर उधर होता नहीं। इसको अपन सुन करके यदि टाल देते हैं, आदमी रास्ता में आएगा नहीं, वहीं काँटा-कूँटा में ही रह जाता है। अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान, पहले ऊपर लिखा है। अस्तित्व जो कुछ भी है सहअस्तित्व रूप में है। सहअस्तित्व मूलतः सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है। ऐसे प्रकृति चार अवस्था में है, चार पदों में है। इसका व्याख्या दिया। उसमें प्रक्रिया है- विकास क्रम एक प्रक्रिया है, विकास एक प्रक्रिया है, जागृति क्रम एक प्रक्रिया है और जागृति एक प्रक्रिया है, सदा सदा के लिए प्रक्रिया। ऐसा लिखा है।

देखिए सत्ता शाश्वत है, अपरिणामी है। जीवन विकास पूर्वक अपरिणामी हो गया, कितना सही बात है। मनुष्य आदिकाल से अमरत्व को सोचता ही रहा, जीवन अमर है अभी अपन पता लगा सकते हैं। कितना छोटी सी बात हो गई। कितना दुःख दर्द से दूर होने की रास्ता बनी।

"अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः" अमरत्व को ऐसा कहा है।

अर्थात् जो जरा नहीं होती है वो अमरत्व है। अमर क्या है? निर्जरा, वृद्धयापी नहीं आता है, उसका नाम है जरा, वृद्धयापे को जरा कहते हैं, हमारा बुज़ुर्गों ने कहा है। अजरा, यानी वृद्धयापी होते ही नहीं, बुढ़ापा जिसका नहीं होती, उसी का नाम है- देव, देवता नाम है। ये पहले लिखा है। अभी जीवन में जरा दोष है ही नहीं, परिणाम दोष है ही नहीं, तो इसीलिए जरा दोष नहीं है। मात्रात्मक परिवर्तन से मुक्त हो गया, ये लिखा है। मात्रात्मक परिवर्तन जब तक है तब तक जरा दोष है। रचना विरचना तक है, जरा दोष। इस बात को कहा है। रासायनिक भौतिक वस्तुओं में रचना विरचनाऐं होते ही रहते हैं। जीवन वस्तु में कोई भी रचना विरचना होते ही नहीं। उसमें क्या होता है? चेतना। चेतना के बारे में - जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना को स्पष्ट कर दिया। मानव जीव चेतना पूर्वक अव्यवस्था में फँसता है, क्लेश को मोलता है। छोटी सी बात। हालत बैंड है इस सूत्र में, आदमी जात की।

जीव चेतना में गलतियों को, अपराधों को करते हुए, क्लेश को मोलता है। इसका क्या गवाही पूछा? सारा राजतंत्र में जो संविधान बना है, मानव को, गलती अपराध कर सकता है, इसको स्वीकारा है। और सारे धर्म गद्दी आदमी को पापी अज्ञानी कहा है, इससे ज़्यादा बड़ा गवाही कहाँ से लाने की ज़रूरत है?

उसके बाद कथा भागवत के रूप में "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना" सब कह ही चुके। और उसके बाद में "सुनना सबकी करना अपने मन की" ये भी कह चुके, "ख़ाली हाथ आए, ख़ाली हाथ जाना है" ये भी कह चुके। ये सब तो हम सुन ही चुके हैं, सभी सुने हैं ऐसा मेरा सोच। ये सब झूट की पुलिंदा है। ये भ्रमवश है, भ्रम को झूठ मानोगे कि नहीं मानोगे। खतम हो गई बात। उसी से पैदा हुआ ये "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना"। उसके बाद "सुनना सबकी करना अपने मन की" ये भी उसी से जन्मा, और उसके बाद इसमें निराशा जब आयी बताया "खाली हाथ में आना, खाली हाथ में जाना" क्या चीज- शरीर। जीवन ज्ञान नहीं था इस बात को प्रमाणित कर दिया कि नहीं? जीवन ज्ञान न होने का ये प्रमाण है। तो जीवन ज्ञान हमारे ईश्वरवादी परंपरा में था नहीं, इस बात का ये प्रमाण है। शिष्ट परिवारों में ये तीनों नारा चला, वेद मूर्तियों के परंपरा में चला। इससे ज्यादा शिष्ट परिवारों को पहचाना नहीं गया। जब वेद मूर्तियों के परिवारों में ये तीनों नारा चला तो इससे पता लगता है कि जीवन ज्ञान नहीं था। पर्याप्त है इतना? इतना गवाही के साथ हम आगे चल दिया।

उसमें जीवन को जब समझा, आत्मा माया सम्पुटित बताया। माया सम्पुटित होने के बाद माया ज़्यादा बलवती है कि ब्रह्म ज़्यादा बलवती है ये आया, उसमें जीवों को ध्यान की ओर जाना था, कर्म की ओर चले गए, फिर कर्म में पाप–पुण्य होता ही है। पाप पुण्य होता है तो कर्म बंधन आ गया। कर्म बंधन के आधार पर आवागमन हो गया, स्वर्ग और नरक। धरती को कर्म भूमि माना, फल को भोगने के लिए स्वर्ग नरक बताया। ऐसा बताया। मैंने इसको decide किया इसका फल धरती पर ही मिलता है। इसके लिए कोई स्वर्ग जाने की ज़रूरत नहीं, ना नरक जाने की जरूरत है। इसको हमने समझा और बताया है। ऐसा हमने कुछ प्रयोग किए, अभी बिलासपुर में एक जेल में कैदियों के साथ कुछ सत्संग किए। उसमें उन लोगों ने लिखित रूप में दिया, इसको सरकार को प्रस्तुत किया गया, उन्होंने ये लिखा है कि हम पकड़ में आए हैं इसलिए अपराधी हैं, जो पकड़ में नहीं आए है वो हमसे ज़्यादा अपराधी घूम ही रहे हैं। दूसरा ये कहा, हम जो सर्वोच्च कोटि के अपराध किया उससे आगे के अपराध के लिए हम सोचते रहे इसके पहले, यहाँ बैठकर के भीतर सोचने के लिए बहुत समय है। हम ऐसा सोचते रहे, सर्वोच्च कोटि के जो अपराधी हैं उनसे आगे के अपराध कैसे किया जाए, इसके बारे में हम सोचते रहे। उसके बाद ये बोले कि अभी तक की हम को जीवन ज्ञान ना होने के कारण से हम भ्रमित हो करके सारे अपराधों में फँसते ही रहे। ऐसे हर व्यक्ति फँसा है। उनके अनुसार कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपराध नहीं करता। उसके बाद ये कहा कि जीवन विद्या आने के बाद हमारे विचार में परिवर्तन हुआ कि हमको न्यायपूर्वक जीना चाहिए। तीनों बातों को घोषणा करने के बाद यही लिखा।

उसके बाद हमने सोचा कि ये इतना अच्छा सोच पाते हैं। इनके लिए क्यों ना ऐसा व्यवस्था प्रावधानित किया जाए कि ये निर्दोषी होकर निकल जाएँ। उसके लिए हमने दो स्टेप दिए आगे, लिखकर Commissioner को दिया।

१. बंद जेल से खुली जेल में एक अवसर पैदा किया जाए, देखरेख यथावत किया जाए। उनके साथ उनके पहचान का एक व्यक्ति रहने की अनुमति दिया जाए, और उसके साथ अपने श्रम से आजीविका को चलाने के लिए व्यवस्था किया जाए।

२.उसके बाद जिसके साथ ये अपराध किए थे, उन्हें इन के साथ रहने का अवसर दिया जाए। इनको वो देखें जाँचे कि इनमें कोई परिवर्तन हुआ या नहीं हुआ। जाँचे, वो बताएँ। यदि वे कहते हैं कि परिवर्तन हो गया उसको सरकार माने। उसके पहले हम देखते हैं यदि हमको समझ में आता है परिवर्तन हो गया है उसको मानें। उसके पहले आपका सरकारी अमला देखें कि इनमें परिवर्तन आया है कि नहीं आया है, परिवर्तन आया है तो उसको माना जाए। इन तीनों विधि से इसको गवाही माना जाए। पहले ये अपराधी हैं इसकी गवाही आ चुकी, उसके आधार पर इनको सजा हो चुकी। इन तीनों गवाहियों के आधार पर इनकी बाकी सजा को माफ़ कर दिया जाए। इनको अच्छी ढंग से जीने के लिए व्यवस्था दिया जाए, उनको अपने ढंग से जीने के लिए छोड़ दिया जाए, दो में से एक होगा। छोड़ने के पश्चात भी आपके पास निगरानी करने की व्यवस्था बना ही है। पुनः इनका मन तो नहीं बदला उसको देखा जाए। ऐसा बात है।

शहडोल ज़िले में एक आदमी ने अपना भाई का खून कर दिया जिसे केवल उसकी भाभी देखी थी और कोई देखा नहीं था। गवाही एक ही हुआ। प्रतिवाद में पत्नी की गवाही को गवाही नहीं माना जाता है। उसके अलावा कोई देखा नहीं। पत्नी तो अपना गवाही दी। ज़मानत में वो वापस आ गए और भाभी को धमकाया, तुम यदि गवाही दिया तो समझ लो की तुम भी नहीं रहोगे धरती पर। उनका एक और भाई था वो छोटे भाई झूठी गवाही दे सकता है ये तैयारी

करते रहे, छोटे भाई को भी धमकाया तुमने देखा नहीं है, झूठी गवाही देना नहीं। हमने देखा नहीं है सुना है बोलो। ऐसा धमकाया तो उनका पत्नी को गवाही बदलना पड़ा, हम देखे नहीं थे कह दी वो। उसके आधार पर वो आदमी छूट गया और भाभी को अपनी पत्नी बनाया और अभी वो आदमी जीवित है, ये न्याय है?

इस प्रकार के अपराध के साथ अपराध की श्रृंखला सोचने वाली बात आता ही है। तो वहाँ कैदियों ने बताया, हम अपराध के जगह में न्याय को सोच सकते हैं ये हमको यहीं जीवन विद्या को सुनने के बाद पता चला, इसके अनुसार हम जियेंगे। यही वचनबद्ध हुए वो। इससे अच्छा क्या result हो सकता है, आप सोचो। और हम जीने के लिए तैयार हैं ये कहा। उसके बाद उसका कोई लाभ नहीं हो पाया उन लोगों को। हम लोगों ने कहा इनको एक अच्छा आदमी बनाया जाए, ये पुलिस वालो की हविस पूरा करने के लिए material ना बनाया जाए। लिख कर दिया।

8

भाग – 8

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-8*

उत्तर: ज्ञान के बारे में ये स्पष्ट है, सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान। दर्शन ज्ञान का मतलब है, समझ– हम समझ में आ गया। समझ में कब आ गया? अनुभव कर लिया तब समझ में आया। उसी प्रकार जीवन ज्ञान– जीवन कैसा है, क्यों है इसका अनुभव हो गये। यह ज्ञान हुआ। उसी प्रकार मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान। मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान जब आती है, तब उसका प्रयोजन समझ में आता है– न्यायपूर्वक जीना पहला, उसके बाद संतुलनपूर्वक जीना, उसके बाद नियंत्रण पूर्वक जीना, उसके बाद नियमपूर्वक जीना। ये चार भाग पूरा हो जाता है।

नियम आचरण के रूप में आता है। आचरण व्यवहार के रूप में प्रमाणित होता है। इसके पहले विचार आता है, विचार रहता ही है, वो विज्ञान और विवेक, दो चीज, दो खाके में बताया। ज्ञान के अनुरूप विवेक होता है। सहअस्तित्व के अनुरूप यदि विवेक होता है उसका नाम दिया है, मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य दोनों पहचान में आना। समझ में आना, पहचान में आना। यह मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य दोनों पहचान में आने से जीवन लक्ष्य स्वयं में अनुभव के रूप में होना पाया गया। और अनुभव के रूप में हो करके वो मानव लक्ष्य के रूप में प्रमाणित होना पाया गया। मानव लक्ष्य के रूप में जब प्रमाणित होने गए तब पता चला समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में प्रमाणित होना पाया गया। जब ये चार विधा में प्रमाणित होना हुआ उससे पता चला इसमें जीवन मूल्य प्रमाणित हो जाती है, इसी में। सुखी होना जीवन मूल्य है, शांति पूर्वक रहना जीवन मूल्य है। शांति क्या चीज़ है– समाधान प्रस्तुत करता है शांति, समस्या प्रस्तुत करता है अशांति। कितना छोटी सी बात है। हर व्यक्ति और हर अज्ञानी, ज्ञानी, विज्ञानी तीनों जाँच सकते हैं कि नहीं। ऐसा बन गया ये। अशांत हैं, मतलब है हम अपने विचार में संतुलित नहीं हैं। अपने विचार में संतुलित कब होते हैं– वो पता चला समाधान के साथ समृद्धि हो जाए। अभी ये बहुत अच्छा प्रावधान है इस विचार का, अध्यात्म और विज्ञान ।ये दोनो इस बात को पहचाना है, शांति पूर्वक रहने के लिए समाधान समृद्धि आवश्यक है। समाधान के बिना शांति बनता नहीं, और समाधान के बाद समृद्धि के बिना भी शांति नहीं बनता। इस ढंग से अपन पता लगा लिया, समाधान समृद्धि पूर्वक जीने से सुख, शांतिपूर्वक जीना बनता है, ये जीवन मूल्य समझ में आ गए। सुख, शांति पूर्वक जीना बन गए उसके बाद आगे आए तो समाज सूत्र व्याख्या रूप में हम जीते हैं, अखंड समाज सूत्र व्याख्या के रूप में हम जब शुरू करते हैं ,परिवार में जीना, मूल्यों का निर्वाह करना हो ही जाता है। स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, मानव मूल्य इन तीनों मूल्यों को हम प्रमाणित करना बन ही जाता है। इन मूल्यों को निर्वाह करते हैं, संबंधो में विश्वास हो ही जाता है। सम्बन्धों में विश्वास होना ही , मानव सम्बन्धों में विश्वास परंपरा ही अखंड समाज का सूत्र है, उसका निर्वाह होना ही व्याख्या है। निर्वाह होने के लिए क्या बताए– अखंड समाज व्याख्या, ये बनता है, मानव जाति एक के रूप में जीना है व्याख्या करना है। मानव धर्म एक है, इसको व्याख्या देना है, ये हमारा जीने में आना है। मानव जीने में ही सूत्र, व्याख्या प्रमाणित होता है। ज्ञान प्रमाणित होता है, ज्ञान जीवन मूल्य के रूप में प्रमाणित होता है, उसका व्याख्या मानव लक्ष्य के रूप में, मानव मूल्य के रूप में, मानव व्यवहार के रूप में, मानव कार्य के रूप में, मानवीय व्यवस्था के रूप में, शिक्षा के रूप में, सुरक्षा के रूप में, न्याय के रूप में,

और ये अपने आप से प्रमाणित होना शुरू होता है। ये अखंड समाज सूत्र कहलाया। वो पाँच सूत्र में फैलता है व्याख्या-शिक्षा संस्कार के रूप में, न्याय सुरक्षा के रूप में, उत्पादन कार्य के रूप में, लाभ हानि मुक्त विनिमय कोष के रूप में, ठीक है, विनिमय कोष बताया माने हमारा समृद्धि हमारे यहाँ कोषित रहता ही है। हम जितना रख पाते हैं उतना ही हमारी समृद्धि हो सकती है, (वस्तुओं को) वस्तुओं से ही समृद्धि प्रदर्शित होता है, पैसे से समृद्धि प्रदर्शित होता नहीं। इसके आधार पर लिखा प्रतीक प्राप्ति होती नहीं, उपमा उपलब्धि होती नहीं। अभी तक अपना जो झंझट है कला साहित्य में उपमा और प्रतीक, उसी में मर गए, सब का मौत हो गया, बेनम्बर हो गयी बात। कोई प्रयोजन नहीं निकला, केवल दारू नशा शेष रह गया, लफ़ंगाई शेष रह गया साहित्यकारों के पास, और कोई प्रमाण एक भी साहित्यकार प्रस्तुत नहीं कर पाया। मैं कवि स्वयं रहा हूँ, मैं इसको अनुभव किया हूँ, कवि साहित्यकार कैसा होते हैं। बिना सर पैर की बात करना ही साहित्यकार है, बिना सर पैर की बात करना ही कलाकार है।

इसलिए आपको अभी बताया ये studio, studio man इसको बिलकुल सर्वथा अलग करिए studio weapon उसको आप उपयोग कर सकते हैं। weapon औजार, ठीक है। इस बात को हमने अपना आरजू प्रस्तुत किया। अब इसको आगे जैसे comment करना है, कुछ कहना है, ये पूरा बात को समझा हुआ आदमी से कहलाइए। वो ज्यादा प्राभवशाली होगी। अभी अपन क्या सोच के किया कि वो ज्यादा लोगों के मन में आया है एक आदमी, उनसे लिखाने से ज्यादा प्रभावशाली होगा ऐसा कर दिया अपन, technically ऐसा हो गया। तो वो technique को थोड़ा सा हम यहाँ आरजू करना चाहा हूँ, वो technique को इसमें उपयोग किया ही ना जाए, और इसमें भद्दगी के अलावा दूसरा कुछ होगा नहीं। इसको कहा वो आदमी को देखेगा क्या हालत होगा। इसको आपने comment कराया, वो आदमी को देखने वाला क्या समझेगा। बात इतना ही है। जब तक वो आदमी हमारे संपर्क में नहीं आएगा, कल्याण है। तब क्या होगा। ये सब बात सोचने की मुद्दा है। इसलिए मैंने आरजू किया है, इसमें जो आदमी रचा है पचा है, ऐसे व्यक्ति से comment कराया जाए।औजार तो अपन प्रयोग कर ही सकते हैं, कोई problem नहीं।

तो इस ढंग से विकल्प कितनी जगह में फैल गई, एक तो ज्ञान रूप में विकल्प हो गया। क्यों? अध्यात्म ज्ञान अस्तित्व दर्शन ज्ञान को दिया नहीं, ना भौतिक ज्ञान दिया। और उसके पश्चात विवेक को मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य के रूप में, ना तो अध्यात्म ज्ञान दिया, ना भौतिक ज्ञान दिया है। ये सहअस्तित्व ज्ञान देता है, इसीलिए विकल्प हुआ। उसके बाद इसके आगे चलें हम, मनुष्य के विवेक से जो पहचान हुई मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य उसके लिए दिशा निर्धारित करने के लिए विज्ञान का प्रयोग बताया। मानव के लिए विज्ञान asset होगा कहते हैं। बोलिए, ये उचित होगा कि नहीं होगा? अभी जो बताया ना fission, fusion को विज्ञान का अंतिम चरम लक्ष्य मान रहे हैं, वो ठीक है, ये ठीक है आप सोचिए। अभी क़रीब-क़रीब सभी देश के बोर्डेरों में बिछ गए, यदि बचा-खुचा होगा तो और बिछ ही जाएंगे। कहीं भी बत्ती जलेगी सब जगह में जलने की व्यवस्था है इसमें। उसको कुछ नाम यही देते हैं, वो सब अपने जगह में है, हम उसके बारे में कुछ कहना नहीं है। अभी इतना ही बात है, वो लक्ष्य ठीक है या यह लक्ष्य ठीक है, विज्ञान का जो लक्ष्य है आज? चंद्रमा पर जाना, सैर कराना, पैसा पैदा करना एक हुआ, दूसरी ओर पूरा का पूरा border में fission, fusion को बिछा के रखना, ये लक्ष्य विज्ञानियों के लिए जो बनाए हैं, क्या ये ठीक है? और या ये ठीक है। क्या? मानव लक्ष्य जीवन मूल्य प्रमाणित होना ठीक है। यदि जीवन मूल्य प्रमाणित होना है, मानव लक्ष्य पूरा होना है उसके लिए विज्ञान को अपनाया जाए। तकनीकी ठीक है। तकनीकी के बारे में अपन स्वीकारा

है, तकनीकी से जो मट्टी कोड़ते हैं, मट्टी कुड़ा जाता है। यंत्र बनाते हैं, यंत्र बन जाता है। इसमें technique में क्या गलती है। technique को उपयोग करने में, गलती-सही है। वो गलती-सही को इस ढंग से जोड़ा जाये- मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य को पूरा करने के अर्थ में जोड़ा जाए। ऐसा अपन प्रस्तावित किए हैं, इसका नाम दिए हैं विकल्प। विज्ञान का विकल्प, ज्ञान का विकल्प दिया, विवेक का विकल्प दिया। पहले विकल्प में कहा है, हमारे बुजुर्गों ने, आत्मा का अमरत्व, शरीर का नशवरत्व को स्वीकारना विवेक बताया। अपन क्या लिखे हैं? जीवन का अमरत्व, शरीर का नशवरत्व, व्यवहार के नियम, इन तीनों एकत्रित होने से विवेक कहा। और उसके पहले क्या कहा, यदि विवेक आता है तो मानव लक्ष्य समझ में आ गये। क्या समझ में आ गये? समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूरा हुआ, इसके लिए विज्ञान को प्रयोग किया जाए। किसके लिए? समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सम्पन्न होने के लिए विज्ञान सिद्धांतों को प्रयोग करना शुरू करें। वो कैसा किया जाए? उसके लिए कर्म दर्शन में कुछ बातों को लिखा है, यदि कमी पड़ती है उसको पूरा करने के लिए मैं बैठा हूँ।

उसके बाद आता है जीने में, परिवार में जीना। और उसके बाद परिवार के बाद अड़ोस-पड़ोसों के सम्बन्धों में जीना, ग्राम के सम्बन्धों में जीना, देश के सम्बन्धों में जीना, सब पूरा धरती पर जितने मानव हैं उनके सम्बन्धों में जीना। ये कैसे बनता है पूछे, तो मानव धर्म एक होता है इसलिए विचार जो है ना धर्म के अनुरूप होने की बात आ गयी। सारे विचार समाधानित होने की बात आ गयी, इसको हर व्यक्ति पा सकता है। समाधान सम्पन्न विचारशैली को पा सकता है। किस विधि से? मानव लक्ष्य जीवन लक्ष्य के पूरा होने के आधार पर समाधान को हर व्यक्ति पा सकता है, ज्ञान मूलक विधि से। ये अपन प्रस्ताव रखा, ये विकल्प हुआ कि नहीं हुआ? तो ऐसा विकल्प रखा। विकल्प रखने के बाद, यह कहा यदि मानव लक्ष्य पूरा होता है, जीवन लक्ष्य पूरा होता है। मानव लक्ष्य पूरा होने से अखंड समाज हो ही जाता है। जीवन लक्ष्य पूरा होने से सार्वभौम व्यवस्था हो ही जाता है। क्या बात है! जीवन लक्ष्य पूरा होने की स्थिति में सार्वभौम व्यवस्था अवतरित होता ही है। अखंड समाज ताना-बाना बनने की पहले स्वाभाविक रूप में मानव लक्ष्य पूरा हो ही जाता है। मानव लक्ष्य यदि एक व्यक्ति का मानेंगे वो पुनः संग्रह, सुविधा ही आएगी। व्यक्ति, परिवार के सीमा में सोचेंगे, व्यक्ति के सीमा में ही सोचना बनता है संग्रह सुविधा को, परिवार जायेगा उधर, कगरियाएगा, परिवार भी व्यक्ति का साधन रूप में उपयोग करना होता है। ऐसा है काम-धाम। अभी तक तो ऐसा ही है गवाही। ठीक है। इसमें क्या होता है, हर व्यक्ति, समाधान सम्पन्न होने की आवश्यकता है परिवार में, किसी ना किसी अवस्था तक में, उसके लिए १६ वर्ष से २० वर्ष के बीच में अपन सोच रहे हैं, क्योंकि अभी के स्थिति में मानव की स्थिति में इससे पहले होना इतना आसान game नहीं है। ज़्यादा से ज़्यादा जल्दी से जल्दी होगा तो १६ वर्ष तक होगा, धीरे से धीरे होगा तो २० वर्ष तक होगा। ऐसा एक अन्दाज़ लगाए हैं। इतने में क्या होगा? समाधानित होने की दिन आएगी। ऐसा हर व्यक्ति को शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए। क्या बात है ! ऐसा होना चाहिए या एक दूसरे का जेब काटने के लिए होना चाहिए? आप ही बताओ मेरे को, आप ही सोचो, आप ही चार जने महान हैं, आप ही सोच लो? तो मनुष्य अपनी उपयोगिता को enhance करना है, या ये जो दुष्कर्मों को enhance करना है? उपयोगिता को enhance करना है। उपयोगिता को enhance करने में समृद्ध होता है, कुकर्मों को enhance करने पर जेब काटना बनता है। कितना बढ़िया हो गये, बिलकुल सामान्य सिद्धांत हो गये ना ये। ये सामान्य रूप में समझा जा सकता है ना? अच्छा इसमें अपवाद हो सकते हैं, अपवाद को अपन नकारा नहीं है। इनमें से बच के चलने वाला आदमी है और उसके बावजूद ये सब oven में चलते हुए, मनुष्य सारा काम अच्छा बुरा दोनों करते हुए ५१%

ठीक है। ये परम्पराएं जो शिक्षा परम्परा है, व्यवस्था परम्परा है, संविधान परम्परा, व्यापार परम्परा है, ये पूरा का पूरा सड़ चुके हैं। धर्म परम्परा, राज्य परम्परा, शिक्षा परम्परा, व्यवस्था परम्परा, ये चारों परम्पराएं ९९%, नो नो के हिसाब से दस बीस बार लगा दो बाकी बचा-खुचा होगा तो उतना ही बचा है। क्या बचा? पदार्थ के बारे में विज्ञानीयों ने सोचा, तकनीकी layman production, माने श्रम जीवियों का production, श्रम करने वालों से सारा तकनीकी उपजा, वो आज तक सही है, उसमें गलती नहीं है। श्रम करने वालों से सारा तकनीकी स्थापित हुई। उसको विज्ञान अपनाया हमारा है, माने वहीं से reservation चालू हो गया। वो किया एक श्रम नहीं ! वो पहले किया हुआ श्रम को, हमारा वाला patent कर लिया, उससे आजीविका चलाने लग गए, इसको विज्ञान माना जाता है। आप ही सोचो, कहाँ तक आदमी के साथ आदमी सही किया है, धोखा किया है, आप ही सोच लो। बात बता रहे हैं अभी, अभी कोई आरोप लगाने की बात भी ना सोचा जाये, घटनाएं जैसा गुजरा है, उसके बारे में वर्णन है ये। ठीक है, इस बात को अपने को परिशीलन करने की जरूरत। अब जो है ना ज्ञान ग़लत हो गई, और तकनीकी ठीक हो गयी। तकनीकी कैसा ठीक हो गयी? श्रमजीवियों से पैदा हुआ है सारा का सारा तकनीकी। इसीलिए वो ठीक हो गया। और ये जो है ना वो पूरा reservation के लिए सोचा सारा ज्ञान, ये पूरा का पूरा गलत हो गया। क्या हुआ, reservation, specialisation दो नाम देते हैं इसके लिए सोचा, ये ज्ञान ग़लत हो गया। ये दोनो भाग मनुष्य को धोखा धड़ी में डालने के ही खाका बनाता गया।

इसमे क्या हो गई। तो हम सच बोलना जानते ही नहीं हैं, अंतिम सत्य को ये जानते भी नहीं हैं।

विज्ञानी क्या सोचता है, एक नियम बनाता है, नियम को मशीन में देता है, मशीन जो बताता है, उसको अंतिम सत्य नहीं मानेगा, इसीलिए आगे की सोचने के लिए जगह बना रहे हैं, ऐसा मानते हैं। quantum physics के अंतिम निष्कर्ष निकला हुआ हमारे पोते से हम पूछा हूँ, वो जीवन को नहीं बता पाया. सत्य को नहीं बता पाया।

तो अभी इस विधि में, जिस विधि से हम चल रहे हैं उससे क्या हमको एक बहुत बड़े भारी धैर्य सम्बल मिला, इसमें जो हमारे पिताजी या दादाजी ज्ञानी हो गए उसके आधार पर हमारा पूजा होने वाला नहीं है। हमारा दादा ज्ञानी हो गये, पूज्य हो गये, इसके आधार पर हमारा पूजा हो ऐसा होने वाला नहीं है। कितना बड़ी भारी रास्ता निकल गया। देखो ये घटना से "वो" निकला, "शुभ"। यदि ये घटना नहीं होती शायद हम उसमें पूरा नहीं पड़ते। आज हम गवाही दे सकते हैं, ठोक बजाऊ कह सकते हैं, हम अच्छे हो गए, हमारे बच्चों को श्रेय मिलेगा ऐसा नहीं होगा। उनको श्रेय पाना है, वो समझना ही पड़ेगा। ये कहाँ से शुरू हुआ? जब हम समझे, मेरे श्रीमती जी को हम समझाए, पहला। पहला तो वो ही है, पूरा का पूरा हमारा सारी अवस्थाओं में हमारा अभिभावक के रूप में मेरी पत्नी काम किए, मेरी संरक्षक के रूप में काम किए। ठीक है। काम करने के बाद हमारा पहला कर्तव्य में , हमने जो पाया है इनको बतावें, बताया। और धीरे-धीरे २-४-१० दिन में सुनी, कुछ समझ में भी आया, कुछ समझ में नहीं आया। वो बोलती है, तुम संसार को लोकोपकार करते रहो हम सेवा करते रहूँगी। उसके बाद क्या बचता है हमारे पास? उसके बाद हम सोचने लगे किसको बतावें? तो एक निष्कर्ष निकला, कि भाई जो समझ सकता है उसको समझाओ। ये अपने विवेक से निकल गया। निकल गया तो, इसको जब हम शुरुवात किये तो कहा कि प्यासा कुआँ के पास आता है। तर्क का कहीं कमी नहीं है। अच्छा, कुआँ के पास आता है, तो आप काहे को दौड़ते हो। ऐसा हमको डाँटने लगे। डाँटने लगे

तो हम सोचने लगे, बात तो ठीक कह रहे हैं, इसका क्या उत्तर होगा। मुझको ये ज्ञान आ गया, विज्ञान युग आ गया pumping set लगा दिया, कुआँ से टोंटी लगा दिया मरीज़ के मुहँ के पास, और प्यासा कुआँ के पास आने की जरूरत नहीं है, कुआँ प्यासा के पास चले गया। हम ऐसा तर्क पेश करने लग गये, उसमें वो निरुत्तरित हुए। ऐसा एक-दो बात को बताया, ऐसा कुछ ऐसे संयोग योग ऐसा हो कर के कुछ सिखाया, कुछ समझना पड़ा ऐसे हो कर के हम चल रहे हैं।

इसी आधार पर आज भी मेरा विश्वास है, मेरे लिए, हम किसी से मिलता हूँ, हमको कुछ ना कुछ प्रेरणा मिलता ही है। वृथा तो अभी तक कोई आदमी गया नहीं। जिसके साथ हम डाँटता भी हूँ, उनसे भी हमको प्रेरणा मिलता है, जिसके साथ हम प्यार करता हूँ, उनसे भी हमको प्रेरणा मिलती है। इससे ज़्यादा क्या बताऊँ, क्या बयान करूँ? इसमें क्या माना जाए? इसमें माना ये जाए, हमारे पात्रता की बात है, हम कैसा लोगों को स्वीकारता हूँ। छान करके जो अच्छा भाग है उसको हम स्वीकारते हैं। अभी का practice क्या है, कोई एक बात ख़राब हो गया, सब को पोत दिया, डामर। 99 ठीक रहा एक छेद मिल गया उसके ऊपर डामर पोत दिया। ऐसे में तो आदमी दरिद्र ही हुआ है। आदमी जात जो है दरिद्र हुआ, कैसा? इस ढंग से हुआ। माने ५१% से आगे क्यों नहीं बढ़ा, इसी आधार पर। एक दूसरे का छिद्र देखने की विधि से। उसको हमारे बुजुर्गों ने पता लगाया था, छिद्रान्वेषण ठीक नहीं है, ऐसा लिखा। छिद्रान्वेषण के बदले मे क्या किया जावे? हँस क्षीर न्याय, माने नीर-क्षीर न्याय को अपनाना चाहिए, गुण ग्राही बुद्धि होना चाहिए। ये सब उपदेश देकर के गए। गुण क्या है वो पूछा, उसको बता नहीं पाए। गुण के बारे में कहा, वही समाधि में जाओ चुप हो जाओ यही बताए। ये लोगों को पटा नहीं। ऐसा बात बन करके अपन कहीं ना कहीं भटकते रहे। पूर्वजों ने काफ़ी परिश्रम किया इसमें ईमानदारी से, ये विज्ञानी बेइमानी से परिश्रम किया। हमारा लोहार का चोट है ये इसका ज़िम्मेवारी मेरा ही है और किसी का नहीं है। हम से संसार के सात सौ करोड़ आदमी viva कर लें हम इसको प्रमाणित करूँगा। भड़ाम बेइमानी से शुरू किया, उसका क्या पहला प्रमाण, युद्ध सामग्री बनाने के लिए विज्ञानी शुरू किए। इनके इतिहास में लिखा हुआ है। इससे ज्यादा क्या प्रमाण होना। युद्ध सामग्री बनाने में जो प्रोद्योगिकी विधि आयी, उसमे पैसे की आवश्यकता है, पैसे वालों ने प्रोद्योगिकी बनाया। प्रोद्योगिकी बनाने से लोकव्यापिकारण हुआ, लोगों के लिए सुलभ हो गये। अभी जो जैसे wireless set को आप रखे हो, जिसको आप mobile कहते हो, इसको नेहरू के समय में बंगाल में एक polytechnic के एक प्राध्यापक इसको तैयार किया था। उस समय के प्रधान मंत्री के सामने ले गया, इसको आप governmetnt ले लो, या नहीं तो हमको patent करने दो या इसको बेचने दो। तीनो को अड़चन पैदा किया उन्होंने। वही चीज अभी आपके जेब में रखा है।

जिज्ञासाः अड़चन क्यों पैदा किया?

उत्तरः उन्होंने बताया की ये १००० किलो मीटर दूर से एक दूसरे से बात कराया, military के generals को बुलाया और पूछा कि ये क्या हमारे अनुकूल है। उन्होंने कहा की अनुकूल नहीं है, दुश्मन इसको पाएगा और उसके बाद हम पर ज्यादा हमला करेगा। आज ये मोबाइल सभी स्कूल के प्राइमरी तक के बच्चों की जेब में वो रखा हुआ है। उनको आज भी अच्छा आदमी मान कर हम आज भी याद करते हैं, जिनका विवेक इतना अच्छा रहा। एक उदाहरण दिया।

जिनका चाचा या दादा रहे, वो अपने में supreme court के legal consultancy का conference का वो president था, वो आदमी अपने पिता का श्राद्ध करने अमरकण्टक आया, उसने हमें ये बात बताया। अभी आज की स्थिति में क्या है सोच लो, ये 20-25 वर्ष पीछे की बात है, उस समय में mobile था नहीं, उस समय में बताया। अभी हर बच्चों के जेब में ये मोबाईल रखा हुआ है। अभी बच्चों के लिए क्या ये साधन है, क्या उनकी पढ़ाई का साधन है क्या? नहीं है। नाजायज प्रेम वार्ता का साधन है। आप जांच कर लीजिए, कुछ भी कर लीजिए, आपको मिलेगा यही। नाजायज शरीर संबंधों के लिए वार्ता के लिए है ये। सर्वाधिक वार्ता यही इसमें मिलेगा। अब इसको क्या करोगे?

पहले हमारे में इसका उपयोगिता कहाँ है, उसको हम यदि बोध कराए बिना कोई चीज़ को देते हैं, उसका जैसा आदमी है वैसा उपयोग करेगा। आदमी जात को संवेदनशीलता के जगह में से और कुछ सोचने समझने जीने के लिए तो अपन मार्गदर्शन कर नहीं पाए। कोई भी मिशन नहीं कर पाया। सभी मिशन अरबों खर्बों खर्च किया, काहे के लिए, अपना जात अपना धर्म को बढ़ाना। अभी सर्वाधिक लोग ये मानते हैं, जाति के साथ धर्म रहेगा। इसके पहले राजा के साथ धर्म रहेगा। तो पहले राजा जिस धर्म को अपनाया उसी धर्म में सारे देश के देशवासी होंगे, यह एक बार प्रयोग हो चुकी है। अभी क्या माना जा रहा है, हमारा जाति के साथ हमारा धर्म बढ़ेंगे, हमारा जाति और धर्म बढ़ने से हम धरती पर राज्य करेंगे। ये कुल मिला करके कथा भारत है। उसको हमारे में लिखा है वीर भोग्या वसुंधरा, ये लिखा है। ये सब हम सुने ही हैं। इस पे क्या निष्कर्ष निकाला जाए बताओ। कैसा किया जाए?

अब उसका विकल्प रखा- अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था। अखंड समाज सूत्र में मानव, मानवत्व, मानवीयता पूर्ण आचरण, मानवीयता पूर्ण व्यवस्था, मानवीयता पूर्ण समाज, चार चीज़ को अपन अध्ययन कराया। विकल्प हुआ कि नहीं हुआ ये? इसको हम विकल्प कहते हैं। इससे बचने के लिए सारा टंटपोली से बचने के लिए यदि हम कुछ कर रहे हैं, उसको हम विकल्प मानते हैं। ये सही है कि गलत है? पहले अभी अच्छे लोग सब एकत्रित हो गए हैं इसको निर्णय किया जाए, यदि सही है तो विकल्प को ठीक माना जाए। इसको हम विकल्प कहते हैं। कैसे पकड़ कैसे आ गया- तो अस्तित्व को हम व्यवस्था के रूप में देखा, व्यवस्था का मूल स्वरूप परमाणु अंशों से ही शुरू हुई है। परमाणु का गठन का बीज रूप परमाणु अंशों में ही निहित रही, तभी वो बिना किसी engineer, बिना किसी विद्वान, विज्ञानी, अज्ञानी, ज्ञानी के वो अपने स्वयं स्फूर्त विधि से परमाणु हुआ। इसके बारे में सहअस्तित्व का वैभव बताया, उसके आधार पर ये सब आगे चले। उसी प्रकार सभी जगह में जो मानव हुआ है, मानव में ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का बीज रखी हुई है। वो फलित कैसे होगा- जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित होने के बाद, देव चेतना शुरुवात होगी। देव चेतना फलित होने के बाद और दिव्य चेतना प्रमाणित होगा। ठीक है। इसको हम अच्छी तरह से देखा हूँ, समझा हूँ, मानव चेतना में जी कर देखा हूँ, वो बिलकुल पास में दिखता है देव चेतना, दिव्य चेतना। ठीक है।

जिज्ञासाः आपके ऊपर जो विकल्प फिल्म बनी है उसमे धारणा, ध्यान समाधि त्रयमेकत्र संयमः, ये जो संयम नाम का शब्द आया है, और आपने जो समाधि के बाद संयम किया उसको थोड़ा स्पष्ट करके बताइए, क्या चीज है वो?

उत्तरः उसमे कोई खास बात नहीं, थोड़ी सी ही बात है। थोड़ी सी बात क्या है, इसमे लिखा है "धारणा, ध्यान समाधि त्रयमेकत्र संयमः" यह पतंजलि ने लिखा है। यह पतंजलि योगसूत्र में लिखा है, पतंजलि लिखा है कि नहीं लिखा है हम नहीं जानते, वो योग सूत्र में लिखा है। इसको आप भी पढ़े हैं, मैं भी पढ़ा हूँ। इस संयम के बारे में पतंजलि योगसूत्र में विभूति पाद नाम की एक चीज़ है, उसमें संयम की सभी बात लिखा है। उन संयम की २०-२५ प्रकार का संयम लिखा है, उसको हमने पढ़ा है। पढ़ने पर जो हमको बोध हुआ, यह अज्ञात को ज्ञात करने का एक भी संयम विधि नहीं है। यह हमको बोध हुआ, बाक़ी को कैसा होगा हम नहीं जानते, मुझको जो बोध हुआ उतने भर को बता रहा हूँ। इतना भर पकड़ो, समाधि के बाद संयम होता है। क्यूंकि हमारे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था, दूसरा कोई रास्ता होता तो और कर लेते हम, दूसरा कोई रास्ता थी नहीं, उतने को स्वीकार किया। स्वीकारने के बाद बहुत अच्छी बुद्धि से सोचा क्या करना चाहिए, इसको उल्टा कर दो। ये क्या लिखा है- धारणा, ध्यान, समाधि, हम क्या लिखेंगे- 'समाधि, ध्यान, धारणा त्रयमेकत्र संयमः'। इस विधि से हम संयम किया, वो कहा हुआ विधि से हम नहीं किया, हमको कोई विभूति छुआ नहीं। विभूतियों को महापुरुष लोग जो ले गए उनके लिए नमस्कार, एक ऊदबत्ती, एक नारियल। इससे ज़्यादा हम कुछ कह नहीं सकते ना कुछ व्याख्या भी करना नहीं चाहते। तो उसको ले गये, वो सिद्धियाँ कैसा मिलीं हम तो देखा नहीं वही लोग बताएँगे। इसमें अभी बताने योग्य व्यक्ति एक ही है- वो सत्य साई बाबा। अभी और एक साई बाबा हो गया बताते हैं। वैसा कुछ कहते हैं लोग बाग, उन्ही से पूछा जाए, तो हमको इसका पता नहीं। हमने इसको उल्टा किया, धारणा, ध्यान, समाधि को उलटा किया, उलटा करने से क्या हुआ, उसका परिणिति में हमको अस्तित्व अध्ययन करने में आया। जैसा अध्ययन करने में आया, उसके बाद में हम उसको अनुभव पूर्वक प्रमाणित कर सकता हूँ, इस जगह में आ गये। प्रमाणित करने के लिए तैयारी किया, प्रमाणित करने के क्रम में पूरा दर्शन लिखना बना। उसको व्यवहार रूप देने में हम प्रयत्नशील हैं। ठीक कर रहा हूँ कि गलत कर रहा हूँ? इसमें ये पूरा विकल्प निकल गया। एक जगह में reject करना हमारे लिए कितनी बड़ी भारी उपकार हो गया। यदि उस झासा-पट्टी में जाते, सिद्धि की झासा-पट्टी में जाते, हम यहाँ तो नहीं आते। और ही कुछ कर लेता। क्या कर लेता? संसार को जितना वंचना किये हैं, उससे ज्यादा अच्छा वंचक हम हो सकते थे।

9

भाग – 9

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-9*

जिज्ञासाः सहअस्तित्व मूलक मध्यस्थ दर्शन को आपने प्रकट किया है, ऐसा विकल्प film में कहा गया है, इस मध्यस्थ दर्शन को आगामी फिल्म में किस तरह से दिखाया जाए या दिखाया जाना चाहिए कृपया बताएं?

उत्तरः आगे की जो एक चित्रमाला बनाना चाह रहे हैं, उसमें जो शुरुआत बात है, उसमें हम कैसे कुलशील में पैदा हुए और कैसे हमारे कुलशील की कट्टरपंथी थी, उसको स्पष्ट किया जाए और उसमें जो हमको तकलीफ़ हुई, पीछे की चित्रमाला में स्पष्ट की। अभी उसके बाद वो जो हम पाए हैं, उसको किस क्रम में प्रस्तुत किया जाए ये वाला बात है। उसके लिए ये भी बात पूरा हो गई है, पूरा दर्शन के क्रम में क्या प्रयोजन है, इसको सामान्य रूप में वक्तव्य के रूप में दिया है और लिखित रूप में दर्शन, विचार और शास्त्रों को प्रस्तुत किया है, मानव के कर कमलों में। उसको पहले हम एक सूचना के रूप में ये जो चित्र माला प्रस्तुत कर रहे हैं, उसमें यही होना चाहिए– इस दर्शन की सारभूत बात क्या चीज है (विकल्प के रूप में) वो थोड़ा सा अच्छे ढंग से प्रस्तुत हो। जिसको हमने एक प्रकार से रिकॉर्ड कर लिया है।

क्रम रखने का बात यही आती है– पहले इस दर्शन का प्रयोजन क्या है। रखा कैसा जाए उसके बाद हम अपनाए हैं, इसको एक लोक शिक्षा विधि से एक सूचना को पहले देंगे, क्योंकि प्रचलित है ही नहीं। प्रचलित मानसिकता से इसको सुना भी नहीं जा सकता, प्रचलित मानसिकता से इसको बोध किया भी नहीं जा सकता। इसको प्रचलित मानसिकता से सुनने से इसको सुना नहीं जा सकता है, उठ के चले जाना ही पड़ता है। प्रचलित मानसिकता से इसको बताया भी नहीं जा सकता। इसको प्रचलित मानसिकता को ताक में रख करके ही सुनना होगा और सुनाना होगा। इसमे हम सहमत हो पाते हैं, यदि सहमत हो पाते हैं, तब आगे की बात आती है। यदि हमारा सूचना से ये पता लगता है, मानव अपने में विश्वास अर्जन करना पहला काम है। इसके पहले विश्वास को कहाँ अटकाया, ले जा करके ईश्वर के साथ विश्वास जोड़ो, श्रद्धा करो। हम यहाँ क्या कहते हैं– मनुष्य के साथ विश्वास करो, श्रेष्ठता के प्रति श्रद्धा करो। इस आधार पर हम आगे बढ़ते हैं। मनुष्य अपने में सुख, शांति से जीना चाहता है, इसको हम पकड़े हैं। मानव मानस को इसको पकड़े हैं सुख, शांति पूर्वक जीना चाहता है। इसी के लिए सभी अच्छा कहलाने वाले, सभी बुरा कहलाने वाले कार्यों को किया। बुरा कार्यों से शांति का साधन नहीं हुआ, अच्छा कहलाने वाले कार्य से भी शांति का साधन नहीं बना। जीव चेतना विधि से जितना भी अच्छा-बुरा सोच पाया, निर्णय ले पाया, अच्छे से भी कोई परम्परा नहीं बनी, बुरा से भी कोई परम्परा बनना ही नहीं है, उस जगह में हम बैठे हैं। अभी भी अच्छा-बुरा सोचने वाले हैं ही, कई लोग अच्छा सोचते हैं, कई लोग बुरा सोचते ही हैं। ये जो अंतविहीन बुराई और अंतविहीन अच्छाई की ओर हम चले गए, जो हमारे पकड़ में आता नहीं। और भौतिक विज्ञान भी यही कहता है कि विकास एक अंत विहीन प्रक्रिया है। इसको भी कहा साधना कब तक करना, अंत विहीन– जब तक तुम भगवान में विलय नहीं हो जाओगे तब तक साधना करो। ये कह दिया। उधर भी ऐसा ही इधर भी ऐसा ही, आज भी वैसा ही है।

इसमें हमने क्या किया– अथा इति दोनों को खोज लिया। अथा क्या चीज़ है? सहअस्तित्व ही नित्य अथा है, सहअस्तित्व में प्रमाणित होना ही नित्य इति। निरंतर सहअस्तित्व में प्रमाणित होना ही निरंतर इति है और अथा क्या चीज़ है? सहअस्तित्व ही अथा, निरंतर अथा। आज के लिए अथा नहीं, निरंतर अनादि काल से अनादि काल तक अथा इति, ऐसा जोड़े हैं। ये बात यदि अपने को पटती है, इसको जाँचने के लिए अपने को लगाना ही पड़ता है। लगाने के लिए क्या दिया– पहले सूचना, उसके बाद उस पर होने वाले शंका समाधान, उसके लिए आप कार्य गोष्ठी करते ही हो, उसके बाद अध्ययन। अध्ययन आदमी कराना चाहिए। उसकी व्यवस्था अपने को देना है। अभी हम उस जगह में पहुँचे नहीं हैं। अध्ययन के लिए प्रेरणा शुरू हुई है। अध्ययन कराएगा कौन? उस बात के लिए हमको हर एक institution में आदमी को पहचानने की ज़रूरत है। समझा हुआ आदमी ही अध्ययन कराएगा, प्रमाणित आदमी ही कराएगा। अभी अमरकण्टक में गत मई माह के बाद, बिलासपुर के Technical college के principal हमारे पास आए थे। उस समय में उनसे बात हुई थी कि आप एक कार्यगोष्ठी में अमरकण्टक आओगे उसके बाद ही आपके institution में आना होगा हमारा। वो आदमी आया उन्होंने बताया कि हमारा institution में एक ऐसा व्यक्ति सदा-सदा के लिए हो जो कि हमारे institution में प्रबोधन भी करें और आस पास के गाँव में भी प्रबोधन करें, ऐसा आदमी की आवश्यकता है।उसकी आवश्यकता को कैसा आप पूरा करोगे? हम पैसा दे देंगे। पैसा देने के बाद तुम्हारे जैसा ही हो गया आदमी वो, मैं बोला। तुम जैसा नौकर हो वैसा ही वो भी हो गया। नौकर होने के बाद करेगा क्या भाई। उनका हाथ पैर मुँह चारों चीज बंद है। हमारे यहाँ बैल चलाते हैं फसल में, उसके मुँह में टुकनी बांधते हैं वो फसल नहीं चर पाएगा ऐसा मानते हैं। वो फसल ही ना चरे, अरे भई फसल जिस से पैदा हुआ वो चरेगा नहीं तो कौन चरेगा। ऐसा भी एक तर्क आ सकता है, उसके लिए तुम मुहँ बाँधे हो। उसी प्रकार से जो आप यदि मुहँ बांध कर रख लिया एक अच्छा आदमी को, हमारा एक आदमी घट गया। इससे कोई फ़ायदा होने वाला नहीं है, ये मैंने बोला। होना यह चाहिये कि ऐसा आदमी यहाँ यदि रहेगा वो स्वायत्त रहेगा। स्वायत्त कहलाने का क्या मतलब? वो अपना खेती बाड़ी लेकर तो नहीं आएगा, आप खेती-बाड़ी, गोशाला, कर्मशाला का व्यवस्था कर दो, अपने मन से वो उपयोग करेगा और खेती, बाड़ी, गाय, गौशाला, कर्मशाला आप ही का रहेगा। इस विधि से यदि आप सोच पाएँगे तो ऐसा व्यवस्था किया जा सकता है। वो आदमी आपके हुकुम के तामील नहीं करेंगे क्योंकि आप उनको कुछ नहीं सिखाए हैं। आप उनको कोई आदेश दे करके चला नहीं पाएँगे। वो जैसा program देंगे, हम जो समझाया हूँ उसको समझाने के लिए, उस program को आप अपने समय के अनुसार स्वीकारोगे, ये स्वतंत्रता आपकी है, ऐसा हम ने सुझाव दिया। उसमें उन्होंने दूसरा गोष्ठी किया उसमें उनके college के दो चार और professor थे उसमें वो सहमत थे। इसको किया जा सकता है, ऐसा कह रहे हैं, इसको आगे चल करके देखेंगे।

10

भाग – 10

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag*-10

जिज्ञासाः बाबा आपके दर्शन को समझने और समझ कर आचरण में ढालने के लिए क्या हमें भी साधना के उन्ही सोपानों से प्रक्रिया और स्तरों से गुजरना ज़रूरी है, जैसा आप गुजरे?

उत्तरः उसके लिए तो पहले इस बात को तय कर लिया कि ये साधना प्रक्रिया एक घटना विधि है, क्रम प्रक्रिया नहीं है, या परम्परा के रूप में प्रक्रिया नहीं है। यह घटनावादी प्रक्रिया है। किसी को समाधि हो सकता है, किसी को नहीं हो सकता। समाधि सबको होगा इसको कहा नहीं जा सकता। समाधि होता है इतना ही मेरा बयान है, सब को होगा ये मेरा बयान नहीं हैं। समाधि एक घटना के रूप में घटित होता है, इसको मैंने देखा है।

अब ये शिक्षण विधि हो नहीं सकती, इस आधार पर जो हमने अस्तित्व को अध्ययन किया है, उसको अध्ययन कराने की प्रक्रिया स्थापित किया। अध्ययन करने के लिए ध्यान देना पड़ता है, अनुभव के बाद ध्यान रहता है, ये सूत्र लिखा।

अध्ययन के लिए ध्यान देना पड़ता है, अध्ययन होता है तो अनुभव होता ही है, अनुभव के बाद ध्यान रहता ही है।

जिज्ञासाः बाबा 'अध्ययन' शब्द को एक बार और स्पष्ट करिए।

उत्तरः इसका सूत्र रूप यह है– हम भाषा से बात करते हैं, कुछ भी बात करते हैं उस भाषा का एक अर्थ होता है। भाषा के अर्थ में वस्तु के रूप में अस्तित्व में समझ में आना। अस्तित्व में वस्तु के रूप में समझ में आ गया, वो भाषा का अर्थ हमको समझ में आया।

उसका प्रमाण क्या है– पानी एक शब्द है, पानी एक वस्तु है। पानी एक शब्द से प्यास बुझता नहीं, पानी नाम की वस्तु से प्यास बुझता है, ये आपको पता है, कुत्ता को भी पता है। आप हम को तो पता ही है, कुत्ते को भी पता है, इतना generalise हो चुकी है। एक झाड़ को भी पता है, पानी से हरियाली स्वस्थ रहता है, जीवों को तो है ही, मनुष्य को तो है ही, इस ढंग से सबको ये विदित है। अब आगे की बात आता है न्याय, धर्म, सत्य, नियम, नियंत्रण, संतुलन, ये मनुष्य में ही समझ में आएगी, ये कुत्ते में समझ में नहीं आएगी, ये झाड़ में समझ में नहीं आएगी, ये बाघ में समझ में नहीं आएगी, ना भालू में आएगी, ना गाय में आएगी। मनुष्य में ही आने के लिए जो ये छह digit बताया– नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य इसको समझने का जो काम है, ये मनुष्य के पास ही है। इसी का नाम है "ज्ञान"। ये समझ में आता है तो उसी से जुड़ी हुई विवेक विज्ञान। ये नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य ये छः चीज़, इसमें यदि हम इसमें पारंगत हो जाते हैं तो उस स्थिति में ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्न होना बन जाता है। यदि ये बात बनता है कि हम नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक अस्तित्व में वस्तु को पहचान पाते हैं, ये वस्तु नियम पूर्वक है, ये वस्तु नियंत्रण पूर्वक है, ये संतुलन पूर्वक है, ये न्याय पूर्वक है, धर्म पूर्वक है, सत्य पूर्वक है– ये बात यदि

अनुभव में आ जाता है, ये अनुभव में ही आएगी, दूसरे विधि से नहीं आएगी, इसको हम दूसरा विधि से पा जाएं ये होगा नहीं। अनुभव में ही आएगी ये छः चीज। ये अनुभव में आ जाने वाले चीज को अस्तित्व में वस्तु के साथ सहअस्तित्व रूप में पहचानने की ज़रूरत है।

11

भाग – 11

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag*-11

जिज्ञासा: क्या ईश्वर का साकार रूप भी है, और क्या उसका साक्षात्कार संभव है, जैसा आपके समक्ष बनारस में हुआ?

उत्तर: ये बहुत अच्छी बात है, इस पर तो विचार होना चाहिए क्योंकि साकार निराकार की बहुत बड़ी भारी चर्चाएं हुई हैं। ये सम्माननीय तर्क भी है और विचार भी है। सम्मान करने योग्य तर्क भी है, इसके लिए समाधान है, वो भी उतना ही सम्मान करने योग्य है। ऐसा मेरा प्रस्ताव है।

उसमें हम ये बताना चाहते हैं कि अस्तित्व को यदि समझना है, इसमें साकार निराकार अलग-अलग होता नहीं। हमारा प्राण संकट- साकार अलग है, निराकार अलग है। हमारा अभी तक का जो प्राण संकट पूर्वजों ने हमको दिया है- ये साकार एक अलग चीज़ है, निराकार एक अलग चीज़ है। उसको हमने कैसा देखा है, साकार निराकार सदा-सदा एक साथ ही रहते हैं। यदि ये अच्छी तरह से समझ में आता है, इसमें हम ९९% समस्या का समाधान है। ९९% समस्या का समाधान है, यदि ये समझ में आ जाती है साकार निराकार अलग-अलग जिंदगी नहीं है। इसको मैंने वचन में लिखा है सहअस्तित्व अपने में नित्य वर्तमान है। साकार वस्तु के बिना निराकार का ज्ञान (पहचान), निराकार के बिना साकार वस्तु में ऊर्जा संपन्नता का स्रोत नहीं है। इतना लिखा है। इससे ज़्यादा क्या अक्षर में लिखा भी जा सकता है, लिखना चाहिए? आप सोचो। इतना बढ़िया लिखा है, इससे अच्छा कोई अच्छा आदमी के लिए लिखा नहीं जा सकता। इतना बढ़िया लिखा है, इस सूत्र को पचाने की ज़रूरत है। इसका मतलब क्या हुआ, निराकार साकार साथ में रहने के आधार पर ही निराकार को भी हम पहचानते हैं, साकार को भी पहचानते हैं। यदि एक साथ ना हों, दोनों पहचानना बनता नहीं। उसका गवाही क्या है? साकार को पहचानने गए विज्ञानी, पहचाना नहीं और निराकार को पहचानने गए ज्ञानी, वो पहचाना नहीं। ये गवाहित हो चुकी है। यदि सिर कूटना हो तो और बात, ठीक है, कूट लें, चूर कर लें। ये दोनों का गवाही हो चुकी है अस्तित्व में सात सौ करोड़ आदमी के सामने। यदि पिछले को ध्यान देंगे तो ये दोनों का गवाही हो चुकी है। विज्ञानी साकार को लेकर सत्य को खोजना शुरू किया और ज्ञानी निराकार को लेकर सत्य को खोजना शुरू किया, दोनो खोजते ही रह गए सबका खोपड़ी चूर हुआ, खाद हो गया, सत्य का अता-पता नहीं हुआ। आज तक कोई विज्ञानी "यह सत्य है" कहने योग्य नहीं है। कोई भी ज्ञानी यह सत्य है कहने योग्य, प्रमाणित करने योग्य एक भी ज्ञानी इस धरती पर नहीं है। इस धरती पर तो नहीं है। ये मेरी ज़िम्मेवारी से कह रहा हूँ। इसको हम अच्छी तरह से जाँच चुका हूँ, हमारे ज्ञान के परत पर पूरा का पूरा गुजर चुका है धरती का मानव। कोई भी मानव, घटिया, अच्छे से अच्छा बचा नहीं। मेरे चित्र माला में आया नहीं है, ऐसा कोई घटिया आदमी नहीं, अच्छा आदमी भी नहीं, बचा नहीं है। सबको हम देख चुके हैं। समाधि, संयम का यदि त्राण प्राण है वो ये ही है। उससे ये ताकत बढ़ी, ऐसा प्रस्तुत होने के लिए आवाज़ का ताक़त बढ़ी। प्रस्ताव का ताक़त भी बढ़ी। प्रस्ताव को हम विकल्प के रूप में रख सकते हैं, ये ताक़त बढ़ा। आज की स्थिति में कोई विकल्प प्रस्तुत कर दिया जाए ये

इतना आसान तो नहीं है। तो महत् पुण्य का ही प्रताप होगा ऐसा मैं सोचता हूँ। वो महत् पुण्य जो है किसी का आशीर्वाद ही है। उसको हम माना हूँ मानव पुण्य के आधार पर ये घटित हुई। मानव का ज़रूरत रहा इसी लिए घटित हुई। मानव पुण्य वहाँ तक विकसित हो चुकी है इसी लिए घटित हुई, ऐसा मैं कह रहा हूँ।

तो निष्कर्ष निकला कि वो अनिश्चित गम्य्स्थली की साधना करके इसको हम प्रमाणित करेंगे ऐसा कभी हो ही नहीं सकता, उसके लिए हम कोई उपदेश दे नहीं पाएँगे। हम ये निश्चित ठोक बजाऊ विधि से कहूँगा कि पूरा का पूरा सच्चाई को हम शब्द के रूप में प्रस्तुत किया हूँ किताबों में, आपके लिए सूचना है, उस सूचना के आधार पर आप में सत्य के प्रति जिज्ञासा होता है तो हम आपको अध्ययन कराएँगे, अध्ययन से आपको सत्य को बोध कराएँगे, बोध कराने के बाद आप में स्वयं ही उसको प्रमाणित करने की तीव्र संकल्प होगी, फलस्वरूप अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होगी। इसको हमने देखा है, ये सभी मनुष्य के साथ रखी हुई एक सुविधा है। कितना बढ़िया है। एक आदमी के साथ नहीं है ये, एक मूरख के साथ भी वैसा ही है, ज्ञानी के साथ भी वैसा ही है, विज्ञानी के साथ भी वैसा ही है। इससे क्या पता चला कि विज्ञानी को भी उतना ही ध्यान देना पड़ेगा। हम विज्ञानी हो गए हैं हमको कम ध्यान देने से हो जाएगा, झूठ है, यह होने वाला नहीं है, बल्कि और भी ज़्यादा ध्यान देना पड़ेगा। ज़्यादा confusion है तो आदमी को ज़्यादा ध्यान देना पड़ेगा। कम confusion वाला आदमी कम ध्यान देने पर भी चलेगा। अभी ज़्यादा पढ़ा, ज़्यादा confusion। ज़्यादा पढ़ा मानसिक रूप में ज़्यादा टुकड़ा बना रहता है और कम पढ़ा कम टुकड़ा बना रहता है।

जिज्ञासाः वो प्रश्न रह गया, आपको शिव का साक्षात्कार हुआ था, वो क्या घटना है?

उत्तरः शिव का साक्षात्कार हुआ होगा तो साकार ही का हुआ होगा। किसी बात का आप साक्षात्कार कहोगे वो सब प्रकृति ही है। प्रकृति का आकर बनाना हमारा मानसिक कला है। वो कला हमारा मन में बनता ही है और बिगड़ता भी है। तो हमको थोड़ा देर तक ज़्यादा रह गया इसलिए साक्षात्कार माना, इसको आप कोई भी नाम दे दीजिए। मनाकार स्थिर होने से हम साक्षात्कार मानते हैं, मनाकार स्थिर ना होने से हम साक्षात्कार नहीं मानते।

12

भाग – 12

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag*-12

जिज्ञासा: विकल्प एक परिचयात्मक film है, उसके दूसरे भाग में जो कि हमारी भविष्य की प्रस्तावित फिल्म है उसका विषयवस्तु का ढाँचा, उसका स्वरूप कैसा होना चाहिए?

उत्तर: उसके बारे में अपन चर्चा कर चुके हैं, इसके अंत में प्रयोजन के बारे में बात करेंगे, प्रयोजन इसका अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही निकलना चाहिए। समझदार व्यक्ति, समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार, ये पाँचों आयामों से सम्पन्न व्यवस्था और अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था प्रमाण परम्परा के रूप में ये प्रस्तावित होने की कथा लिखे हैं, वही चीज़ में ये चित्रमाला भी अंत होना चाहिए।

जिज्ञासा: जीवन विद्या के बारे में बोल दीजिए।

उत्तर: जीवन विद्या में जीवन ज्ञान के बारे में सूचना है, जीवन ज्ञान होने के मूल में सहअस्तित्व का सूचना है। सहअस्तित्व में ही जीवन है, सहअस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति प्रमाणित हुई है। अभी जागृति क्रम में मानव है, जागृति को प्रमाणित करना शेष है। जागृति के बारे में ये लिखा है जो जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित होने पर एक संक्रमण हुआ। इसको हम क्रिया पूर्णता नाम दिया है। इसमें हर व्यक्ति के पास सर्वतोमुखी समाधान करतलगत रहेगा। फलस्वरूप अखंड समाज में जीने का अधिकार होता है। अखंड समाज में जीने का अधिकार होने के आधार पर अखंड समाज व्यवस्था का परिकल्पना आता ही है। उसको दश सोपान विधि से बता दिया। उसको अभी एक गाँव में प्रमाणित करने के लिए प्रयत्न भी चल रहे हैं। इस आधार पर इसका प्रयोजन क्या है- अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था, परिवार में समाधान, समृद्धि प्रमाणित होना। तीन जगह के प्रमाण हैं, परिवार में, समाज में और व्यवस्था में प्रमाण। व्यवस्था में सार्वभौमता प्रमाणित होना है, समाज में अखंडता प्रमाणित होना है, परिवार में समाधान, समृद्धि प्रमाणित होना है। इसको यदि हम सही मान पाते हैं, उस पर प्रयोग करना शुरू करना चाहिए।

जिज्ञासा: आगामी film का शीर्षक क्या रखें?

उत्तर: वही “विकल्प” ही रखा जाए। विकल्प को change नहीं किया जाए। अभी विकल्प के बारे में बताया जाए किस-किस बात के विकल्प, उसको पहले float किया जाए। उसके पहले हम बताया हम किस घर परिवार कुलशील के हैं, हमारा परिवार कितना कट्टरपंथी रही, कितना उदारपंथी रही, कितना ज्ञान पंथी रही, कितना विज्ञान पंथी रही सारी बात को एक बार place किया जाए संक्षेप रूप में।

उसके बाद जैसे ही दूसरी स्थिति आती है, उसमें अपने को यहीं जाना है, कि हर समझदार परिवार, समाधान समृद्धि सम्पन्न होता है, इसका चित्रांकन होना चाहिए। उसका चित्रांकन अमरकण्टक में ही होगी। इसका चित्रांकन होता है उसके बाद दूसरी स्थिति आती है तो गाँव, धरती के पास जाते हैं उसमें अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था की सम्भावनाओं को हम प्रस्तुत कर सकते हैं। अभी सार्वभौम व्यवस्था थोड़े ही प्रमाणित हुआ है, अभी एक परिवार में समाधान समृद्धि को हम चित्रांकन कर सकते हैं। आपके पास वो source है।

13

भाग – 13

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-13*

अभी हम इस बात पर ध्यान दिए थे कि अभी आगे चल कर के संसार, जो समाधि संयम का जिक्र किया, उस पर लोग जाना पड़ेगा या नहीं जाना पड़ेगा। इस बात पर हम चर्चा किये। उसमें जितने भी मेरे अनुभव को बताया है, उसके अनुसार, मानव को एक घटना क्रम में है ये समाधि, संयम। घटना के रूप में घटित होता है और यह क्रम नहीं है। इस क्रम से ये घटित हो जाएगी, ऐसा Guaranty कुछ भी नहीं है। किसी को हो भी सकता है, किसी को नहीं भी हो सकता। अरबों वर्ष में भी नहीं हो सकती है, एक ही क्षण में भी हो सकता है। ऐसी अनिश्चयता जुड़ी हुई है इसके साथ। इसके मूल वस्तु में हमने यही पहचाना है, समाधि के लिए मूल तीव्र जिज्ञासा कुछ होने की आवश्यकता, वो अज्ञात से ही सम्बंधित बात होना चाहिए मेरे अनुसार। अप्राप्ति से संबंधित बातों पर समाधि होगी ऐसा हमारा विश्वास नहीं है। अभी संयम में जितने भी बात लिखा है पतंजलि में, अप्राप्त को प्राप्त करने की है। वो सिद्धि से सम्बंधित है, सिद्धि पाद ही लिखा है उसको। इन सबको देखने पर हमको लगता है कि अज्ञात को ज्ञात करने के लिये संयम किसी ने किया नहीं होगा। समाधि में जो होता है उसी को ज्ञान मान लिया, उसी को गुड़ खाया हुआ गूँगा कह दिया, ऐसा मैं मानता हूँ। हो सकता है किसी को अच्छे बोध हो गया हो, उसके लिए तो हमारा कोई आक्षेप भी नहीं है। प्रमाणित नहीं हुआ ये हमारा सत्यापन है। ज्ञान प्रमाणित नहीं हुआ। किताबों में लिखा है, बुजुर्गों ने भी मुझको जो बताया है ये अनिर्वचनीय है, अव्यक्त है यही बताया। जबकि ज्ञान जैसा पावन चीज़ सब जगह में समान रूप में होने की बात पहले कहा– "सत्यम ज्ञानं अनंतं ब्रह्म"। तो ज्ञान जब सब जगह में नहीं है तो और क्या रहेगा। इस बात पर हमारी जिज्ञासा हुई थी, उसका उत्तर हमें मिल गया। मिल जाने के बाद अभी हमारा सत्यापन यही है, कि मनुष्य को समाधि के लिए प्रयत्न करना कोई निश्चित ज्ञान के लिए नहीं होगा। निश्चित ज्ञान के लिए अध्ययन विधि ही होगा और परम्परा में से ही होगा। परम्परा के लिए अनुसंधान, शोध दोनो प्रसिद्ध हैं। शोधपूर्वक कुछ जोड़ा जा सकता है, अनुसंधान पर कुछ जोड़ा जा सकता है। ये मेरा अनुसंधान है, तीन बात की अनुसंधान की बात किया है– श्रम, गति, परिणाम के साथ हम गठन पूर्णता, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता को अनुसंधान रूप में प्रस्तुत किया है। यह ज्ञान हो जाने से मानव सटीकता से जी पाता है। इस ढंग से क्या हुआ– समझदारी के लिए, अध्ययन के लिए ध्यान देना पड़ेगा और अनुभव के पश्चात ध्यान रहता ही है।

जय हो मंगल हो कल्याण हो।

14

भाग – 14

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-14*

जिज्ञासाः अनुभव दर्शन क्या चीज़ है?

उत्तरः अनुभव दर्शन का यही मतलब है– जो समझ होता है, सहअस्तित्व में अनुभव होना। समझदारी का सम्पूर्णता है– सहअस्तित्व समझ में आना। सहअस्तित्व समझ में आने से क्या होगा– विकास क्रम अनुभव में आना, विकास अनुभव में आना, और जागृति क्रम अनुभव में आना, जागृति अनुभव में आना। यही अनुभव में आने वाली चीजें हैं। यही चारों जगह के अनुभव होने के पश्चात इसी के साथ नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य– ये छः चीज़ अनुभव में आता है। यह नियम पूर्वक है, यह सत्य पूर्वक है, ये सब हमको समझ में आता है। उसके लिए कहा है स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में पूरा का पूरा व्याख्यायित हो जाता है। तो इस ढंग से हम एक अच्छी स्थिति में आ सकते हैं कि समझदारी को यदि समझाने वाला परम्परा बनता है। अभी एक तरफ यांत्रिकता को समझाने वाली बात हुई, दूसरी तरफ़ एक रहस्य को समझाने की बात हुई परम्परा में। अभी हम सहअस्तित्व को समझाने के लिए तैयार हुए हैं और सहअस्तित्व में विकास क्रम विकास और जागृति क्रम जागृति को समझाने योग्य हम हुए हैं, ये अधिकार संपन्नता हमारे पास है। इसके आधार पर आदमी को पूरा समझदार बनाने की उम्मीद रखते हैं। इन उम्मीदों को हम प्रयत्न कर रहे हैं, उसमें कुछ दूर तक चले हैं, कुछ दूर चलना बाकि है। तो इस ढंग से अपना गति बनी हुई है। इसको पूरा का पूरा समझा ले जाने के बाद आदमी अपने में अनुभव मूलक विधि से ही जिएगा, दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है। अनुभव गामी विधि से हम यदि अध्ययन कराते हैं, अनुभव मूलक विधि से ही प्रमाणित होना बनता है। ऐसा विधि को हम अपनाए हैं। इसी को हम कहते हैं "अनुभव दर्शन"। अनुभव के रूप में जिया, जीने का नाम है दर्शन। दर्शन का मतलब बातचीत नहीं है, जीना दर्शन है। दृश्य के रूप में होना ही एक दर्शन का आधार है। दृश्य क्या है जीना है, होना है। मनुष्य के साथ होना भी है, जीना भी है। जीने के रूप में मनुष्य यदि मिलता है, होने के रूप में है ही, इसको हम पहचानते ही हैं, जीने के रूप में यदि प्रमाणित होता है, जागृति कहलाता है। इसके पहले यदि कोई चीज़ हो सकता है तो, मनुष्य समझ सकता है, यदि बता नहीं पाता है तो बात अलग है, उसको दृष्टा पद कहा। इस ढंग से विगत में कोई समझे होंगे वो दृष्टा पद में हो करके ही गये हैं। हमको प्रमाण रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाए हैं, यदि पहले ज्ञानी हुए होंगे, नहीं हुए हैं इसका तो दावा हम कर नहीं सकेंगे, अभी तक प्रमाण तो नहीं मिली थी। ज्ञान का प्रमाण अभी मध्यस्थ दर्शन ही प्रस्तुत किया है। ज्ञान दूसरों तक पहुँचाने की बात है। ज्ञान का मतलब व्यवस्था, अखंडता सार्वभौमता अक्षुणता इस प्रकार की वैभव सम्पन्न है ज्ञान। ज्ञान कैसा वैभव है– अक्षुणता, सदा सदा के लिए ज्ञान, और व्यवस्था के रूप में वैभव, अखंडता के रूप में वैभव। ये वैभव के तीन आयाम, ये अपने आप से आता है। अक्षुणता आता है तो सार्वभौमता आता ही है। सार्वभौम व्यवस्था आता ही है। समझदार परम्परा होने के बाद सार्वभौम व्यवस्था बनता ही है। अखंड समाज को बनाए रखने के लिए सार्वभौम व्यवस्था ही एकमात्र गति है। दूसरा कोई गति बनता भी नहीं। इस ढंग से हमने प्रस्तुत किया है। इस ढंग से कहाँ पहुँचे, अनुभव का मतलब क्या हुआ– अनुभव का मतलब सहअस्तित्व समझ में आना, अनुभव होना, प्रमाणित होना और सहअस्तित्व में ये

चारों चीज़ समझ में आना। विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति समझ में आना, अनुभव होना और प्रमाणित करना। इतना ही तो अनुभव दर्शन का मतलब है। इसके इस मतलब को हमने अनुभव दर्शन में स्पष्ट किया है। उसको अध्ययन करने से यह बोध हो सकता है।

जिज्ञासाः बाबा समाधानात्मक भौतिकवाद का क्या मतलब है?

उत्तरः समाधानात्मक भौतिकवाद के बारे में ये लिखा है– भौतिक, रासायनिक वस्तुएँ, ये समाधान के रूप में हैं, समस्या के रूप में नहीं हैं। पहला चोट ये है। कैसे समाधान के रूप में है– मनुष्य नियम, नियंत्रण, संतुलन के रूप में रहना के रूप में समाधान है। हर वस्तु अपने त्व सहित व्यवस्था है, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है। इससे पता लगता है, नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक है। इसका गवाही कहाँ मिला– त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी। लोहा में लोहत्व होता है, इसमें मनुष्य को कहीं भी संदेह नहीं है। यदि भारत में लोहा है, उसको अफ्रीका वाला भी विश्वास करता है। भारत के आदमी के साथ अफ्रीका वाला विश्वास नहीं करेगा, अफ्रीका के आदमी के साथ भारत वाला विश्वास नहीं करेगा। लंदन में रहने वाले कुत्ते का भारतीयों को भी विश्वास है कि यह कुत्ता है और लंदन के लोगों को भी भारत में रहने वाले कुत्ते का विश्वास है कि कुत्ता है। किंतु लंदन में आदमी है इसके साथ विश्वास हो, ऐसा हुआ नहीं। भारत में आदमी है, आदमी के साथ विश्वास हो ऐसा घटित हुआ नहीं। इसका प्रमाण इतिहास है। मार काट है, मार दहाड़ है। तो विश्वास करना अभी तक नहीं बना। यह तो देश देश की बात हुई, हमारा ही देश में एक आदमी से दूसरा आदमी अभी तक कितना विश्वास कर पाया है, इसको पूछोगे, इसको अध्ययन करोगे काफ़ी परेशानी है। उसके बाद इससे ज़्यादा दुखद कथा परिवार में कितना हम विश्वास किए। ये सब सोचने की मुद्दा है। ये मुद्दे पर सभी को कहीं न कहीं घायल होने की स्थिति बना ही है। इस सब को ठीक करने की विधि यही है, मनुष्य-मनुष्य के साथ विश्वास अर्जन होना अनुभव मूलक विधि से ही होगी। जब हम स्वयं में विश्वास कर पाते हैं तब परिवार में विश्वास होगी, परिवार में विश्वास होगा तो अड़ोस पड़ोस में विश्वास होगा, अड़ोस पड़ोस में विश्वास होगा तो देश धरती में विश्वास होगा, ऐसा विधि बनी हुई है। इस आधार पर भौतिक वस्तुओं को हम व्यवस्था के रूप में देखते हैं। हम स्वयं व्यवस्था के रूप में जीने के लिए प्रेरणा पाते हैं उसमें ज़्यादा से ज़्यादा यौगिक विधि से पाते हैं। एक दूसरे के साथ मिलना है, गुणात्मक परिवर्तन का आधार को यौगिक विधि से पाते हैं। तो उस आधार पर हम एक दूसरे के साथ मिल कर गुणात्मक परिवर्तन को कैसे प्रमाणित किया जाए उसके बारे में हम सोच सकते हैं, उसक लिए ही ये प्रस्ताव है। मानव-मानव के बीच मानवत्व नाम की एक महा सेतु है इसके आधार पर एक दूसरे को पहचान सकते हैं, विश्वास कर सकते है, व्यवहार कर सकते हैं, कार्य कर सकते हैं, व्यवस्था में जी सकते हैं, अखंड समाज के रूप में पहचान सकते हैं, उसके अनुसार सूत्र व्याख्या को प्रस्तुत कर सकते हैं। ये समाधानात्मक भौतिकवाद का मतलब है।

15

भाग – 15

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag*-15

उत्तरः व्यवहारात्मक जनवाद का ये मतलब है कि मनुष्य जो कुछ भी व्यवहार करता है, एक दूसरे के साथ कुछ ना कुछ मानता है, स्नेह करेगा या द्वेष करेगा। या तटस्थ, एक और भाषा प्रयोग किया है हमारे यहाँ बुजुर्गों ने। तीन भाषा प्रयोग किया। मैं समझता हूँ विरोध का ही एक भाषा है– तटस्थ। इस ढंग से मानने से स्नेह होगा नहीं तो विरोध ही होगा। स्नेह पूर्वक जीने पर हमको ऐसा लगता है एक दूसरे के बीच में विश्वास है। स्नेह यदि टूटा हुआ दिखता है तो हमारे परस्परता में विश्वास नहीं है। व्यवहारात्मक जनवाद को पूछा ना आपने ? तो व्यवहार में हम न्याय पूर्वक जीने के लिए संवाद करें, समाधान पूर्वक संवाद करें, समाधान पूर्वक जीने का संवाद करें। जब कभी भी हम संवाद शुरू करते हैं, समाधान को आधार मान कर समाधान के आधार पर कैसे हम जिएंगे इस बात पर हम संवाद करें। जैसा college में, school स्कूल में, बच्चों से संवाद कराया जा सकता है, व्यवहार में हम समाधान पूर्वक कैसा जीएँगे, इस मुद्दे पर संवाद करना। इससे क्या होगा ? इससे बच्चों में एक मानसिकता तैयार होगी धीरे– धीरे, कि संवाद से हमको ऐसा जीना है। हमको न्याय पूर्वक कैसे जीना है, नियमपूर्वक कैसा जीना है, नियंत्रण पूर्वक कैसे जीना है, और संतुलनपूर्वक कैसा जीना है और समाधान पूर्वक कैसे जीना है सत्यपूर्वक कैसे जीना है। ये छह मुद्दे पर संवाद करवाया जाए, इसका नाम दिया है व्यवहारात्मक जनवाद। व्यवहारात्मक जनवाद में हम व्यवहार करते समय में इन चीजों को कैसे प्रमाणित करेंगे इस पर संवाद करना, इसके लिए सलाह दिया है।

जिज्ञासाः आवर्तनशील अर्थ शास्त्र क्या है ?

उत्तरः मनुष्य अभी जितने भी प्राकृतिक वैभव को, यानी खनिज वनस्पतियों को उपयोग करता है, एक कच्चा माल के रूप में उस पर सोचने की मुद्दा है। दूसरा, मनुष्य के साथ व्यापार करता है। दो मुद्दा हुआ, एक मुद्दा खनिज वनस्पतियों को उपयोग करने का मुद्दा दूसरा मुद्दा व्यापार करने का मुद्दा, दो पर विचार करने की मुद्दा है। इसमें आवर्तनशीलता का क्या मतलब है। इसमें आवर्तनशीलता का मतलब ये है प्रकृति में उन्हीं वस्तुओं को हम उपयोग करें, आहार, आवास, अलंकार, दूरदर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण के रूप में उपयोग करने के लिए, जो पुनः जितना हमने उपयोग किया उतना प्रकृति उसको बनाता हो। सबसे अच्छा बात वही है। अभी वनस्पतियों में तो ये पता लगता है, हम कुछ भी उपयोग करेंगे वो multiply होता रहता है, वो बनता रहता है, ऐसा पता लगता है। जबकि खनिजों को हम उपयोग करते हैं वो पुनः बन रहा है ऐसा हमको प्रतीत नहीं होता। जैसा– लोहा उपयोग करने के बाद लोहा बन रहा है ऐसा कुछ प्रतीत नहीं होता। वैसे ही ताम्बा, सोना जितने भी धातुएँ और विकिरणीय धातुएँ हैं। विकिरणीय धातुओं को हम कैसे भी प्रयोग किया वो पुनः उतना बन रहा है उसका प्रमाण अपने को नहीं मिल रहा है। वैसे ही सभी धातुएँ हम उपयोग करते हैं उतना बन रहा है उसका गवाही हमारे पास नहीं है। हम ये कह रहे हैं ये जो नहीं भी मिल रहा है ऐसे धातुओं के बारे में धरती अपने गर्भ में ना रखते हुए बाहर कर दिया है, जैसा अपने पेट से बाहर कर

दिया टट्टी पेशाब के रूप में, वो तो खाद होना ही है, उसको हम उपयोग करें, धरती के surface में मिलता है उसको उपयोग करें। धरती के भीतर से निकालने के कार्यक्रम को बंद करे दें। ये अपने को आवर्तनशीलता लगती है। और दूसरा लोहा जैसा सोना जैसा वस्तु को हम बारम्बार उपयोग करते रहें। जैसा सोना है उसको सही ढंग से यदि सोचा जाये कितने भी बार बनाओ वो सोना ही रहेगा। लोहा भी वैसा ही रहेगा, कैसा भी उपयोग करो, लोहा ही रहेगा इस ढंग से हम लोहा को कई बार उपयोग कर सकते हैं। लोहा में कीट लक्षण मानते है, उसमें कीट लगता है, वह थोड़ा सा कम होता है। सोना में तो कीट प्रवृति कम है न्यूनतम है। सोना में चाँदी में कम है, लोहा में कुछ ज़्यादा है माना जाता है। उसके बावजूद भी लोहा को कई बार हम उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार की प्रवृति पैदा करना चाहिए। लोहा किस के लिए पैदा किया- रेल पटरी के लिए प्रधान रूप में और पक्का मकान के लिए, cement वाला सड़क के लिए उपयोग किया। प्रधान बात यही है, पक्का मकान चाहिए, लोहा चाहिए, पक्का सड़क चाहिए, लोहा चाहिए रेल पटरी चाहिए, लोहा चाहिए। तो इस प्रकार से हम रेल को दौड़ाना है रेल पटरी चाहिए, इस बात को पहचाना है। वो बड़ा अच्छा है। ऐसे बना कर रखने के लिए जो रेल पटरी घिसते हैं उसको पुनः रेल पटरी बना लिया जाए। वो कर नहीं रहे हैं। उसको side में रख देते हैं वो कीट पकड़ करके मिट्टी होता है, उसका कोई उपयोग नहीं कर रहा है। कर रहा है तो कोई उठा कर कबाड़ में दो पैसे में बेचता है और ख़रीदने वाला उसका कुछ भी उपयोग कर लेता है। उसका उपयोग निश्चित होने की आवश्यकता है। उसको पुनः रेल की पटरी बनी हुई चीज़ पुनः रेल की पटरी ही बनकर रेल के पास चली जाए। अभी जितना भी धरती पर जो लोहा को पाया जाता है, कई जगह में पाया जाता है। वो धरती पर पाया जाने वाला लोहा कम से कम हज़ार दो हज़ार दस हज़ार वर्ष तक पर्याप्त है या और ज़्यादा ही चलने वाला है यदि आवर्तनशीलता मिलाते हैं, बहुत दिन तक चलने वाला है। और मानव यदि मानव चेतना में परिवर्तित होता है, पक्का मकान की ज़रूरत नहीं है। अभी सारा पक्का मकान की सोच केवल अमानवीयता के आधार पर पक्का मकान का सोच है। मानवीयता के आधार पर पक्का मकान वाला सोच भी धीरे-धीरे शिथिल होगी। पक्का सड़क, cement का रास्ता बनाना, ये भी एक प्रकार की आदमी की बड़ी उम्मीद है क्योंकि लोहा हमारे पास बहुत है, इसलिए हम पक्का सड़क बना लेंगे। ऐसा भी सोचते हैं। तो उसका भी कई देशों में प्रयत्न हुई है और हमारे देश में भी कहीं-कहीं हुआ होगा। मैसूर और बैंगलोर के बीच में cement की सड़क बनायी है, ये सारे बात देखा ही है, उसमें reinforcement लगता ही है। ये सब बात को देखा है। इसको आवर्तनशीलता में लाने की ज़रूरत है। लोहा जब अपने में त्राणहीन होता है तो उपयोगी नहीं हो पता है, उस लोहा को पुनः लोहा बना कर पुनः उपयोग करने की व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें आवर्तनशीलता है ना। जैसे हम जंगल से बांस लाए काग़ज़ बनाए इतना सब काग़ज़ बटता है, दिन में हजारों टन, लाखों टन पेपर बटता है पूरी धरती में, करोड़ों टन कहने से भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वो सारे पेपर को निश्चित रूप से वापस लाने की बात होना चाहिए। उसको पूरा पेपर को वापस बनवा करके उसको पुनः reuse करना चाहिए। पुनः उसके लिखा हुआ स्याही को खतम कर दिया, पुनः pulp ही है वो, पुनः काग़ज़ बना लिया, कर लिया उपयोग। इसको आसानी से कर सकते हैं कि नहीं? recycling कर सकते हैं कि नहीं? कर सकते हैं। इस प्रकार से बांस काटने वाला जंगल काटने वाला आवश्यकता कम होगा। उसके बाद आता है जंगल से ईंधन, इस प्रवृति को कम करना। उसके लिए क्या है सूर्य ऊर्जा। सूर्य ऊर्जा को सस्ता बनाना, घर-घर में सूर्य ऊर्जा को पहुँचना। सूर्य ऊर्जा से खाना बनना, और घर का प्रकाश होना। ये दो चीज़ के लिए बहुत अच्छी तरह से प्रयोग कर ही सकते हैं। उसी के सहायता में गोबर गैस भी प्रयोग कर सकते हैं। ये दो के आधार पर अच्छे से कर सकते हैं। उसके साथ-साथ जहाँ कहीं भी वायु तरंग रहता है, उसमे वायु तरंग के आधार पर भी यहाँ मदद कर सकते

हैं। उस ढंग से ऊर्जा संतुलन के ओर ये तीन प्रकार के स्रोत को प्रयोग करने की आवश्यकता है। यदि ये कर पाते हैं, इसमें आवर्तन शीलता है। हवा चला पुनः भी चलता है। गोबर गैस-आज गोबर डाला, गैस बना। पुनः डालेंगे, पुनः बनता है। ये आवर्तनशील है। उसके बाद सूर्य ऊष्मा, सूर्य ऊष्मा सदा-सदा perennial है वो ठंडा होते तक।

एक आदमी लिखा है आज के पेपर में ५० करोड़ वर्ष के बाद सूर्य बढ़ने शुरू करता है और बढ़ते-बढ़ते सूर्य अपने में धरती को निगल लेगा, ये आदमी पढ़ा। जबकि कितना अरब वर्ष से सूरज वहाँ बैठा है, मानता है वो पता नहीं। ऐसा सिर पैर बिना बात बहुत सारे सुनते हैं हम। ये विज्ञानी ही कहते हैं। कोई विज्ञानी ही कहा है। ये सब बातें सोचने की मुद्दा है। सूर्य कितने भी अरब वर्ष से हो या लाख वर्ष से हो वो यथावत् बना ही है।

उसको ऐसा माना जाता है, यही Fission fusion वाले, उस धरती पर आयी जो civilisation है, उसको खतम करके, सूर्य धरती के रूप में रहा हुआ स्थिति को वो महताब जलाकर चले आए धरती में, अभी वही काम यहाँ करने के लिए तैयार बैठे हैं। गवाहित है कि नहीं है? ये स्पष्ट है कि नहीं है? ऐसा सोचने से क्या तकलीफ़ है? ये जैसा एक आदमी लिखा है उसको पढ़ते ही हैं, ऐसा सोचने से क्या तकलीफ़ है? ऐसा भी सोच सकते हैं ना। गवाही तो अपने पास नहीं है ना उनके पास है जो लिखा है। वो भी कल्पना करते हैं, हम भी कल्पना कर सकते हैं। ऐसा बात हो सकता है।

जिज्ञासाः सूरज क्या कभी ठंडा नहीं होगा क्या?

उत्तरः ठंडा होने की ओर जा रहा है कई लोग लिख चुके। आज कोई लिखा है सूरज बढ़ने लगा है इतने वर्ष बाद धरती को निगल लेगा। मैं कह रहा हूँ ठंडा होगा। और पहले से अभी सूरज अपने में किसी न किसी micro level में ठंडा हो चुका है। जितना विस्तार में उसका gases था(सूर्य बिंब में) वो थोड़ा सा १-२ इंच कम हो चुका है। ऐसा मैं कल्पना करता हूँ, यह धीरे-धीरे होकर के भारी परमाणु बनेगी। उसके बाद गठन होना होता है स्वाभाविक है। ये सभी धरती का हालत है। अभी जैसा ब्रहस्पति पूरा का पूरा material हवा के रूप में ही है। अभी जो एक धूमकेतु उसमें घुसा ना वो भी धूली था ये भी धूली था सब मिल लिए। बात पूरा हो गया। पहले prediction किए इसमें से इतना ऊर्जा निकलेगा, इतना ऊर्जा निकलेगा वो तांडव होगा, वो होगा, ये होगा। वो सब हो गया, उसके बाद चूँ चपट नहीं किए।

16

भाग – 16

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-16*

जिज्ञासाः बाबा जी मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान से आपका क्या आशय है?

उत्तरः मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का मतलब है कि अभी हम जीव चेतना में जी रहे हैं, मानव चेतना में जीना चाहिए। मानव चेतना में जीना चाहिए ये तो उपदेश हुआ। मानव चेतना क्या है, कैसा है, कैसे हम मानव चेतना में सम्पन्न हो पाएँगे, इसको स्पष्ट किया है।

जिज्ञासाः पहले जीव चेतना क्या है इस को थोड़ा स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः राक्षस मानव और पशु मानव के रूप में जीना जीव चेतना है। राक्षस मानव का क्या मतलब है– नोचना, काटना, बगनखा लगाना यही राक्षस मानव का काम है, और पशु मानव का नाम है नोचवा लेना। उसी के साथ-साथ धरती को भी नोचना। धरती को भी घायल किया, ये राक्षस मानव नहीं तो क्या है। (हम तो उनको पूजा करते हैं) पूजा कर रहे हैं, फूल माला पहनाते हैं। इससे पता लगता है पशु मानव सदा-सदा क्रूरता को पूजा करता आया। क्या बताया– अभी तक यदि किसी का पूजा हुआ है, क्रूरता का पूजा हुआ।

जिज्ञासाः यदि धरती को घायल करके जो भी संसाधन निकाले गए हैं, यदि नहीं निकालते तो उसकी पूर्ति कैसे होती, संसार में विकास कैसे होता?

उत्तरः अभी उसी के ऊपर बात कर रहे हैं, ऊर्जा संतुलन। क्या है ऊर्जा संतुलन– चूल्हे में भोजन बनाना, लोहा गलाना, इसके लिए हमको ऊष्मा चाहिए। उसके बाद हमको जितने भी मुर्दा हैं, आदमी मर जाता है उसको जलाना है, मिट्टी को जला करके ईंट, पत्थर, मटका बनाना है, मिट्टी को जलाना और आदमी को जलाना, इसके लिए भी हमको ऊष्मा चाहिए है। ये हुआ चार पैर, इन चार पैर में ऊष्मा चाहिए। ये हमारा मानव परम्परा में practice में है। ये चाहत को तो हम पैदा कर दिया, उसके लिए खनिज तेल उपयोग किया, खनिज, कोयला उपयोग किया और विकिरणीय पदार्थों को उपयोग किया। इसमें से विकिरणीय पदार्थों को उपयोग किया उससे जो ईंधनावशेष हुई, खनिज तेल से जो ईंधनावशेष हुई, और खनिज कोयला से जो ईंधनावशेष हुई, वो सब प्रदूषण के रूप में मनुष्य को उपलब्ध हो गया। ये सब किस विधि से आयी? ये सब विज्ञानियों से बनाई। विज्ञानियों के विधि से आयी। ये सब किया, कोई भी विज्ञानी इसका ज़िम्मेवारी स्वीकारने को तैयार नहीं। अब क्या करोगे? किसको ज़िम्मेवार ठहराया जाये? किंतु इसको उपयोग करने में हर मनुष्य कृत, कारित, अनुमोदित विधि से अपराधी हो चुका है। इसमें कोई आदमी बचा नहीं। इसको देखते हुए हर व्यक्ति कहीं ना कहीं अपराध के पक्षधर हुआ। इसीलिए इस अपराध का प्रायश्चित सभी कोई भोगने योग्य हुआ। फलस्वरूप क्या हुआ-प्रदूषण सबके लिए वरदान रूप में मिल गया। उसके

बाद जो परेशानी आयी धरती बीमार हो गयी। अभी मुख्य बात, ये सब करतूत किया हमने अपराध कार्य, धरती के साथ जो अपराध किया उसके फलन में धरती बीमार हो गयी। बीमार हो गयी तो बुख़ार आ गया। बुख़ार आ गया तो हम लोग कहते हैं एक पान, एक काली मिर्ची, एक तुलसी का काढ़ा बना कर पी लो। आदमी ठीक हो जाता है, किंतु धरती को क्या पिलाया जाए। बड़ी मुश्किल की रोग। उसके लिए सोचा गया धरती के साथ पहले अपराध को तो छोड़ें। इसके साथ हम जितने भी अपराध कर रहे हैं तीन विधि से। विकिरणीय पदार्थ निकालना इसका उपयोग करना, ईंधनावशेष, pollution बनाता है। इसके साथ साथ जो परीक्षण करने के लिए भूमि के अंदर करते हैं, समुद्र में करते हैं, हवा में करते हैं इसका भी ईंधनावशेष, शेष रह जाता है। शेष रह करके पूरा का पूरा धरती को परेशान किया। तो ये सब तीनों मिलकर जब आ गयी है इसका practice छोड़ देने का अपना अपील है। इस अभ्यास को छोड़ें। कैसा छोड़ेंगे– सब को क्या बिजली नहीं चाहिए? पूछा जाए तो सभी को चाहिए, तो अपराध कर रहे हैं। अपराध सभी कर ही रहे हैं, इसी विधि से रोशनी चाहिए इस विधि से हम अपराधी हुए। हम उस जगह के हैं, हमारे खेत के मेढों में अरंड पैदा करते रहे, घर में हम तेल बना लेते थे। अरंडी का तेल– उसको शरीर में भी लगाते रहे, उसका दिया भी जलाते रहे। उस तेल को हम अभी छोड़ दिया, हमारा गाँव छोड़ दिया। हमारे गाँव में, हम लोग अभी गये थे, सबके घर में तो बिजली है। वहाँ एक बात की अवशेष मिला, वहाँ उस गाँव में वेद ध्वनि जीवित है कि नहीं जीवित है हम सशंकित थे। हम लोग गये तो पता चला कि वेद ध्वनि तो जीवित है। एक ही बात मिला है अभी, बाकी बात हम कहाँ देखा है। और बाकी बातों पर जाना शेष ही है। तो अभी बताया, हम लोग सन् चालीस तक रात्रि समय में अरंडी का तेल का दिया जलाते थे, उस के बाद मिट्टी का तेल आया, मिट्टी का तेल आने के बाद बिजली आयी। हम देखे ही हैं, ये बात ऐसा बनी हुई है।

तो इस ढंग से घर-घर, गाँव-गाँव, आदमी-आदमी हर आदमी प्रकारांतर से अपराधी होता गया। तो हम लोग किसी भी प्रकार से पराधीन नहीं थे। रोशनी में हम स्वावलंबी, अनाज में स्वावलंबी, दूध में स्वावलंबी, दही में स्वावलंबी, घी में स्वावलंबी, कपड़े में स्वावलंबी। कैसे– हम लोग सूत कातते थे, और हमारे यहाँ जुलाहा बुनकर देते थे। हमारा खेत में जो होता था, वो पदार्थ उनको देते थे। पूरा गाँव देने के बाद हम अकेले में जितना होता था उससे ज़्यादा उनके पास हो जाता था। इसको हम लोगों ने जी कर देखा है, कर के देखा है, कोई परेशानी नहीं है। यदि अभी कहो हमारा गाँव में वही अरंडी का तेल में क्यों नहीं जीते हो, कहने पर कोई तैयार नहीं होगा। आदमी को बिजली ही चाहिए, इसमें ज्यादा सुविधा महसूस हुआ होगा तभी ना मनुष्य अपनाया है। इसको स्वीकारा जाए।

इस सुविधा को कैसे बनाया रखा जाए बिना धरती को घायल किए, ये बात आ गई। उसमें दो तीन उपाय निकल गए। एक प्रवाह बल नाम की चीज है, जिसको अभी तक उपयोग नहीं किया गया है। प्रपात बल को उपयोग किया, प्रवाह बल को उपयोग नहीं किया है। प्रवाह बल को उपयोग करने की technique develop किया जाए।

जिज्ञासाः ये प्रवाह बल का क्या आशय है?

उत्तरः अभी तुम किसी भी नदी में जाओगे, वह बहता है, उसका नाम है प्रवाह। उस प्रवाह में आपका पैर को धकेलता हुआ मिलता है, उसी को उपयोग करो। प्रवाह बल पर अपने को ध्यान देने की ज़रूरत है। हर प्रवाह में बल है। किस ओर प्रवाहित होता है उस ओर खींचने का बल है, ऐसे दिखता ही है। लकड़ी डालते हैं उसी ओर भागता है, उसका

विपरीत दिशा में भागता नहीं है। ऐसा सभी नदी–नाला में देखा गया। तो इसको प्रवाह बल नाम दिया। उसको यदि हम ठीक ढंग से उपयोग कर पाते हैं, जैसे ब्रह्मपुत्र नदी चल रहे हैं, उस ब्रह्मपुत्र नदी अकेले में यदि एक हजार किलोमीटर में उपयोग किया जाए, ये भारत जैसे चार देश के लिए बिजली पूरी होता है। बाकी बिजली का तार का जाल तो बना ही है, आपको नया लगाना नहीं है। तो हज़ारों turbine चलेगी, उस सब को मिलाने की विधि है, उसको भेजने की विधि है, उसको वितरित करने की विधि है, ये सब में experts हो चुके हैं, ये engineering पढ़ा चुके हैं, धरती में ये कारीगरी तैयार हो चुकी है। तो आसानी से हम इस को कर सकते हैं।

उसके बाद आया हवा का तरंग। हवा तरंग समुद्र के किनारे ज़्यादा दिखती है। समुद्र के किनारे हवा तरंग को यदि उपयोग करना शुरू किये, जैसे- अभी रामेश्वरम में कुछ जगह में लोग अपने खेत में केवल हवा तरंग का उपयोग करते हैं उससे बिजली तैयार करते हैं अपने घर में तो जलाते ही हैं government को भी देते हैं, madras government को बैचते हैं। उसको अब केवल पूर्वी पश्चिमी समुद्र किनारे हवा तरंग से चलने वाली Dynamo के बारे में हमें अच्छी तरह से शोध करके वो install करने की ज़रूरत है। उसके लिए क्या है, ये जितना भी सड़ा–गला लोहा है सब उपयोगी है। जो अभी बताते थे जितना भी रेल पटरी के किनारे सड़ रहा है वो सब इसके लिए उपयोगी है। खम्बा तो खड़ा करना है, खम्बा के ऊपर एक तराज़ू रखना है। दोनो तरफ़ भार समान होना है, काँटे पर बैठा देना है, काँटे पर बैठा दिया तो पंखा घूमता रहता है। पंखा घूमता रहता है तो उसमें जो बल पैदा होता है, उस के आधा बल को किसी भी यंत्र को चलाने में उपयोग कर सकते हैं, उस विधि से उपयोग होता है। जितना बल उस पंखे में तैयार होता है हवा से, उसके आधे बल को किसी भी यंत्र में प्रयोजित कर सकते हैं। इस सिद्धांत से काम कर रहे हैं। तो इस प्रकार से ये काम कर रहे हैं, इस तरह हवा के तरंग से भी विद्युत ऊर्जा को पाया जा सकता है, वो already प्रमाणित है।

तीसरा बात है हर गाँव में गौशाला, गौशाला की व्यवस्था, गोबर गैस पैदा करना और जितने भी street lights हैं गोबर गैस से चलाना या सूर्य ऊर्जा से चलाना, और घर में रोशनी सूर्य ऊर्जा से। इतना प्रावधानित करना हो सकता है कि नहीं। ये जितना भी कबाड़ कारखाना कर रहे हैं, भ्रष्टाचार के नाम से कर रहे हैं यदि इसको बदल दें और यदि सद्बुद्धि हो, ये आराम से किया जा सकता है।

ये तीन ऊर्जा स्रोत हो गये। इन तीन ऊर्जा स्रोत से हम अच्छे तरह से, मुर्दा जलाने से लेकर लोहा गलाने तक पहुँचते हैं और मिट्टी जलाने से लेकर, चूल्हा जलाते तक पहुँचते हैं। चूल्हा भी जलाया जा सकता है और मिट्टी भी जलाया जा सकता है। इसी से आवागमन के लिए ईंधन हो गए। चाहे सूर्य ऊर्जा से बने चाहे प्रवाह बल से बने। इन दोनो से बनी हुई बिजली को हम गाड़ियों में उपयोग करने के लिए battery system बना लें। वो बैटरी २००, ४००, ५००, १००० किलोमीटर में बदलता है ऐसा arrange हो ही सकता है उतनी–उतनी दूर में depot बना लिया, वहाँ- वहाँ मिल जाएगा। अभी कर ही रहे हैं, गैस को तो कर ही रहे हैं। रायपुर में तो एक गैस भरने वाला center आ ही चुका है। भिलाई में एक बैठने ही वाला है। ये सब बात बन ही रहा है। गैस को उपयोग करना ठीक है। अभी ईरान से जो गैस ला रहे हैं इसी विधि के लिए है। अभी आंध्रा में मुंबई से आयी हुई gas line जो है वहाँ एक power plant चला रहा है। आंध्र में पूरा power plant gas से ही चल रहा है। इस प्रकार से प्रयोग तो बहुत कुछ किए हैं, किंतु लाभोन्मादी विधि से। gas विधि से घूस खोरी भ्रष्टाचार कम हो जाएगी, सूर्य ऊर्जा विधि से कम

हो जाएगी, हवा तरंग से ऊर्जा पैदा करने से कम हो जाएगी। ये सब पिचकाट जो है ना आदमी को अपने में सिर पैर के बिना बना रहा है। पिचकाट यहाँ का स्थानीय भाषा है जिसका अर्थ है खिच-खिच करना।

जिज्ञासाः बाबाजी, हम बात कर रहे थे जीव चेतना से मानव चेतना में आने के लिए मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान।

उत्तरः अभी हम बात किए जीव चेतना में हम धरती को तंग किया। मानव चेतना आने से धरती को तंग करना बंद होगी। उसका विकल्प आएगी। विकल्प का करीब-करीब प्रयोग हो चुका है, यदि नहीं हुआ होगा तो हो जाएगा।

उसके बाद आता है मनुष्य जो समझने का विधि है, ये समझने का विधि पठन विधि से हम करते हैं। प्रयोग विधि से, यंत्र विधि से हम विद्वान मानते हैं अभी। अभी तक यंत्र विधि से हम विद्वान मानते है और पठन विधि से विद्वान माना है। वेद कालीन से भी पठन विधि से ही विद्वान माना, अभी यंत्र विधि जुड़ा हुआ है। पठन और यंत्र के आधार पर हम विद्वान मान रहे हैं। उसके स्थान पर हम व्यवहार विधि से विद्वान को पहचानना शुरु करेंगे। इतनी ही बात। ये विकल्प है।

उसके बाद अध्ययन विधि में जाते हैं, जब अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित होना बनता है। यह विकल्प है। अब उसके बाद व्यवहार विधि से हम जब प्रमाणित होना शुरू किया, हम व्यवस्था में होना पाया जाता है। व्यवस्था, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या ही है। उस ढंग से सार्वभौम व्यवस्था में जीना आ जाता है। मानव समुदाय चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित हो गया। सारा अपना-पराया का दीवार खतम हो गया, फलस्वरूप आदमी सुखी हो गया। इस ढंग से सर्वमानव सुखी होने की, शुभ होने की, निरंतर आनंदित रहने की, सुख शांति पूर्वक जीने की मार्ग प्रशस्त हो गया। इसका नाम है जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तित होना। अभी भय से पीड़ित रहता है आदमी, शंका से पीड़ित रहता है, विरोध से पीड़ित रहता है, द्वेष से पीड़ित रहता है इस सब से मुक्ति पाने का दिन आता है, इसका नाम है मानव चेतना। इस ढंग से मानव चेतना की महिमा हमको समझ में आता है। उसमें परिक्षण करना अपने ही प्रयत्न से होगी दूसरे किसी से होगा नहीं। दूसरे किसी के करने पर हमारा तो होगा नहीं। इतना ही हो सकता है कि उन्होंने प्रमाणित किया है तो हम भी कर सकते हैं। ऐसा अस्मिता शुरू हो सकता है। इस ढंग से एक दूसरे के साथ प्रेरणा बनती है।

17

भाग – 17

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-17*

जिज्ञासा: आपके विचारों में ये ईश्वरवाद और विज्ञान ने मानव को क्या दिया?

उत्तर: ईश्वरवाद ने रहस्य दिया, विज्ञान ने अपराध दिया। विज्ञान क्या दिया, अपराधी अपना छाती को हर दिन दो सेंटीमीटर मिलाने की विधि दिया और ईश्वरवाद ने दो सेंटीमीटर रहस्य में दबने के लिए विधि दिया, रहस्य में दबते जाओ, माने डूबते जाओ ये दिया, विज्ञान ने अपराध करते जाओ करते जाओ कहा। बहाल कर दिया अपराध को। और क्या चाहते हो? विज्ञान ने ये किया। इसका पहला प्रमाण क्या है? धरती के साथ अपराध। विज्ञान विधि से ही धरती के साथ अपराध हुआ। कोई विज्ञानी मानने को तैयार नहीं है, विज्ञान से ये हुआ, ये घोषणा करने की हिम्मत नहीं है। गला सूखता है, छाती फटती है, हृदय बैठ जाता है, हृदय स्पंदन बैठती है। तीनों काम होता है। विज्ञान युग के बाद ही धरती बर्बाद हुई। उसके पहले धरती में जंगल को बर्बाद करने की परम्परा थी, उसके पहले भी, वैदिक युग में भी धरती को मैदान बनाने की परम्परा थी। अभी भी ये जो बैगा जात है, ये आदिवासी जात है, इन लोगों के पुण्य कर्म में सवेरे उठ करके, आठ वर्ष के बाद के बच्चे कुल्हाड़ी फरसा ले जाकर कम से कम पाँच झाड़ काट कर आ जाते हैं।

जिज्ञासा: ये परंपरा तब से चली आ रही है?

उत्तर: आदि काल से, आदि मानव काल से, जब गुफा में रहता था, जब झोपड़ियों में रहता था, उस समय से चालू है। ये हो करके, ये चलते-चलते अभी हम यहाँ पहुँच गए हैं, अब जंगल ही नहीं है यहाँ आ गये। तब पता चला खनिज और वनस्पति संसार के संतुलित अवस्था में ऋतु संतुलन रहता है, ये हम को ज्ञान हुआ। तब पता चला, ये जंगल जितना होना चाहिए उतना ना होने से ऋतु असंतुलित होती है। खनिज जितना रहना चाहिये, वो ना रहने से ऋतु असंतुलित होती है। क्या हो गया? एक तो धरती बीमार हुआ ऋतु असंतुलित हो गया। सोने में सुगंधी हो गयी थोड़ा सा। पहले से ही करेला उसपे नीम चढ़ा। इस ढंग से हम इस प्रकार से फँस गए हैं, ना आगे जा पा रहे हैं ना पीछे लौट पा रहे हैं, ऐसी स्थिति में हम फँस गए हैं, दलदल में। अभी उसके लिए हम एक छोटा सा युक्ति निकाला, ऊर्जा संतुलन के लिए ये सब बातें ले जा सकते हैं। धरती के ऊपर जो उपज होता है उससे हमको ऊर्जा संतुलन करना चाहिए। और उसके साथ साथ वायु तरंग है, समुद्र तरंग है और सूर्य ऊर्जा है ये सभी चीज़ उपयोग किया जाए, उसके साथ सबसे ज़्यादा प्रवाह बल को प्रयोग किया जाए, इस पर हम बल दे रहे हैं। ये तो बात ऐसा हुआ ऊर्जा संतुलन की बात।

ऊर्जा संतुलन के बाद आता है ऋतु संतुलन। ऋतु संतुलन की बात आता है तो अभी हम ये कह रहे हैं, सभी किसान को कम से कम १०% जगह में जंगल लगाओ। व्यावहारिक बात है। क्यों लगाओ? घर में कोई ना कोई मरेगा ही, उसको जलाने के लिए लकड़ी तो चाहिए, सरकार देने वाला नहीं है। सरकार यदि करेगा तो यही करेगा, बिजली का

एक घर बनाएगा उसके अंदर एक box रखेगा उस box में शव को लेकर जल जाए करके रखो, उसको oven के अंदर कर देगा। उसमें बिजली on करेगा, वो जल करके ख़ाक होगा, ख़ाक लेकर के वापस लोटो। इससे यदि संतुष्टि होता हो तो ऐसा सरकार कर सकता है। सरकार लकड़ी तो नहीं दे पाएगी। तो उसके लिए क्या किया जाए? घर में कोई ना कोई मरेगा ही, अपने घर में मरे हुए आदमी का ईंधन तो हो। अपने चूल्हे के लिए ज़रूरत पड़ा उसके लिए सड़ा गला लकड़ी तो हो। इस प्रकार सोचकर के हर किसान अपना १०% भाग में जंगल लगाया जाए।

सत्य जी के समय में शिविर में ये जिक्र आ चुके थे, ऊर्जा संतुलन का। उस समय में हम लोग ये सब बात प्रस्तुत किये, उसमें जो रेंगा नहीं रेंगा होता ही है, ठीक है चलेगा, जो जितना रेंग गया वही बहुत है, नहीं रेंगता तो अपन क्या कर लेते, अपन तो मुकदमा चलाने वाले नहीं। अपन ये बीड़ा उठाएँ हैं, झगड़ा की जड़ अपन नहीं बनेंगे। झगड़ा करने की जगह में आते हो तो हम थोड़ी देर इंतजार करेंगे, थोड़ी देर बाद समझना। क्या जल्दी है।

जिज्ञासाः आपने कहा ईश्वरवाद ने रहस्य में मानव को दबाया। आज जो मानव भयभीत दिख रहा है क्या इसी का परिणाम है ये?

उत्तरः दबने के लिए कहा, अच्छे-अच्छे आदमी हर दिन दो दो सेंटीमीटर दबता गया, मर गया, खाद हो गया। उसके बाद विज्ञान आया, विज्ञान ने हर व्यक्ति को दिन में दस अपराध ज्यादा करो, धरती जल्दी खत्म हो, धरती से जिसके पास पैसा रहेगा उनको लेकर के हम दूसरे planet में भाग जाएं। बाकी सब यहीं मरे- ऐसा वो कह रहे हैं। यहाँ तक समझ में आ गया, इससे क्या मतलब निकला? (मानव अपराधी हुआ, अपराध से ग्रस्त हुआ) अपराध के प्रायश्चित को भोगने के लिए तैयार बैठा है। अब क्या किया जाए? अपराध करना यदि छूट जाए, प्रायश्चित कहीं ना कहीं अंत भी हो। अपराध करना यदि रुकता है, प्रायश्चित करने का भी range कहीं ना कहीं जा करके रुकेगा। ये estimation ठीक है ना? इसी estimation के आधार पर हम घंटी बजाना शुरू किए - तो अपराध मुक्ति कैसा होगा। अपराध मुक्ति के लिए कहा- ऊर्जा संत्तुलन के लिए उपाय बताया, व्यवस्था के लिए उपाय बताया, जीने के लिए उपाय बताया। क्या उपाय- समाधान, समृद्धि पूर्वक जीना है। समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि- ये formula दिया।

जिज्ञासाः रहस्य की परिणीति क्या हुई मानव में?

उत्तरः मानव को दास बनाया, पशु मानव बनाया। हर दिन दो-दो inch दबाता गया, दब करके खाद हो गया। हमारा अकेले परिवार में दस बीस लोग अपने मरने के लिए गड्ढा कोड़ा अपने हाथ से, दूसरे से नहीं कुड़वाया, अपने हाथ से कोड़ा, उसके अंदर बैठ गया, मट्टी ढाँक लिया, मर गए। समाधि हो गए, समाधिष्ठ हो गए, और उसका चबूतरा बना, उसके बाद बोले उसका पूजा करो। मैंने एक दिन वो चबूतरा पर बैठा, हमारे बजुर्गों ने हमको बड़ी डाँट पिलायी, यहाँ जा करके बैठने का तुम्हारा क्या हक़ है। इसमें हक़ में क्या कमी है, मैं पूछा। तुम तो वितंडावाद करते हो बोले। हक़ में क्या कमी है, हम बैठ ही गया हूँ, हक में कम होता तो बैठते कैसे।

बताओ ये क्या देकर के गए हमको। ये भी हो सकता है- मैं ही ऐसा करके मर गये हों, इसी के ऊपर बैठकर के मैं ही पूछते हों, ये भी हो सकता है, नहीं भी हो सकता है, इसके बारे में हम कह नहीं सकते। ये बताओ ये क्या दे गये हमको? कुछ नहीं दे गये। उसके बाद हमारा परिवार संसार को क्या दिया उसमें गए? कुछ नहीं दिया, सम्मान पाए, ये निकला। कितने लोग शोध करते हैं आप बोलो, इस शोध में ऐसा निकल गया- उसमें और घायल हो गए हम, होना ही है। उसके बाद हमने ये सोचा- हमारा परिवार जिस परम्परा में समर्पित है वो परम्परा क्या दिया? तब ईश्वरवाद आ गया। ईश्वरवाद इतना ही दिया- हर मनुष्य को रहस्य में दबो, दो-दो सेंटीमीटर हर दिन दबो, जब तक खाद ना हो, मट्टी ना हो, तब तक दबो। हमारा परिवार में बीसों आदमी दब के मरे। ये हमारे पास evidence है। बाक़ी को तो हम बताने जाते ही नहीं, हमारे परिवार परम्परा की बात करते हैं। पशु मानव बनाया ईश्वरवाद, भौतिकवाद राक्षस मानव बनाया। नमस्कार, प्रणाम। आगे चलो, बाकी इस कथन से कोई फायदा होने वाला नहीं।

क्या दिया संसार को ईश्वरवाद- पशु बनने के लिए कहा और मर जाने के लिए कहा, दास बनने के लिए कहा, सब कुछ कहा। और विज्ञानवाद क्या दिया- राक्षस बनने के लिए कहा, सारा शिक्षा दिया राक्षस बनने के लिए। विधिवत् शिक्षा लेकर के राक्षस बना।

जिज्ञासाः मध्यस्थ दर्शन के अनुसार कला और साहित्य का क्या मतलब है?

उत्तरः शिक्षा को पूरा का पूरा मानवीकरण करने के अर्थ में मानवीय शिक्षा संस्कार को निर्देशित किया। मानवीय शिक्षा संस्कार के अनुसार साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन। तात्विकता का मतलब है सच। कला साहित्य में सत्य को उभारा जाए। सत्य को कला साहित्य के रूप में प्रस्तुत किया जाए। विज्ञान के साथ लिखा है चैतन्य पक्ष का अध्ययन। विज्ञान माटी पत्थर का अध्ययन कर लिया है और शरीर पक्ष को भी अध्ययन किया है, जीवन पक्ष को भी अध्ययन करे। ऐसा अनुरोध किया है।इससे क्या प्रयोजन पूछने पर - अपराध से मुक्ति होगी। साहित्य में यदि तात्विक पक्ष को, सत्य को हम उभार पाते हैं, साहित्यकार अपराधी नहीं होगा। साहित्य सार्थक हो जाएगा।

मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का अध्ययन। संस्कार का मतलब होता है समझदारी, समझदारी पक्ष का अध्ययन कराया जाए। दर्शन शास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का अध्ययन। दर्शन शास्त्र के साथ, जीने का गतिविधियों का अध्ययन कराया जाए। दर्शन के साथ शब्दों को नहीं पढ़ाया जाए, जीने की गतिविधियों को पढ़ाया जाए। समाजशास्त्र के साथ मानव तथा मानवीयता का अध्ययन कराया जाए। भूगोल और इतिहास के साथ मानवीयता को अध्ययन कराया जाए, मानवीय आचरण, व्यवस्था को अध्ययन कराया जाए। ये लिखा। इस ढंग से आठ बिंदुओं में ये सब अध्ययन कराया, वो सब बिलकुल सही विधि निकलती है। अभी तक तो उसमें कोई खामियां दिखी नहीं। इस ढंग से हम शुरू किए हैं। विज्ञान में राक्षसीयता को दूर करने के लिए और ईश्वरवाद के अनुसार पशुता को भी समाप्त करने के लिए हम इस प्रकार से शुरू किया।

जिज्ञासाः बाबा जी कोई व्यक्ति, जिसका इस दर्शन से परिचय होता है और उसकी सहमति बनती है कि यह दर्शन जीवन को उन्नति की ओर ले जाएगा तो आप उसकी पूर्णता के लिए क्या सुझाव, मार्गदर्शन देना चाहेंगें?

उत्तरः जब ऐसा स्वीकार हुआ, इसमें कोई सही बात है, सही बात कार्य व्यवहार में कैसे आएगा, इस बात पर तुला जाए। उसके लिए हम प्रस्तावित किए हैं– दर्शन, विचार, शास्त्र। उसको अध्ययन किया जाए, अध्ययन करने के बाद उसमें कोई चीज बचता है, उसको अच्छे ढंग से हमसे पूछ लिया जाए और अछोटी के विद्वानों से पूछा जाए, कानपुर के विद्वानों से पूछा जाए, मसूरी के, हैदराबाद के विद्वानो से, बिजनोर के विद्वानों से पूछा जाए। ऐसी कई जगह हो गयी वहाँ के विद्वानों से पूछा जाए। पूछ करके समाधान प्राप्त कर सकते हैं, यदि इनसे कोई मिला नहीं समाधान तो अमरकण्टक बैठा है। अमरकण्टक में इसका परंपरा रहेगी सम्पूर्ण प्रश्न का उत्तर देने का, प्रश्न मुक्ति कराने का परम्परा रहेगी। बाकी सब जगह में रहेगा। उसके साथ ये भी सोच रहे हैं, वहाँ आगे चल करके शिक्षक को तैयार करने की बात। उसका दो–तीन center पहचानेंगे। अंत में अंतिम बात अमरकण्टक में ही होगी। शिक्षक पूरा प्रमाणित हैं, इस बात को पहचानने की बात अमरकण्टक में रहेगी। ऐसा सोचे हैं। उसके लिए वहाँ एक center को बनाने की भी बात, ऐसा अभी सोचे हैं। वहाँ के विद्वान इस बात को निर्वाह करेंगे।

जिज्ञासाः आपकी परिकल्पना कि धरती स्वर्ग हो सभी मानव देवता हों सब तरफ़ शुभ हो– दर्शन से जुड़ने से पहले ऐसा सम्भव नहीं लगता था परंतु जैसा–जैसा गति बनी है ऐसा होते हुए थोड़ा–थोड़ा दिखता भी है। तो कितने समय में ऐसा बन पाएगा?

उत्तरः यही होना चाहिए, दिखता भी है। यही सही ठोर है। समय के बारे में हम बताना एक धृष्ठता जैसी होगी। अभी जैसा नियति विधि चल रही है, वो आदमी को इस ओर ध्यानाकर्षण करने के लिए ही है। अपना तैयारियाँ सही नहीं है, पूरा नहीं हुआ है। अभी जो हम जितने विद्वान जुड़े हैं, इनमें जो तैयारी होना चाहिए, उसमें कमी है। वो यदि पूरा होता है, मेरे अनुसार अभी तक पूरा हिन्दी संसार इसके भनक में आ जाना था, और इसमें सबका role है, वो शनैः–शनैः होगा, ऐसा मैं मान कर के चल रहा हूँ। हम किसी को उपदेश देने जाएँगे नहीं, हमको कोई उपदेश देकर के हम कुछ किया नहीं। मनुष्य अपने स्वयं स्फूर्त विधि से उपकार करना चाहेगा, उसके रास्ता है, इस बात की घंटी बजा रहे हैं हम। किस बात की घंटी बजा रहे हैं– यदि उपकार करना चाहेगा उसके लिए निश्चित विधि है, निश्चित ज्ञान है, निश्चित प्रक्रिया है, निश्चित फल परिणाम है– ये हम घंटी बजा रहे हैं। अभी ये पूरे बात के अर्थ में इतना ही है। इस प्रकार की छोटी सी काम किए हैं, और इस छोटे से काम से अपने को बड़ी संतुष्टि है, और इसको एक व्यक्ति के बाद दूसरे व्यक्ति तक जाने में हमको कोई हिचक नहीं है, कोई भी परेशानी नहीं है, कोई शर्म नहीं है, कोई कष्ट नहीं है, कोई विरोध नहीं है। हमारा विरोध करने की अभी तक कोई आवाज़ उठा नहीं। कम से कम तीस वर्ष से हम आदमी के साथ हैं। विरोध करने का कोई आवाज़ हमने सुना नहीं। हम क्या–क्या सुना? तुमको भाषा नहीं आता है, हमको स्वीकार है, हम आपको पढ़ा देते हैं। हमको आपका भाषा नहीं आता है, भाषा से जो होना है उसको हम पढ़ा देते हैं। हमको भाषा आने की जरूरत नहीं है, भाषा से क्या होना है वो हमको जरूरत है, उसमें हम पारंगत हैं। उनका कोई निरादर नहीं किया। उसके बाद आया तुम आशावादी हो। मैंने कहा कि निराशा का गोबर गड्ढा बताओ उसी में दब के मारा जाए। क्या निराशा में आप मरना चाहते हो?

एक पाणिग्रही नाम का, पुलिस IG, हमारे पास, बैठ कर वो करीब दो दिन रहा, उन्होंने हमको आशावादी निरूपित किया। उनको हम क्या निरूपित किया– अपराध के पुलिंदे में तुम दब करके मर रहे हो, ऐसा मैं qualify किया।

उन्होंने qualify किया तुम आशावादी हो, मैंने कहा तुम क्या निराशा में क्य कर मरना ही चाहते हो या उससे उभरना चाहते हो। उनकी पत्नी कहती है इससे अच्छा कोई डांट तो हो नहीं सकता, और दूसरा भाषा में इससे प्यारा डाँट नहीं हो सकता (और तीसरा इससे सटीक उसका विश्लेषण किया नहीं जा सकता)। पहले दो घंटे के लिए आया था, दिन भर रुका, उसके बाद इस मुद्दे के बाद उन्होंने एक दिन और रुका। रुक कर के सारे project को सुना, बड़े प्रसन्न हो करके गया। उन्होंने ये कहा अंत में, ये जो है ना कम से कम सौ वर्ष पहले आ गया। आपको ऐसा लगता है? भाई समय बताएगा, हम उनके लिए बताया, उनका प्रतिवाद प्रस्तुत किया, ये तो समय बताएगा। अभी हम क्या बताएंगे, सौ वर्ष पहले आया, दो दिन पहले आया, हम क्या बताएंगे, आया है इतना एक सूचना है। इस पर हम अच्छे तरह से बात किये। बात करने पर उनको भी संतोष, हमको भी संतोष। कई बार हमारे पास आए हैं बाद में। Retire हो गये हैं, वो हैं कि नहीं, पता नहीं।

18

भाग – 18

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-18*

जिज्ञासाः बाबाजी, जो व्यक्ति आपके दर्शन के संपर्क में आता है उसके लिए आपके सुझाव के रूप में कुछ और स्पष्टता चाहते हैं। इस दर्शन के अनुसार परिवार में नर-नारियों का अधिकार, कर्तव्य, सभी संबंधों में किस प्रकार रहेगा, जैसे पिता-पुत्र, माता-पिता, भाई-बहन और सभी संबंधों में?

उत्तरः पहले इसे तय किया जाए कि नर-नारियों का समान अधिकार, ऐसा क्यों कहते हैं- समझदारी के लिए हर नर-नारी समान अधिकार रखते हैं। उसका आधार क्या है- शरीर और जीवन का सम्बंध हर नर-नारी में समान है। नारी शरीर को भी एक जीवन चलाता है, नर का शरीर को भी एक जीवन चलाता है। जीवन तृप्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है। मानव शरीर में इंद्रियों का कार्यक्रम है। इंद्रियों के कार्यक्रम के आधार पर बहुत दिन आदमी ने बहुत कुछ करके देखा, उसमें सुख पाने की कोशिश किया, हो नहीं पाया। इसको आप हम सब करीब-करीब सभी ने निष्कर्ष निकाल लिए हैं। कोई निष्कर्ष नहीं निकाला है तो निष्कर्ष निकल जाएगा। अब, सुख चाहिए, कहाँ मिलेगा- सुख की निरंतरता चाहिए। उसको हम खोज निकाला। वो क्या चीज है- समाधान, समाधान होने से सुखी होते हैं, समाधान की निरंतरता होती है। सम्बन्धों में समाधान, पति-पत्नी के सम्बंधों में समाधान, पिता-पुत्र के संबंधो में समाधान, पुत्र-पुत्री के सम्बन्धों में समाधान, और बंधु-बाँधवों के सम्बंधों में समाधान होने की आवश्यकता है। सम्बंध क्या है- समझदारी से समाधान। समझदारी पूर्वक हम समाधान को प्रमाणित करते हैं और श्रम पूर्वक समृद्धि को प्रमाणित करते हैं। ये दो सिद्धांत को पहले पढ़ा चुके हैं आपको। तो ये दोनों सिद्धांतों को याद रखने की आवश्यकता है जम के। ये दोनों याद रहेगा तो आगे की बात सब पटेगी। हर नर-नारी में नारी शरीर होता है, नर शरीर होता है, जीवन न तो नर होता है ना नारी होता है। इस भ्रम से मुक्ति के लिए काफ़ी हम काम कर चुके हैं और भी ज़रूरत होगी तो काम करेंगे। ये ज़िम्मेवारी तो अपना ही है। इस आधार पर नर-नारियों में ज्ञानार्जन के लिए समान अधिकार है। किस लिए ज्ञानार्जन, जीवन तृप्ति के लिए। जीवन तृप्ति क्या चीज़ है- सुख, शांति, संतोष, आनंद। यह पता चला। यह हमें कैसे पता चला- सुख की बात हम को पता चला पहला। सुख कैसा होता है? समाधान आने से सुख, समाधान, समृद्धि आने से सुख शांति, समाधान, समृद्धि, अभय सम्पन्न होने से सुख, शांति, संतोष और समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में जीने पर सुख, शांति, संतोष, आनंद, ये निकल गया। ये एक सिद्धांत शाश्वत सिद्धांत के रूप में निकला, प्राकृतिक सिद्धांत के रूप में निकला, अस्तित्व सिद्धांत के रूप में निकला, जागृति सहज सिद्धांत के रूप में निकला। इतने विधा से ये सिद्धांत निकला, निकलने के बाद ये पता चला नर-नारियों के समानाधिकार है। किस बात के? समझदारी के लिए । शरीर में ही नर-नारी होते हैं, जीवन में नर-नारी नहीं होते हैं। ये भी समझ में आ गया। उसके बाद आता है शरीर से हम जो कुछ भी समृद्धि पैदा करते हैं, उसका अधिकार की बात बताते हैं। परिवार में जितना व्यक्ति रहते हैं हर व्यक्ति का उपयोग का अधिकार समान, सदुपयोग का अधिकार समान, प्रयोजनशील होने का अधिकार समान। इसके लिए क्या चाहिए? पहले समाधान सम्पन्न होने के बाद ही मनुष्य उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील विधि से वस्तुओं को उपयोग करना बनता है। यदि समझदारी नहीं है, इसको उपयोग विधि में ही

गड़बड़ायेगी, सदुपयोग और प्रयोजनशीलता तो दिल्ली दूर वाली बात है। इसीलिए हमको ये ध्यान देने की आवश्यकता है कि हर नर-नारियों में जो सर्वाधिक, सर्वप्रथम अधिकार समझदारी की है। और उसके बाद समृद्धि का अधिकार है, समृद्धि का अधिकार के साथ उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता का अधिकार बना ही है। इसको मैं समझता हूँ इसका विरोध करने का कोई जगह नहीं है। उसके विपरीत सुविधा संग्रह में जाओ हर जगह में विरोध। पति-पत्नी के बीच में विरोध, पिता-पुत्र के बीच मे विरोध हर जगह मे विरोध।वही वस्तुएँ हैं, हर जगह में विरोध, सुविधा संग्रह विधि से। और समाधान विधि से हर जगह में मैत्री। इसको भले प्रकार से अपने को ध्यान में लाने की जरूरत, इसको भले प्रकार से आचरण करने की जरूरत, इसको प्रमाणित करने की ज़रूरत है। वो भी आप लोगों का कुछ सौभाग्य है, कि बहुत सारे लोग आप लोगों से प्रेरणा पाने के लिए आते हैं, आप लोगों को प्रमाणित रहने की भी बहुत ज़रूरत है। तो हर सम्बन्धों में समानाधिकार को अनुभव करना।

अभी जैसा इसको लेकर के बहुत सारे लोग हमसे प्रश्न किए कि वहाँ जो अछोटी में कुछ लोग काम करने वाले हैं, उन लोगों के बारे में क्या सोचना है। उन लोगों के बारे में मैं ये आश्वासन देता हूँ कि वो यदि Permanently रहना चाहते हैं तब वहाँ का भागीदारी बनाएंगे। यदि permanently रहना चाहते हैं तब भागीदारी होंगे, permanently नहीं रहेंगे, आगंतुक रूप में जैसा होता है वैसा हो ही जाएगी। ये बात हम बताता हूँ। ठीक है? यह उत्तर ठीक है?

उसके लिए अभी आपने बताया माताजी गई थी, किसी की बात थी, उन्होंने समझाये वो समझ भी गये, प्रतिज्ञा भी किया है बताते हैं (दोनों पति-पत्नी में काफ़ी लड़ाई- झगड़ा था वो खतम होते जा रहा है बाबा)। वही बात, ये होगा ही, जब कभी भी आदमी मे सद्बुद्धि उदय होगा, झगड़ा तो पहले खतम होगा। उसके बाद समाधान, समाधान से सुख, समृद्धि आने पर सुख, शांति। ये दोनों आ जाता है, अभय आता ही है, भय से मुक्ति का दिन आता ही है। भय से मुक्ति मिल गई तो और सोने में सुगंधी आ गया। उसके बाद सहअस्तित्व में प्रमाण हो गया, माने हम पूरे ही हो गये। मानव लक्ष्य ही पूरा हो गया। ये चार मुद्दा यदि मानव परंपरा में आता है उसके लिए हम पहले कहे हैं परिवार में हम व्यवस्था को पहचानें। परिवार मे व्यवस्था को पहचानने क्या मिला- समाधान, समृद्धि दो चीज मिला। दो चीज को हम प्रमाणित करें, उसके बाद ऐसा 10, 20, 1000 परिवार मिल करके हम थोड़ा सा विस्तार रूप मे व्यवस्था को प्रमाणित करें, उसमें से पड़ोसी से भय समाप्त हो जाता है। अभी तक यही माना जाता है कहीं जगह में कोई भी ज़्यादती हो पड़ोस के साथ ही मिल करके ज़्यादती बनती है। अब इस बात को बहुत सारे विधि से पचतंत्र मे (चाणक्य का पंचतंत्र मे) बहुत सारा बात लिखा है। हम पढे हैं, ये सब तो लिखा है बेकार बातों को, उस ओर अपने को जाने की जरूरत ही नहीं। अपन अपने विधि से क्या कहा- नर-नारियों मे समान अधिकार है, उसको हर व्यक्ति स्वीकारते हुए जीना। उसका प्रमाण क्या होगा- उपयोग होना होगा परिवार में, सदुपयोग होना है समाज में, और व्यवस्था में प्रयोजन शील होना है। अभी अपने अछोटी के सीमा में स्वाभाविक रूप में समाज का संपर्क भी है, व्यवस्था का भी संपर्क है। इन दोनों विधा में वस्तुओं को अपने परिश्रम से जो कुछ भी हम पैदा करते हैं उसका सदुपयोग और प्रयोजन शील बनाने के लिए ही प्रयत्नशील रहना चाहिए। वो ही चीज अमरकंटक में आपको दिखेगी, दिखता है कि नहीं दिखता है (दिखता है बाबा, वहीं से प्रेरणा मिलता है बाबा)।संयोग रहा, अमरकंटक में एक ऐसा संयोग हुआ, सरकार एक notice भेज दिया वो धर्मशाला खाली करो, उसके आधार पर ये भी अभी तैयार हो गया। मानसिकता तैयार हो गया, बनी ही रहा है, बन ही जाएगा। तो उससे दूसरा और एक अभिशाप की मुक्ति हुई, तो हम समृद्धि को

घोषणा करते रहे, कोई ना कोई आदमी ऐसा सोच ही सकता था, अपना बच्चे को एक कुटिया नहीं बनाया, घोसला नहीं बनाया और ये अपने को समृद्ध घोषित करता है, ऐसा तो डाँट ही सकते थे। वो भी अभिशाप मुक्ति मिल गई। मैं आपको यह बात रहा हूँ, ठीक बात हुआ कि नहीं। ये हम कल्पना ही नहीं किये थे, अपने आप से आ गई ये। ये सब चीजें स्वभाविक रूप में कोई एक संपदा आती है उसके साथ 10 संपदायें बिना बुलाए आते हैं। इस बारे में कहा। तो इस ढंग से चल कर के वहाँ आप ये भी देखेंगे वहाँ सबके पास एक ही अधिकार है उपयोग करने का, वस्तुओं को उपयोग करने का समान अधिकार वहाँ रखा हुआ है। परिवार के सभी लोगों के साथ, इसको तो आप देखते ही हो, ये भी एक बात बन गई। इस ढंग से हम समाधान, समृद्धि पूर्वक जीने से परिवार जनों के बीच में समान अधिकार का अनुभव करना ही पड़ेगा दूसरा कुछ होता ही नहीं। ये कैसा बनाता है बताया। आयु के अनुसार कार्य कर्तव्य। इसमें मैंने जो अनुभव किया, किसी आयु के बाद बच्चों को अपने विवेक से जीने के लिए अधिकृत करना चाहिए, हर परिवार में। यह समझदार परिवार में ही सम्भव है भ्रमित परिवार में ये सम्भव नहीं है।

तो एक सद्गृहस्थ के यहाँ हम गए थे,(रस्तोगी को आप जानते हैं, उनके ससुराल।) उनके ससुर कई वर्षों से बीमार बिस्तर में पड़े थे, उस अवस्था में हम गए थे। उनके बच्चों से मिले। अभी बच्चों के सामने पिता बिस्तर पर पड़े हैं बच्चों का मन ये है, हमारा पिता हम को स्वतंत्र रूप से जीने नहीं दे रहे हैं। उसको कैसे बताया जानते हो, कि वटवृक्ष के नीचे कोई फूस भी नहीं पनपता, दूसरे कोई वृक्ष ही नहीं होता। ऐसा भाषा बताया। इससे अच्छा क्या बताएगा आदमी, गंभीरता से आप ही सोचो। ऐसा उनके बच्चे बोले। उस समय उनका बड़ा लड़का ५० वर्ष से अधिक ही होगा।

अभी हमारे यहाँ बच्चे बहुत समझदार हो गए हैं ऐसा मैं घोषणा नहीं कर रहा हूँ, किंतु मैं अपने तरफ से सारी ज़िम्मेवरीयों को उन्हीं के ऊपर छोड़ा। अभी वो घर बन रहा है। घर कैसा बन रहा है, उसको देखने के लिए जब १०-५० बार वो कहते हैं तब एक बार जाता हूँ। अभी तक दो बार गया हूँ। एक बार स्थान पूजा करते समय में गए थे। हमारा विश्वास है उनको रहना है उनके अनुसार सुविधाजनक विधि से वो सोचेंगे समझेंगे करेंगे। जितना हो सकता है उसी का अधिकार है उनको, उनका अधिकारी उतना ही है। जितना अच्छा बना लेंगे उतना ही अधिकार है। आप बनाओ रहो, आप रह करके कोई जगह बचता है तो हमको बताना, मैं भी रहूँगा। हम तो धर्मशाला में रहना है। इसमें क्या हो गया, हमारा कोई अधिकार नहीं है, वो बच्चों के नाम से जमीन का registry कराया। उसके बाद हम जब तक रहेंगे स्वाभाविक है हमारे बंधुओं के साथ हम रहेंगे ही, हम रहेंगे तो हमारे बंधुएं सब रहेंगे ही। ये तो उसको नकारा नहीं जा सकता। ऐसे ही वो घर ही बना है, उस ढंग से बनी हुई है। कभी भी जा के देखेंगे उनको ना, तो हम dictate करता हूँ ऐसा करो तैसा करो, ये ज्यादा हो गया कम हो गया, कुछ नहीं।

19

भाग – 19

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag*-19

जिज्ञासाः आपने अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था की बात बार-बार कही है, इसको सामान्य रूप में कैसे समझें, ताकि हम लोग भी उस दिशा में आगे बढ़ सकें?

उत्तरः तो अखंड समाज के बारे में बारम्बार कहा, सार्वभौम व्यवस्था के बारे में बारम्बार कहा इस बात को कैसे समझें। पहले अखंड समाज को समझ लेने का विधी, मानव जाति को एक रूप में मानव जाति एक है इस बात को अपने को समझना है। इसको कैसे समझा जाए? अभी मानव जाति को जैसा जीवों के सदृश्य अनेक जाति मानकर के पहले से अपन चले। अनेक जाति मानने का आधार वही रहा। सर्वप्रथम नस्ल रहा, नस्ल के बाद रंग आया, रंग के बाद आया कबीला और कबीला के बाद आ गया संप्रदाय। मत, भाषा, पंथ और उसके बाद कार्य के आधार पर जातियां रहीं। इस ढंग से जाति, मत, संप्रदाय, पंथ आदि के आधार पर हम पूरा का पूरा मानव जाति को अनेक समुदायों में पहचाने। किस आधार पर- भाषा, जाति, मत, संप्रदाय, रंग, नस्ल, वर्ग के आधार पर। सात आधार पर हम अपना-पराया को विभाजित कर चुके। इसी के आधार पर धर्म और राज्य दोनों इसमें सहमत हैं। धर्म भी समुदायों के प्रति सहमत है और राज्य भी सहमत है। राज्य शासन भी, संविधान भी एक समुदाय एक क्षेत्रफल में रहा हुआ आदमियों के साथ ही संविधान को बनाया। इसी प्रकार के अनेक प्रकार के संविधान बने, अनेक देशों में संविधान बने, अनेक देश हुए, अनेक देश में अनेक संविधान बने, अनेक भाषा हुए, अनेक प्रकार के मत हुए, संप्रदाय हुए, पंथ हुए, इसके आधार पर वर्ग हुए और इसके पश्चात आदमी का अपना-पराया का दीवालें इस ढंग से बड़े-बड़े होते गए। इसमें सबसे बड़ा दीवाल राज्य और धर्म की है। अपने पराए का विभाजन राज्य विधि से, धर्म विधि से आता है। धर्म विधि से समुदाय चेतना काफी कठोर है।राज्य विधि से उससे कम कठोर है। धर्म विधि से जो कुछ भी आदमी अपने को मान लेता है हम जिस जात के हैं वो जात के आधार पर वो धर्म को मानता है उसके पश्चात उसी को रट लगता है, बाक़ी को धर्म मानता ही नहीं। इस ढंग से लोग नाना प्रकार की बात करते हैं। केवल कहते हैं कि हम एकता चाहते हैं। एकता चाह कर अनेकता की बात काहे को करते हैं, ये बात आई, तो बात आने पर वो कहते हैं- अनेकता को बताए बिना एकता कैसे होगा? ये प्रति प्रश्न हो गया। ऐसे सब वाद विवाद का आधार बना हुआ है ये। इन सभी आधारों को देखते हुए, सुनते हुए, और जीते हुए, अभी इस निष्कर्ष पर आ गये कि मानव जाति है। मानव जाति होने का आधार- मानव जाति शरीर और जीवन का संयुक्त रूप में है। जीवन नहीं रहेगा तभी भी जाति नहीं है और शरीर नहीं रहेगा तभी भी जाति नहीं है। शरीर और जीवन का संयुक्त रूप में ही हर जातियां पहचान में आए हैं। अब मानव जाति एक है इस बात को पहचानने के लिए पहले शरीर के बारे में सोचा जाए। शरीर के बारे में ये देखा गया- काले आदमी हो गोरे हो, पंडित हो, मूर्ख हो, ज्ञानी हो, अज्ञानी हो, लफंगे हो, लुच्चे हो या केवल अत्यंत संयत व्यक्ति हो, तपस्वी हो और बहुत ज्यादा दरिद्र हो, बहुत ज्यादा धनी हो, तो ऐसे विभिन्न प्रकार के ऊँच-नीच की बात होता है उन सभी आदमियों को जाँचने पर ये पता लगता है, और सभी रंग वाले जितने भी जाति हैं, वो सभी के रक्त का वर्गीकरण उतना ही होता है जितना एक जाति में होता है।

माने काले रंग की आदमी में कितने प्रजाति का रक्त हो सकता है, उतना ही प्रजाति का रक्त एक गोरे रंग के आदमी में भी होता है। इसको देख लिया गया है। इस तरह रक्त के आधार पर मानव जाति एक है इसको कहा जा सकता है। उसके बाद रक्त के साथ और धातु होते हैं जिसको हम सप्त धातु गिनाते है, उसमें प्रधान रूप में गिनाते है रस। रसों को २४ प्रकार से हम लोग आयुर्वेद में पहचानते हैं। अभी जो Laboratory में २० या १८ प्रकार के रसों को पहचान लिया है। तो इन रसों के तात्पर्य मे भी सभी शरीर में, गोरा शरीर हो, काला शरीर हो सभी में उतना ही प्रकार का रस होता है। उसके बाद मांसपेशियाँ, मांसपेशियाँ पिंडली की यहाँ की वहाँ की सब जगह को मिलाकर के काले आदमी में भी उतना ही होता है, गोरे आदमी में भी उतना ही होता है, ये देख लिया गया है। उसके बाद आता है मज्जा, मज्जा के बारे में देखा गया, सभी का मज्जा एक ही सा होता है। ये मांस रस को मज्जा कहते हैं, ऐसे मज्जा सब आदमी के साथ एक ही सा होता है। इसके बाद खून तो सभी में एक ही सा है चार हो गया। उसके बाद पाँचवाँ आता है नस-स्नायु खून को दौड़ने के लिए जितने भी स्नायु हैं, वो सब का सब सभी के शरीर में एक ही है, और क्रियावाही तंत्र इसका नाम है। ज्ञानवाही तंत्र इसके साथ चलता है वो भी गोरे आदमी काले आदमी में सब में समान है। इस ढंग से छह हो गया। छटवा धातु है हड्डी, हड्डी का रचना जैसा एक कला आदमी के शरीर में बना है, वैसा ही गोरा आदमी के शरीर में भी बना है। वसा- वसा भी जैसा कला आदमी का वसा होता है वैसा ही गोरा आदमी का वसा होता है। इस ढंग से सप्त धातुओं को हमने पहचाने हैं! इन सप्त धातुओं के आधार पर देखेंगे तो सब में समानता दिखती है, इसलिए मानव जाति एक है। इस प्रकार रक्त के आधार पर हो गया और सप्त धातुओं के आधार पर हो गया, दो आधार हुआ।

इसके बाद आता है, मानव संतान के मूल में प्रजनन विधि- काले आदमी में भी वैसा ही है और गोरे आदमी में भी वैसा ही है। ये भी एक हो गया। इसीलिए प्रजनन विधि में भी मानव जाति एक है, इसको पहचाना जा सकता है। अब रह गया आहार- आहार में अभी तक हम मानव जाति को पहचाना नहीं! उसके बारे में बाद में बात करेंगे! इससे क्या परेशानी है, आराम है उसके बारे में बात करेंगे! जहाँ तक सप्त धातुओं के सम्बंध में बात हो गयी मानव जाति एक है ये पता लगता है। चाहे रंग काला हो चाहे रंग गोरा हो, , ये पता लग गया। ये जाति के बारे में ये आधार बने। ये आधारों को अपने को ध्यान में लाना ज़रूरी है, ज़रूरी नहीं है, आप लोग सोचा करो। मेरे अनुसार बहुत जरूरी है। ये सब बातों को ध्यान में लाना आवश्यक है।

उसके बाद मानव जाति एक होने का दूसरा एक आधार बना कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता गोरे आदमी के साथ भी वैसा ही है और काले आदमी के साथ भी वैसा ही है। इस प्रकार से अपना-पराया का दीवाल खड़ा करके बहुत सारा अपराध, ज्यादती एक दूसरे के साथ कर लिया। जैसा गोरे आदमी काले आदमियों को जानवरों के जैसा बांध-बांध करके, steamer में भर-भर करके, चौहट्टा में रख करके, भेड़-बकरी को जैसा बेचते हैं वैसा बेचा गया, गोरे लोग। उसका बदला बनेगा कि नहीं बनेगा, प्रतिक्रिया बनेगा या नहीं बनेगा? अभी जितने भी मुक्केबाज़ी के round होते हैं, वहाँ गोरे आदमी मिला तो एक मारा और दो फाँकी खोपड़ी! अब वो ring में गोरे आदमी दिखना बंद हो गया, या विरल ही दिखता होगा, उसका खोपड़ी टुकड़ा होगा। एक जगह में तो खत्म हो गया। अब उसके बाद दोड़ने में, गोरे लोग पीछे हो गये। देख रहे हो कि नहीं आपको दिखता है कि नहीं, ठीक है। ये क्यों हो रहा है? बदला लेने की भावनाओं से हो रहा है। अभी इसके आधार पर और भी आगे जो होगा होगा, अभी चालू है।

ये सब चीजों को देखने से पता लगता है मनुष्य जीव चेतना वश अपना-पराया को पनपाया, उससे दुःख पाया, यही बात कहा जा सकता है। दूसरा कुछ कहना बेकार है। वो दुःख से मुक्ति पाना चाहता है, ये भी अपन बोले हैं। उसके आधार पर कहते हैं मानव जाति एक है इस बात को पहचानने की आवश्यकता है। मानव जाति एक है इसको पहचानने की इतनी विधि बताया। धातुओं के आधार पर, नस्ल, रंग के आधार पर बताया।

उसके बाद आता है- संप्रदाय। संप्रदाय के आधार पर। संप्रदाय शब्द का अर्थ क्या होता है? समान प्रकार के प्रदाय हो जाओ। पूर्णता के अर्थ में समान रूप में सबके लिए प्रदाय हो जाए इसका नाम है 'संप्रदाय'। कितना पवित्र अर्थ रखा हुआ है! पवित्र अर्थ को कहाँ ले गए, तमाम लड़ाई-दंगा, बम गिराने की जगह में ले गए। ये बात ऐसा हुआ कि संप्रदाय विधि से हम एक हैं। ये भी माना जा सकता है, ये जो संप्रदाय, ज्ञान, विवेक, धर्म, पंथ सबको जोड़ने पर यही माना जाता है धर्म गद्दी। मानव धर्म ही एक ! क्या है मानव धर्म ? मानव धर्म सुख है। हर व्यक्ति सुखी होना चाहता है इसमें दो राय नहीं। सुखी रहना चाहते हुए भी सुखी हो नहीं पा रहे हैं, ये परेशानी है। क्यों, अनेक जात, मत, संप्रदाय होने के आधार पर , हर दिन नया विपदा तैयार रहता ही है। विपदा तैयार करने वाला भी आदमी ही है। अभी जैसा युद्ध के लिए बहुत सारे युद्ध सामग्री तैयार किया, उसको एक प्रयोग किया, उससे प्रतिक्रियाएँ मनुष्य के लिए विपदा बना है। जितने भी nuclear test हुआ है, उन सबका प्रतिफल मानव के लिए विपदा बना। इन बातों को हम सब ध्यान दे सकते हैं। इन विपदाओं से मुक्ति पाना हम चाहते हैं। विपदाओं से मुक्ति पाने के लिए विधि क्या बताया मानव जाति एक है, मत एक है, संप्रदाय एक है और धर्म एक है, इस बात को समझने की आवश्यकता है। इसको समझने पर क्या हो जाता है? अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था दोनों को पहचानने की आवश्यकता आ जाती है। यदि मानव जाति एक होगा तब सार्वभौम व्यवस्था होगी। वो सार्वभौम व्यवस्था क्या होगी उसको पहचानने की बात आती है। अखंड समाज होने पर ही सार्वभौम व्यवस्था होगी, अखंड समाज होने के लिए इन आधारों पर अपन अभी थोड़ा ध्यान दिए हैं।

इसके बाद बात आती है भाषा, मानव भाषा एक है। कैसे? मानव भाषा एक है- हम पहचाना है, कारण, गुण, गणित के रूप में मानव भाषा एक है। किसी भी भाषा में कारण, गुण, गणित को प्रयोग करने पर ही सच्चाई का पहचान हो पाता है। कारण के रूप में क्या निकलता है, सहअस्तित्व मिलता है। मूल कारण सहअस्तित्व मिलता है। पूरा संसार के जागृति तक के जो कारण हैं, विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति का कारण सहअस्तित्व ही है। सहअस्तित्व क्या किसी ने बनाया है, पूछा तो किसी ने बनाया नहीं है। ये कैसा रहता है, ये शाश्वत रूप में रहता ही है। होने के रूप में ही हम देख पाते हैं, होने का अध्ययन हो पाता है। नहीं का अध्ययन नहीं हो पाता। यह होने का अध्ययन है, ना होने का कोई अध्ययन नहीं है। होने का अध्ययन करने पर पता चलता है- सहअस्तित्व ही अस्तित्व है, होने के रूप में सहअस्तित्व ही है। इसके आधार पर हम चलते हैं, ये समझ में आने से हम समाधान की जगह में आते हैं। समाधान का फलन ही है मानव धर्म -सुख। सहअस्तित्व को समझे बिना समाधान फलित होता ही नहीं। कैसे भी कर लें, कितने भी सर कूट लें, मगजमारी कर लें कुछ नहीं होगा। समाधान यदि होगा सहअस्तित्व के आधार पर ही होगा। जब कभी भी होगा। वो चीज़ हम पा गए। इसके आधार पर हम कह सकते हैं हर व्यक्ति सहअस्तित्व को समझ सकता है, हर व्यक्ति समाधानित हो सकता है। इसके आधार पर मानव धर्म एक होना समझ में आता है, क्योंकि समाधान ही सुख है। समाधान, समृद्धि ही सुख, शांति है ये हम पहचान लिए हैं, इसको practical किए हैं, जिए हैं, प्रमाणित किए हैं, इसके आधार पर हम घंटी बजाकर कह सकते हैं मानव धर्म सुख है। मानव धर्म का

अध्ययन कैसे पहुँचा? सहअस्तित्व समझ में आने से समाधान, समाधान होने से मानव धर्म– सुख। और श्रम से समृद्धि– तो श्रम करने पर अपने परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन, फलस्वरूप समृद्धि का अनुभव। समृद्धि का अनुभव होने से उपकार प्रवृति बनती है। कुछ देने की ही इच्छा होती है, लेने की इच्छा खत्म होता है। ऐसा जगह में आता है। मनुष्यों में उपकार करने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ने की बाद संसार में दरिद्रता कहाँ है। जब हर परिवार में हो गया तब उपकार किसका करोगे– पूछा एक आदमी, तो अपने आगे की परम्परा का उपकार करेगा, उपकार करने की जगह बना ही रहेगा। पूछने वाला तो सब पूछ ही लेता है। वो तो स्वाभाविक है बुद्धिमानी का स्वरूप है।

इस ढंग से हम मानव जाति एक होने की बात पा सकते हैं। किस विधि से– शरीर रचना विधि से, और मानव धर्म विधि से, दोनों विधि से हम मानव जाति एक है इसको पहचान सकते हैं। इसके लिए हम पूरा अध्ययन क्रम प्रस्तुत किये हैं। उसके बाद तीसरा बिंदु ये है, हम जितने भी समाधान पाते हैं अस्तित्व में, अस्तित्व के लिए, अस्तित्व से जो हम समाधान पाते हैं, ये समाधान सदा-सदा उपलब्ध है। इससे क्या हो जाता है– मानव धर्म सदा-सदा है। कोई एक दिन है, एक दिन नहीं है ऐसा कुछ नहीं है, मानव धर्म सतत है। इसलिए अपने को हम जो पाते रहे, संवेदनशीलता में सुख भासता रहा, सुख की निरंतरता चाहिए ये अभीप्सा रही है, उसकी सफलता इस जगह में बना हुआ है।

उसके बाद आता है– जीवन अमर है और शरीर जीवन के लिए एक घटना है। कैसे– रचना-विरचना, शरीर में रचना भी होता है, विरचना भी होता है। यह जीवन के लिए घटना है, अपनी जागृति को प्रमाणित करने के लिए घटना। यह घटना कभी बंद हो सकता है? बिलकुल बंद नहीं होना, सदा सदा बना रहना है। ये धरती नष्ट हो जाए दूसरा धरती पर आदमी रहेगा ही। जीवन को रेंगने में देर नहीं लगता। इस तरह आदमी अपने धर्म के प्रति निरंतर संभावनाओं को पा सकता है। यदि ये ज्ञान होता है, मानव धर्म की निरंतरता समझ में आता है और मानव जाति एक होने का आधार बनता है। मानव जाति एक, मानव धर्म एक। ये दोनों बात समझ में आने से मानव के साथ हम क्या सम्बन्ध बनाना चाहिए, कैसा जीना चाहिए, क्या करना चाहिए ये शुरू होती है। ये सब शुरू होने से हम अखंड समाज की बात को रख दिया। अब अखंड समाज यदि पूरा होता है तब सार्वभौम व्यवस्था की बात आती है। अखंड समाज सूत्र व्याख्या– मानव परम्परा में प्रमाणित हो गया, उसके बाद अपने आपसे सार्वभौम व्यवस्था की बात आयी। सार्वभौम व्यवस्था क्या है? भौम माने भूमि, भूमि सर्वस्व के साथ हम व्यवस्था सोचते हैं। क्या है वो– खनिज के साथ व्यवस्था, वनस्पति संसार के साथ व्यवस्था, और जीव संसार के साथ व्यवस्था, मानव संसार के साथ व्यवस्था। मानव संसार के साथ व्यवस्था का सोचा ज्ञान अवस्था के आधार पर, मानव का व्यवस्था ज्ञान के आधार पर होगा। ज्ञान समाधान में प्रमाणित होगा, समाधान के आधार पर ही व्यवस्था होगी। समाधान क्या चीज़ है? सुख का स्रोत। सुख के स्रोत के लिए व्यवस्था होगी। मानव के लिए सुख का स्रोत ही इष्ट है। ये पूरा होने के लिए ये व्यवस्था है। मनुष्य सुखी होने के लिए क्या चाहिए? जीव संसार संतुलित रहना है, वनस्पति संसार संतुलित रहना है, और खनिज संसार संतुलित रहना है। इसका मतलब धरती संतुलित रहना है। धरती संतुलित रहने से क्या मतलब? ऋतु काल व्यवस्था है ये हमारा किया हुआ नहीं है, ये प्राकृतिक है। प्रकृति अपने में संतुलित रहने के जैसा हमारा दिनचर्या बनाने की आवश्यकता आ गई। इसलिए हमारे दिनचर्या में हम वनस्पति संसार, जीव संसार और खनिज संसार संतुलित बनाए रखते हुए हम संतुलित रहने की अधिकार बनता है। इससे क्या होता है– दूसरे को जीने दो जियो ! जीने दो जियो की दूसरा एक घाट पाए। उसको आप को सुनना चाहा इसलिये आपको जगाए। तो अभी हम लोग यहाँ पहुँचे। अपने आप से, इसमें कोई पसीना बहाए हैं ऐसा कुछ नहीं है। साधारण रूप में मनुष्य जब अपने संतुलन में जीना के प्रमाण

में समाधान पाता है तब संतुलित होता है, समाधान आने से सुखी होता है। मानव धर्म सुख है। समाधान में हम सारे मानव समान हैं, मानव धर्म में हम सभी समान है। मानव का अनेक धर्म नहीं होता है, केवल मानव धर्म ही होता है। गीता में क्या कहा- सर्वधर्मान्परित्यज्य- बहुत सारे धर्म को हम ओढ़े हैं, उसको उतार कर करके हमारे पास आओ बोला। जिसको हम पूजा करते हैं। हम किए हैं, मैं अपनी बात कह रहा हूँ, बाकी लोगों को क्यों कहने जाऊँ। ऐसी बातों को हम पूजा किए हैं। हमको कैसा लगा होगा ये समझ में आने के बाद, आप ही सोचो। हमको ये समझ में आया कि मानव धर्म एक ही है, शाश्वत है, उसमें बदलने की जगह नहीं है, जब कभी होगा मानव धर्म- सुख ही होगा। सुख होने के लिए समाधान ही एकमात्र उपाय है। समाधान केवल समझदारी से ही आता है, दूसरा किसी विधि से पसीना बहाने से आता नहीं है और तलवार चलने से आता नहीं है, और किसी विधि से आएगा नहीं। समाधान आएगा समझदारी से, ये बात को हम पा गए। समझदारी आने से क्या हुआ अखंड समाज सूत्र तो बन गया, मानव धर्म एक होने से, जाति एक होने से और उसके आधार पर संस्कृति, सभ्यता को विकसित कर लेने से अखंड समाज सूत्र तो आ गयी। उसके बाद सार्वभौम व्यवस्था की बात आती है। सार्वभौम व्यवस्था का मतलब है- सम्पूर्ण धरती पर व्यवस्था। क्या चीज़ है वो? खनिज संसार का संतुलन, वनस्पति संसार का संतुलन, जीव संसार का संतुलन। कौन बनाए रखेगा, मानव बनाके रखेगा कि कोई ओर बनाये रखेगा? मानव खनिज संसार का संतुलन बनाये रखेगा, वनस्पति संसार का संतुलन बनाये रखेगा, जीव संसार का संतुलन बनाए रखेगा, फलस्वरूप जीने देगा जीएगा। क्या बात है ! इसमें कोई पसीना बहाना है? यदि असंतुलित रहेगा तो क्या होगा- धरती बीमार होगी, ऋतु असंतुलित होगी, मानव दुखी होगा। मानव सुखी होने के लिए जीने देना बहुत एक प्रासंगिक वस्तु है।

तो जीने देना ही जीने के अधिकार का मतलब हुआ। वैसे ही मनुष्य के साथ तो जीने देना बहुत स्वाभाविक बात है। जीने दिये बिना जीना बनता ही नहीं। मानव, मानव को जीने दिये बिना जीना तो हराम होगा ही। ये बात अनेक जगह में देखने को मिल रहा है। इस सब के आधार पर जीने देना जीना बहुत आसान game है, इसके लिए समझदारी एकमात्र उपाय है, समझदारी के साथ ही हम जीने दे पाएंगे, जी पाएंगे।

इस ढंग से मानव जाति एक, मानव धर्म एक, बात ये हो गई ये दोनों समझ में आने के बाद हम सार्वभौम व्यवस्था के बारे में सोचना शुरू करते हैं। सार्वभौम व्यवस्था में ये सारे संतुलन आ गये, संतुलन के साथ जीने के लिए हम योजना बनाते हैं, तब मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान बनता है। संविधान के अनुसार जो मानवीयता पूर्ण आचरण करते हुए यदि जीता है, इनमें पूरा का पूरा चारों अवस्था में संतुलन बना रहेगा और सदा-सदा समाधान बना रहेगा, निरंतर सत्य में अनुभव होता रहेगा और मानव जाति सुखी रहेगा इस बात को हम पहचाने। इस बात को अपन पहचाने, इसको पहचानकर के सार्वभौम व्यवस्था के बारे में सोचने लगे। इस को कैसे माना जाए?

पहले अभी ये माना जाता है, एक ऐसे विधि जो सभी देश अपना-अपना जैसा बना है, उसके साथ एक जगह में मिल-बैठ करके कुछ सोचा जाए। सोचने में क्या आया तो पहले ये आया इनके साथ युद्ध करना है, उनके साथ युद्ध नहीं करना है। इनके साथ युद्ध करने में कौन-कौन मिलकर के युद्ध करेगा। अभी जैसे इराक़ पर लंदन और अमेरिका दोनों मिल कर के युद्ध किया। अफगनिस्तान में युद्ध किया लंदन और अमेरिका मिलकर के युद्ध किया। इस ढंग से काम चल रहा है। लंदन क्यों जुड़ा है अमेरिका के साथ, क्योंकि अफ्रीका के साथ उनको युद्ध करना है। अभी बताया ना कपाल मोक्ष हो रहा है। जूते के तले रहे सारे अफ्रीकन, अभी इनके सिर पर चढ़ लिए कि नहीं। अभी मंडेला जब आया उन्होंने सर्वप्रथम गोरे लोगों का जितना जमीन था उसको cancel कर दिया। अब वहाँ एक डेसीमिल ज़मीन

गोरे लोगों का नहीं है। अभी जबलपुर में गोरे लोगों का बंगला बना हुआ है और भोपाल, बैंगलोर में गोरे लोगों का बंगला बना है। और ज़्यादा से ज़्यादा बैंगलोर में खाड़ी देश के लोगों का बंगला है, क्या करोगे। सर्वाधिक बंगला बैंगलोर में खाड़ी देश के हैं। अभी कानपुर के एक सज्जन वहाँ flat बनाया, १२० flats बनाया उसमें से १०० flats खाड़ी देश खरीदा है और बाकी को बाकी लोग खरीदे हैं 20 flats। बोलो, क्या करोगे? ये सब इस ढंग के हमारा कार्यक्रम है। ये सब कुछ सोच करके अपने को चलने की जरूरत है।

20

भाग – 20

☞ विडिओ संदर्भ देखें: *Satsang Raipur Bhag-20*

जिज्ञासाः बाबा पिछले दो दिनों से हम लोग आपको सुनते रहे। आदमी से शुरुआत करके आपने सम्पूर्ण सृष्टि को, इस ब्रह्मांड को, आदमी के इतिहास को, आदमी की वर्तमान स्थिति को, भविष्य को पूरा का पूरा निचोड़ दिया है इन सूत्रों में, हम लोग जैसा महसूस करते हैं। और हम लोगों ने जो कुछ भी सुना, जैसा पसंद किया, तो एक मंशा यह भी रही है, आपकी सारी बातों को ज्यों का त्यों record करके हमारे जैसे और हज़ारों-हजार आदमियों के लिए वो उपकारी हो जाए, एक मार्गदर्शन का काम करे। और जहाँ पर हम लोग भ्रम में या संशय में फसते हैं, वहाँ हम लोगों को संशय और भ्रम से निकालने में आपका वक्तव्य ज्यों का त्यों recorded रहे, इस उद्देश्य से हम लोगों नें इसको record किया। ऐसा लगता है कि समय के लिहाज से दो दिन बीते हैं, जैसे हम लोगों ने एक विश्व ब्रह्मांड की एक बहुत लम्बी यात्रा पूरी कर ली हो, इन दो दिनों में। इतनी सारी बातें, दर्शन से लेकर आदमी तक, इतिहास तक, प्रकृति तक और कला, साहित्य, संगीत और कितने- कितने सारे आयाम, जिन बातों को at a glance, एक नज़र में हमने सोचा भी नहीं था, सारी बातें हम लोग और सभी लोग सुनते रहे। हम लोग चाहते हैं बाबा कि अब जो कुछ भी आपने कहा, और जो आपने कहा वो आपका जाना हुआ है, इसलिए उसकी बहुत महत्ता, उसकी बहुत महिमा है हम लोगों के दिलों दिमाग में, तो उसको अंतिम सार के रूप में, आप पाँच-छः minute के भीतर उस अंतिम सार को, जो आप कहना चाहते हैं, जो आपका जाना हुआ है, उसको आप कह दीजिए।

उत्तरः बहुत बढ़ियाँ, बहुत सहीं, स्वागतीय। ये तो स्वागत करने की मुद्दा ही है। अभी शुरू किये थे अपन मानव से, मानव को एक समझदर आदमी के रूप में पहचाना, समझदारी का तड़प आदि मानव से रहा है। समझदारी के अर्थ में अपन कुछ किए हैं, उसका स्वरूप को प्रस्तुत किये हैं। समझदारी के आधार पर मनुष्य सही ढंग से जिएगा, दूसरा- नासमझी से गलत ढंग से जिएगा। ये बात है। उसके बारे में अपन ये तय किए जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन। ये जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन के बाद, मानव चेतना से देव चेतना, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठ होने के बात एक सूचना के रूप में प्रस्तुत किया। ये क्रियान्वयन होने की विधि ये बताया है, कि मानव चेतना में परिवर्तित होने के पश्चात देव चेतना निकट होता है। अभी जीव चेतना के लिए मानव चेतना निकट है, वैसे ही मानव चेतना के लिए देव चेतना निकट हो जाता है और देव चेतना में दिव्य चेतना निकट हो जाता है। इस ढंग से दिव्य चेतना की निरंतरता धरती का ब्रह्मांड का अनंत का मंगलमय कार्यक्रम है। ये मैंने बताया, एक छोटी सी स्वरूप में संक्षेप ये है। एक विधि ये हो गया।

दूसरी विधि से ये बताया- हमको अस्तित्व को समझने की ज़रूरत है। अस्तित्व को समझने से सहअस्तित्व है। सहअस्तित्व ही विकास क्रम विकास, जागृति क्रम जागृति के रूप में स्पष्ट है। जागृति क्रम जागृति ही निरंतर रूप में रहता है, ये सर्वमंगल कार्यक्रम है। ये दूसरा बात बताया।

तीसरे विधि से ये बताया– मानव जो है ना जब कभी भी समझदार होता है समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज विधि से प्रमाणित होगा, ये सार्वभौम विधि से सर्व मानव के लिए, सर्व वस्तु के लिए, सर्व अवस्था के लिए, सर्व पद के लिए मंगलमय कार्यक्रम, शुभ कार्यक्रम है बताया। तीन विधि हो गई।

चौथा विधि में ये बताया– मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था के रूप में जीने से सर्वशुभ है, ये बताया। मानव अपने में मानवीयता पूर्ण विधि से जागृत होकर के जीना सर्वशुभ कार्यक्रम में सतत जीता है, इस बात को आगाह किए। उसके बारे में ये भी प्रयत्न किया है, जो लोहा में लोहत्व पर हम विश्वास करते हैं, मानव में मानवत्व के प्रति कोई विश्वास अभी तक हुआ नहीं, इसीलिए जीव चेतना मे हैं हम। इसका प्रमाण प्रस्तुत किया, इसमें अपने को आना चाहिए। जो अध्यात्मवाद जैसा ऋषि जनों का मुखारविंद से आया हुआ में भी ये जगत को माया बताया, जगत मिथ्या बताया, वो कितने संकट से कहा होगा सोचने की मुद्दा है। संकट से छुटकारा पाने के लिए तो उपदेश दिए, किंतु शायद संकट से सब कोई छुटकारा पाएगा इस बात को वो घोषणा नहीं कर पाए। शायद है, अभी उन्हीं के वंशज, आप–हम, ऐसे जगह में आए हैं– सर्व मानव सुख रूप में जी सकता है, समाधान पूर्वक जी सकता है, सबके लिए उपकार करता हुआ जी पाएगा, सुख से जी पाएगा, इस बात के लिए अपन प्रस्तुत किए हैं। ये सर्व शुभ कार्य के लिए सदा–सदा के लिए युग–युग के लिए ये उपयोगी होगा मैं ऐसा सोचता हूँ। उपयोगी होने के लिए आपने जो बात बताया है, तो ये पूरी बात record हो जाए, वो जब कभी भी अपने की संदिग्ध होने पर वो record के आधार पर अपन सोचा जाए, व्यर्थ की वादाविवाद ना हो, क्योंकि वादाविवाद के लिए पूरा फाड़ ही बना है। क्योंकि भ्रमित आदमी वादाविवाद के अलावा कुछ जानता ही नहीं है, चाहे घर में हो, बच्चों से हो, बड़ों से हो, अड़ोस से हो, पड़ोस से हो, गाँव से हो, धरती से हो, माने संसार से हो, कहीं से भी हो हम वादाविवाद के अलावा कुछ जानते ही नहीं है। गाड़ी में चलते हैं वादाविवाद, घाट में जाते हैं वादाविवाद, बाज़ार में जाते हैं वादाविवाद, घर में जाते हैं वादाविवाद। क्या मतलब, इस ढंग से कहाँ पहुँचेंगे? कहीं पहुँचने की जगह बना नहीं। जिसको university कहते हैं, वहाँ जाओ वादाविवाद। ठीक बात है ना, अपन भुक्त भोगी हैं ना? तो उसके बाद कहाँ खोजा जाए। universities में विद्वानों का गढ़ है, वहाँ जब वादविवाद है तो क्या हालत है।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो।

जिज्ञासाः बाबा हम सब लोगों के लिए, वैसे तो जो कुछ आपने कहा वो मानव जाति के ऊपर आशीर्वाद है, लेकिन दो शब्द आशीर्वाद के सब लोगों के लिए और कह दीजिए।

उत्तरः अभी ये आशीर्वाद के पात्र आप लोग हैं ही, ऐसे पात्र हैं, अभी तक ये माना गया ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्बन्धी बात इतना दुरूह है, किसी के पल्ले नहीं पड़ता, ऐसा सोच के चलाये थे। तो विज्ञान विधा में नाशकरी कार्य तो समझ में आया, बचाने वाला कार्य तो विज्ञान में समझ में नहीं आया आज तक। तो इससे ये सब बात बचाने वाला कार्य होने के कारण से आप लोगों में कहीं ना कहीं मंगलमय कार्य के लिए जगह है, शुभ करने की इच्छा है, शुभमय जीने की तमन्ना है, इसका प्रतीक रूप में आप लोगों ने इतने अच्छे ढंग से तन–मन से प्रस्तुत होकर पूरे बात को सुना है, कहीं ना कहीं स्वीकार भी हुआ होगा, वो किसी ना किसी अंश में प्रमाणित भी होगा, सदा–सदा के लिए अगे पीढ़ी के लिए आप सब प्रेरणा स्रोत बनें, यही मेरा आशीर्वाद है।

जय हो मंगल हो, कल्याण हो, सबका शुभ हो, सबका मंगल हो, सब समझदार हो, सदा–सदा सुखी रहें, समृद्ध रहें, उपकार करें। जय हो।

नित्यम यातु शुभोदयम